जन ज्ञान

मासिक

अक्टूबर १९७५

कार्तिक २०३२

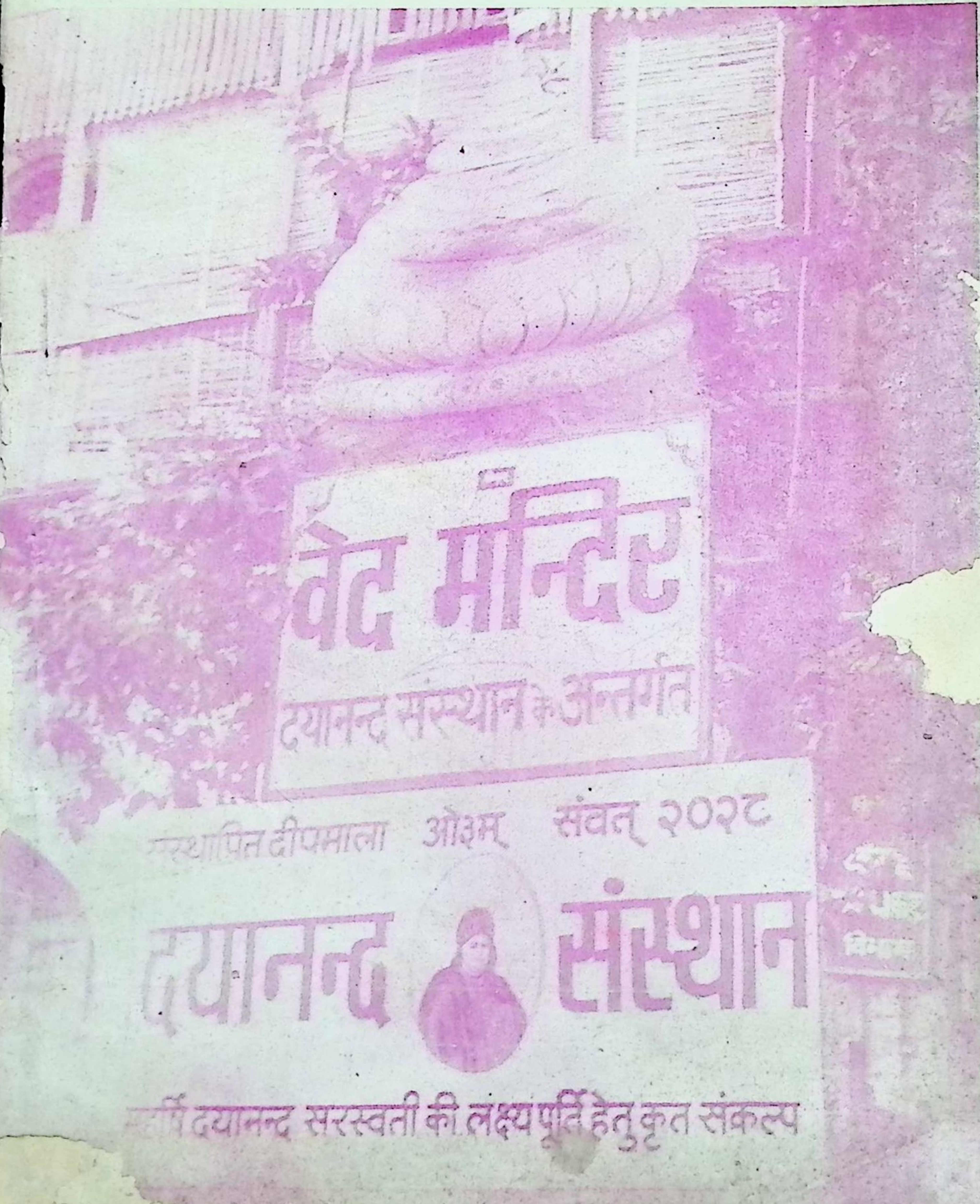

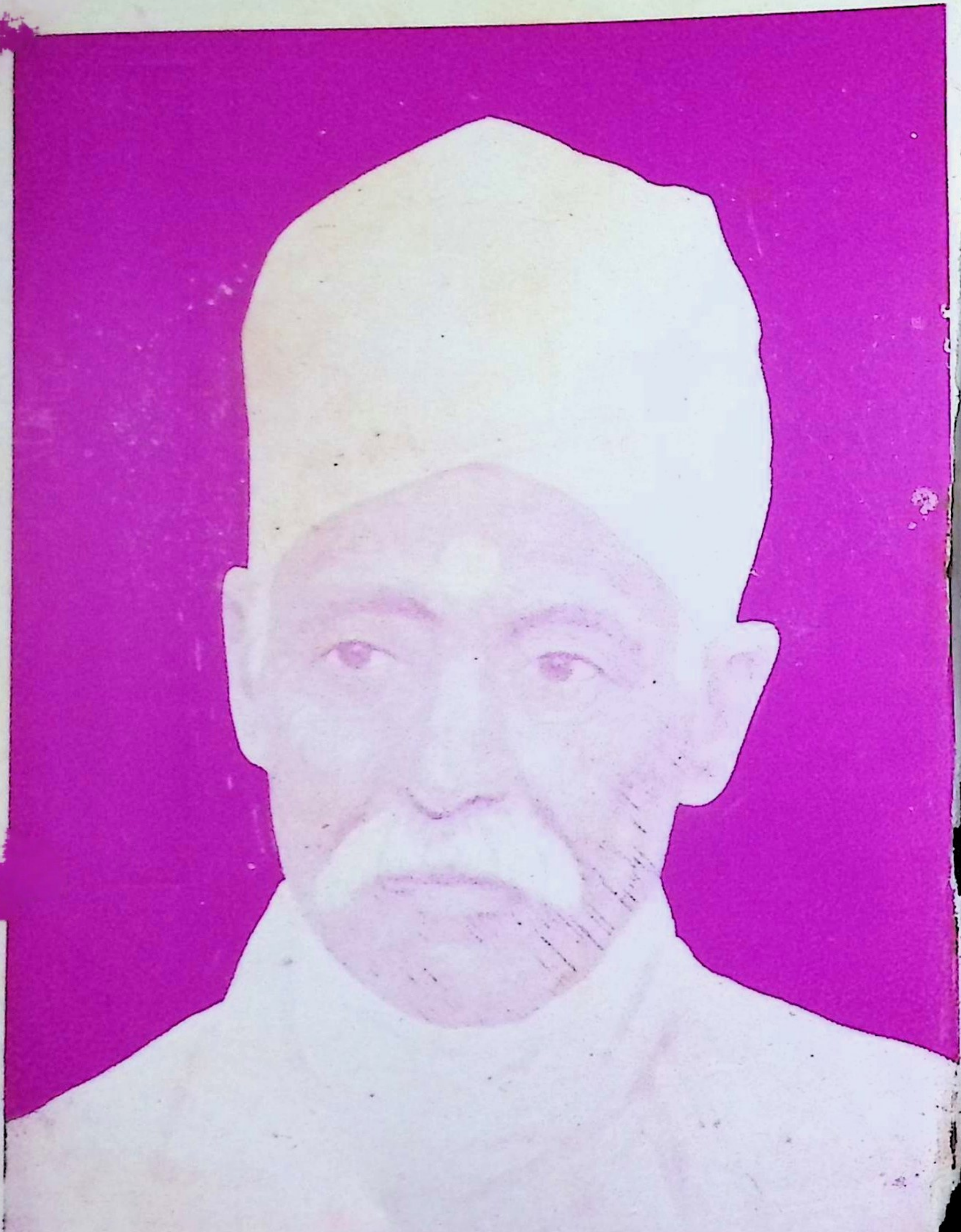

आदर्श मानव, विद्या के प्रसारक, महामना पं० मदन मोहन मालवीय

दयानन्द संस्थान
नई दिल्ली का प्रकाशन

जन – ज्ञान

मासिक

सम्पादक
राकेश रानी
सह सम्पादक
सुमेधा स्नातिका
दूरभाष : ५६६६३६

पता
१५६७, हरध्यानसिंह मार्ग
[निकट ३१-नाईवाला]
करौल बाग नई दिल्ली-५

वार्षिक मूल्य १५)
विदेश में ३ पौंड
(हवाई डाक से)
पौंड : समुद्री डाक से
(आजीवन २५१)

वर्ष ७ : अंक ६
कार्तिक सम्वत् २०३२
अक्टूबर १९७५

झण्डा आर्यसमाज का !

नहीं रुकेगा, नहीं झुकेगा,
झंडा आर्य समाज का ।
आगे, आगे और बढ़ेगा,
झंडा आर्य समाज का ।
पाप - ताप - अज्ञान मिटाकर,
सुखद - शांति-संतोष दिलाकर
सब को देगा अमृत दान,
झंडा आर्य समाज का ।
जन - मन में अज्ञान न होगा,
कष्ट क्लेश का लेश न होगा,
भर देगा सुख से संसार
झंडा आर्य समाज का ।
दूर - दूर होगा अंधियारा,
चमकेगा चहुं दिशि उजियारा,
कर देगा सब का कल्याण,
झंडा आर्य समाज का ।
नव प्रकाश से ज्योतिर्मय जग,
जय विहान से धरती जग मग,
आशा का करता विस्तार,
झंडा आर्य समाज का ।
अंधकार का मूल मिटाकर,
अज्ञानी मत - वाद हटाकर,
ज्ञान-सुधा छितराएगा
झंडा आर्य समाज का ।

आओ प्यारे वीरो आओ,
भाई आओ, बहनो आओ,
बूढ़े, बच्चे, सब - जन आओ ।
सब को देगा जीवन दान
झंडा आर्य समाज का ।
धरती को एक बनाएगा,
दुःख संताप मिटाएगा,
सब के हर लेगा संताप
झंडा आर्य समाज का ।

—भारतेन्द्र

५ नवंबर १६७५ तक

दीपमाला के उपलक्ष्य में

सत्यार्थ प्रकाश

[लागत से अत्यन्त कम मूल्य पर मंगाएं]

१	शताब्दी प्रचार संस्करण	न्यूज प्रिंट पर	१५०) सैंकड़ा
२	शताब्दी प्रचार संस्करण	बढ़िया कागज पर	२००) सैंकड़ा
३	प्रचार संस्करण	२३×३६=१६	३००) सैंकड़ा
४	राज संस्करण	बढ़िया साइज सजिल्द	३५०) सैंकड़ा
५	उपहार संस्करण	सर्वश्रेष्ठ कागज पर बढ़िया कपड़े की जिल्द	४५०) सैंकड़ा
६	शताब्दी संस्करण	१०×१५ इंच साइज बढ़िया कपड़े की जिल्द	३१)
७	शताब्दी उपहार अनुपम संस्करण	सबसे बढ़िया आर्ट पेपर पर १०० वर्ष में प्रथम बार छप	६१)

यह मूल्य

केवल ५ नवंबर तक

के लिए हैं ।

दयानन्द संस्थान

नई दिल्ली-११०००५.

सम्पादकीय

रचनात्मक कार्य

देश में काम न करने की प्रवृत्ति उभरी है। उपदेश देने को ही लक्ष्य पूर्ति मान लिया जा रहा है। भाषण, प्रस्ताव-योजना शब्दों से हम भविष्य का रेखा चित्र बनाना चाह रहे हैं। पर क्या ऐसा होगा ?

कठिनतम साधना के पथ से गुजरने के लिए मन बनाना बहुत कठिन है। कहना जितना आसान है करना उतना ही कठिन ! और इस कठिन को आसान बनाने के लिए हम यत्न कर रहे हैं।

भारत के ५५ करोड़ व्यक्तियों तक ऋषि की बात, वेद की बात, सत्य की बात पहुंचाना हमारा लक्ष्य है। साधन हो या न हों, बाधाएं जितनी चाहे आएं, अंधड़ जितना चाहे जोरदार हो पर हमें तो बढ़ना है और जीतना है।

जिन्दगी जगमग सितारों का नाम नहीं है जिन्दगी रोग भी नहीं है, वह हंसी भी नहीं है, जिन्दगी संघर्ष है, जो जितने बड़े तूफान में अडिग रहता है उस में उतना ही बड़ा जीवन है।

मस्तिष्क में रेखाएं उभरती हैं, कागज पर उतरती हैं और फिर उनका चित्र बनाने को, उन्हें साकार रूप देने को मन मचलता है। यहीं से काम का आरंभ होता है और अन्त तो शायद कभी होता नहीं।

'वेद' को विश्व धर्म बनाना क्या सरल है ? जिन के लिए 'वेद' केवल एक साधन है वे वेद का नाम ले सकते हैं उसका प्रचार नहीं कर सकते और सब से विचित्र यह है कि प्रचार के ठेकेदार वे हैं जो जानते नहीं कि प्रचार होता क्या है ? आग लगाना काम नहीं है, काम है आग बुझाना ! इसमें प्राण भी देने पड़ते हैं। बात तो कोई भी कर सकता है पर काम वही कर सकता है जो और सब कुछ छोड़ दे ।

हमारे पास न साधन थे, न साथी, अकेले चले थे अकेले चल रहे हैं। जिन से आशीर्वाद की आशा थी—वे सबसे बड़े विरोधी बन कर खड़े हो गए। न्याय और सत्य कहने में बड़े-बड़े दिग्गज कांपते हैं।

विचित्र चित्र है सभी का फिर भी निराशा मृत्यु को निमंत्रण देगी इसलिए बढ़ना है, चलना है और मंजिल तक पहुंचना है। राम-कृष्ण-प्रताप-शिवा शंकर दयानन्द की ज्योतिर्मय प्रेरणा आज भी जीवित है,हमें यह सिद्ध करना है।

'जन-ज्ञान' के छोटे से साधन से विश्व विजय की कल्पना तो दुःसाहस ही मानी जाएगी पर बिना संकट उठाए किसने सफलता पाई है ? हम जो चाहते हैं वह सत्य है। और सत्य कभी हारता नहीं। संसार का प्रत्येक व्यक्ति ईमानदार बने सत्य पर आचरण करे, शांति और आनन्द की गंगा में स्नान कर प्रसन्न रहे यह हमारी इच्छा है। हमारी इच्छा है प्यार···स्नेह···ममत्व उभरे और सभी एक दूसरे के सुख दुःख में अपना सुख दुःख समझें।

इस इच्छा का विरोध मानवता का विरोध है। दिशा-दिशा में उभरती सूरज की लाली को देख कर हमारा मन भी ऐसे ही 'वेद' की ऋचाओं का संगीत सर्वत्र गूंजते देखना चाहता है।

'वेद' सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।

जिस महापुरुष ने यह उद्घोष किया था क्या उस के समक्ष कम आपदाएं आयीं। पर सत्य और वेद को किस ने दबाया ! युग-युगान्तरों से गूंजती प्रभू की वाणी स्वयं प्रेरक और कल्याणी है।

सुनो ! ध्यान से सुनो ! यह भवन, यह मंदिर, यह तुम्हारा संस्थावाद ऋषि का लक्ष्य नहीं था। लक्ष्य था 'वेद, वैदिक विचारधारा का साम्राज्य ! — सत्यज्ञान धर्म का प्रचार और हमारा प्रश्न है—इन के लिए तुम क्या करते हो ! क्या किया तुम ने युग को बदलने के लिए। तुम्हारे नगर में हजारों-लाखों व्यक्ति रहते हैं ··· क्या उन तक तुम ने अपनी 'वेद' की बात पहुंचायी ?

मुझे ज्ञात है कि मेरे प्रश्नों का उत्तर देने का साहस तुम खो चुके हो ! तुमने अपनी हत्या स्वयं करली है। तुम जिस राह पर चले थे, उस राह पर तो एक पग भी नहीं चल सके···और भूलकर भ्रान्त दिशा में बढ़ गए।

आज···केवल आज····· जागरण का मंत्र सुन लो और लौट आओ फिर अपनी सच्ची राह पर ! उठा लो 'ओ३म' पताका —कुछ करो—कुछ बढ़ो फिर देखो, तुम क्या कर सकते हो, मानो या न मानो मैं पुकारती रहूंगी। तुम्हें 'वेद' वीणा बजाने के लिए बुलाती रहूंगी ! तुम आर्य हो तो बहन की बात कभी तो सुनोगे !

बाधाएं आएं आने दो, दानवीय होने दो वार !

सब कुछ सौंप बढ़ो तुम आगे! विजय वरण का लक्ष्यविचार!

युग बदलना है, धर्म ··सत्य·· मानवता और ज्ञान की पुनः प्रतिष्ठा करनी है। भेद की दीवार गिरानी है, नयी धरती पर नया सूरज चमकाना है --

निमंत्रण स्वीकार कर साथ आओ ! और अपने-अपने क्षेत्र में काम आरम्भ कर दो !

बम्बई शताब्दी समारोह सफल बनाओ !

आर्यसमाज के प्रत्येक सदस्य से, अधिकारियों से आग्रह है कि वे पूरी शक्ति से बम्बई शताब्दी समारोह सफल बनाएं।

आर्य जनता भारी संख्या में पहुंचे और आर्य समाज की शक्ति का पूरा बल शाली प्रदर्शन करें। शताब्दी समारोह सफल होना ही चाहिए।

आयोजकों से भी हमारी प्रार्थना है कि वे पार्टी बाजी से ऊपर उठकर, आर्यसमाज के सर्वोपरि हित का ध्यान रखते हुए समारोह की सफलता के लिए सभी का सहयोग प्राप्त करें।

कुछ भी हो जहां आर्यसमाज की प्रतिष्ठा व गौरव का प्रश्न है वहां सभी भेद भूल सबको एक हो जाना चाहिए।

बम्बई समारोह की सफलता समूचे आर्य जगत् की सफलता होगी।

— राकेश रानी

१९७६ के लिए आकर्षक डायरी

वैदिक - दैनन्दिनी (डायरी)

नयी साज सज्जा

और

अनेकों आकर्षण युक्त

पहले से दुगने पृष्ठ

२४ रंगीन चित्र

साइज़ पहले जितना

पर

एक पृष्ठ पर एक तिथि

मूल्य

अजिल्द ४) = २५०) सैकड़ा

सजिल्द ६) = ३५०) सैकड़ा

१५-११-७५ तक ही सैकड़े का रेट होगा।

१९७६ का आकर्षक कैलेंडर

५ रंगों में छपा बड़े साइज का कैलेन्डर तैयार है।

७) के १०। १५) के २५। २८) के ५०। ५०) के १००। ४५०) के १०००।

अपना आदेश तुरन्त भेजें।

दयानन्द संस्थान

नई दिल्ली-११०००५

शताब्दी वर्ष में

एक लाख आर्य सदस्य बनाने का लक्ष्य पूरा कीजिए

ऋषि दयानंद के अनुयायी अपना कर्त्तव्य पहचानें और काम में लगें

महर्षि के वीर सैनिको--आज युग को बदलने की पवित्र वेला आ गई है। शताब्दी वर्ष में हमें कुछ करके दिखाना है। वर्तमान नेताओं के कारण निराश होने से काम नहीं चलेगा। ऋषि दयानन्द को अपना नेता मानकर, उन के आदर्शों की पूर्ति के लिए हमें दिन रात काम करना है।

आर्यो ! पद, झगड़े, फूट, और आपसी विवादों से ऊपर उठकर देश को आर्य बनाने के लिए कमर कस कर तैयार हो जाओ ! शताब्दी वर्ष में देश के कोने कोने में ऋषि दयानन्द का संदेश गुंजाने की तैयारी करो !

सक्रिय सदस्य बनें—सब से पहले वे व्यक्ति जो कुछ काम करना चाहते हों, सक्रिय सदस्यता का आवेदन पत्र भर कर अपना वार्षिक शुल्क १२) M.O. से भेज दें

आर्य सदस्य बनाए—सक्रिय सदस्य अपने-अपने क्षेत्र में 'आर्य सदस्य' भारी संख्या में बनाएं। उनका एक रजिस्टर अपने पास रखें और फार्म हमें भेजें।

आर्य सदस्य बनने का शुल्क केवल १) वार्षिक रखा गया है। सभा सभी आर्य सदस्यों को प्रमाण पत्र सक्रिय सदस्यों द्वारा भेजेगी।

सक्रिय सदस्य क्या करें ?

१ अधिक से अधिक "आर्य सदस्य" बनाएं।

२ आर्य समाजें जहां हैं वहां सभी को आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संगों में जाने की प्रेरणा करें।

३ सत्यार्थ प्रकाश और ऋषि जीवनी, वेद और वैदिक साहित्य का प्रचार करें।

४ अधिक से अधिक घरों पर ओ३म के झंडे लगवाएं।

५ अपने यहां भारतीय प्रतिनिधि सभा की शाखा स्थापित करें। जैसे भारतीय प्रतिनिधि सभा पोरबन्दर। आदि !

हम सारे देश में वैदिक धर्म की जय, महर्षि दयानन्द की जय के स्वर गूंजते देखना चाहते हैं क्या ऋषि दयानन्द के अनुयायी जय का स्वर गुंजाने के लिए आज से ही — तीव्र अभियान आरम्भ नहीं कर सकते !

आर्यबन्धुओ—सब कुछ भूल जाओ और लग जाओ काम में। ध्यान रहे हमें आर्य समाज संगठन सुदृढ़ करना है। उसे शक्तिशाली बनाना है। दयानन्द का काम पूरा करना है। प्यार से, उत्साह से, नम्रता से, शान्ति से—काम कीजिए ! आगे बढ़िए और देश को आर्य बनाने के लिए जो कुछ भी कर सकते हों कीजिए।

भारतेन्द्र नाथ अध्यक्ष　　　　**रत्न सिंह एम० ए०** मंत्री

भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली-५.

भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा क्यों ?

—प्रो० रत्न सिंह प्रधान मन्त्री भा० आ० प्र० सभा

इस वर्ष का शुभ श्रावणी पर्व-आर्य जगत् में एक नवीन संकल्प की प्रतिध्वनि बन गया, जब पावन वेद मंत्रो के सस्वर उच्चार के साथ भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का उद्भव हुआ। यज्ञ की वेदी पर बैठकर लिखे गए इतिहास के इस गौरव-पूर्ण अध्याय की रचना के कौन से कारण थे, यह प्रश्न महर्षि दयानन्द के द्वारा प्रदत्त ज्ञान के प्रकाश से आलोकित अनेक हृदयों में उठना स्वाभाविक ही है ?

एक प्रश्न एक उत्तर

इस प्रश्न का उत्तर यही है कि अनेक वर्षों से आर्य समाज के अनेक विद्वान, संन्यासी एवम् अपनी जीवन समिधाएं महर्षि दयानन्द द्वारा प्रज्वलित वेद तथा सत्य-ज्ञान के प्रचार प्रसार के यज्ञ में समर्पित करने को आतुर संकल्पबद्ध आर्यजन आर्य समाज की वर्तमान अवस्था पर चिन्तित थे। क्योंकि उनके समक्ष यह तथ्य भली भांति उजागर था कि देव दयानन्द ने विश्व को सुख शांति का सोपान प्रदान करने हेतु जो पौधा रोपा था वह जीवेम शरदः शतम (सौ वर्ष तक जियो) के उद्घोष की पूर्ति में तो सफल हो गया किन्तु विगत कई वर्षों से इस वृक्ष की शाखाओं के विस्तार के बावजूद यह स्वतः अनेक रोगों से जर्जरित बीमार सा हो गया है। इस पर त्याग तपस्या और बलिदान के जो सुफल लगने थे उसके स्थान पर फूट, दम्भ, स्वार्थ परता की विष बेल फैलनी आरम्भ हो गई हैं। इस विष बेली ने इस महिमा मय वृक्ष को एक ऐसे आवरण से आच्छादित कर दिया है कि दूर-समीप से देखने वाले दर्शक को यह फूट, कलह, दलबन्दी, गुटबन्दी और संकीर्ण स्वार्थ की प्रतिमूर्ति सा लगने लगा है। दर्शकों के मन में उपजने वाली शंका के लिए दोषी यह वृक्ष नहीं, क्योंकि इसकी प्राण धमनियों में तो आज भी पुराना जीवनदायी रस ही प्रवाहित होता है। किन्तु जो समय और स्थितियों के फलस्वरूप इस वृक्ष के रक्षक थे उन्होंने इस कल्पवृक्ष को अपनी स्वार्थ भावना की तपन से झुलसाने का प्रयास आरम्भ कर दिया।

आर्य समाज की वर्तमान अवस्था

इस स्थिति का परिणाम यह हुआ है कि अनेक आर्य समाज मन्दिरों पर ताले हैं तो अनेकों अभियोगों के अखाड़े बनकर आर्य शक्ति के अपव्यय का स्रोत बन गए हैं। पदलोलुपता की कायरता ने आर्यजनों के रक्त की उष्णता का समापन कर समाज की पाचन शक्ति को समाप्त कर उसमें अजीर्णता ला दी है। देव दयानन्द ने सकल विश्व को आर्य समाज की परिधि में लाने का स्वप्न अपने नेत्रों में संजोकर कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का जो उद्घोष किया था, उनका वह स्वप्न तिरोहित होता जा रहा। संक्षेप में कहा जाए तो आज अधिकांश कर्णधारों की दृष्टि से वह महान उद्देश्य धूमिल हो चुका है, जिसे महर्षि ने विश्व के समक्ष रखा था। अनेक स्थानों पर तो स्थिति ऐसी वीभत्स है कि आर्य समाजी और झगड़ालु पर्यायवाची शब्द भी समझे जाने लगे हैं।

स्थिति की विकरालता कुछ ऐसी है कि संसार को सदाचरण व आदर्श जीवन यापन के लिए प्रेरित करने का जिन पर दायित्व था उनके परिवार से ही आर्य मर्यादाएं कूच कर गई हैं। महर्षि ने आर्य समाज के सभासदों के जिन आदर्श परिवारों की कल्पना की थी उनके स्वप्न आज की स्थिति में दफन से होते लग रहे हैं। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कष्ट उठाने के स्थान पर आर्यसमाज के अनेक महाजन स्वतः लक्ष्य भ्रष्ट हो गए हैं और वे महर्षि दयानन्द प्रणीत विचारधारा के आधार पर विश्व की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करने के स्थान पर मूल लक्ष्य को ही उलझा और भटका रहे हैं।

महर्षि दयानन्द ने समस्त विश्व को वैदिक सिद्धान्तों से नवीन दिशा और प्रकाश देने का हमें संदेश और आदेश दिया था किन्तु १०० वर्ष के इस कालखंड के व्यतीत हो जाने पर भी आर्यवर्त के ही अनेक अंचलों में आर्यसमाज का नाम अनजाना है। देव दयानन्द ने तो हमें विश्व को आर्य बनाने का आदेश दिया था किन्तु स्वदेश में भी विदेशी संस्कृति और विचारों को प्रवाह अनेक क्षेत्रों को अपने प्रभावान्तर्गत कर सनातन संस्कृति के अस्तित्व को ही चुनौती देता प्रतीत हो रहा है। नागदेश, मेघालय अरुणांचल, कामरूप, उत्कल, तामिलनाडु, केरल, गुर्जर प्रदेश, और कर्नाटक ही नहीं अपितु भारत की राजधानी इन्द्रप्रस्थ के समीप स्थित राजस्थान और हिमांचल प्रदेश आदि के सुदूर अंचलों में महर्षि दयानन्द और आर्य समाज संकल्प गूंजना तो दूर उनका नाम तक भी अनजाना है।

इस विकट परिस्थिति में हमारे समक्ष केवल दो ही विकल्प थे। प्रथम यह कि हम संस्थावाद के चक्र व्यूह में घिरे आर्यसमाज के पराभव के मूक दर्शक बनकर देखते रहें और दूसरा यह कि देव दयानन्द के तपःपूत जीवन से प्रेरणा ग्रहण कर कर्त्तव्य क्षेत्रमें अवतरित हो वर्तमान परिस्थिति के इस भ्रमजाल को तोड़ा जाए। हमें भली भांति विदित है कि इस मार्ग का अवलम्बन करने से कतिपय सज्जनों के विरोध की फुफकारें भी हमें झेलनी होंगी—जिनकी अकर्मण्यता और अहमन्यता को हमारे इस पावन प्रयास से ठेस लगेगी वे आलोचनाओं के अंधड़ को भड़काने की चेष्टा करेंगे, किन्तु हमारी आस्था है उन लक्षविधि आर्यजनों के सहयोग की प्राप्ति पर है जो हमारे समान ही देव दयानन्द के अतृप्त अरमानों को पूर्ण करने की कसक को अपने हृदय मन्दिर में बसाए हैं। प्रभु के भरोसे और सहारे हम देव दयानन्द के ऐसे अनुयायियों के सहयोग को अपना सम्बल मान कर हम समय की पुकार का उत्तर देने के लिए कर्तव्य समरांगण में उतर पड़े हैं।

निराशा के इस अंधकार में आर्य प्रतिनिधि सभा रूपी आशा की यह किरण आर्य जाति में उद्भूत हो रही है। हमारा लक्ष्य आर्य समाज से फूट, कलह, गुटबंदी, दलबंदी की दलदल को हटाकर उसमें एकता के महामंत्र को गुंजित करना तथा देव दयानन्द के महान् लक्ष्य की पूर्ति हेतु आर्यजनों को सक्रिय करना है।

भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना न किसी का विरोध करने पर है और न ही किसी के अस्तित्व को चुनौती देने पर। पारस्परिक संघर्ष नहीं अपितु पारस्परिक सहयोग ही सभा की नीति है। दलों की दलदल में एक नए दल के निर्माण का प्रतीक भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा नहीं अपितु यह आर्यसमाज से दलबंदी की विभीषिका को मिटाकर समाज को एक संस्था मात्र नहीं अपितु आंदोलन बनाकर भारत के कोने-कोने तक विस्तृत व व्यापक करने का सम्बल है। यह उन निराश आर्यजनों के हृदय में आशा की ज्योति को जागृत करने वाला आंदोलन है जो महर्षि भक्तों में चुनाव चक्र और पदलिप्सा के पनपने से क्षुब्ध हैं।

"भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा" उस प्रत्येक व्यक्ति का अपना संगठन है जो एक देश, एक धर्म, एक संस्कृति, एक भाषा के राष्ट्रवाद के पावन मंत्र का उद्गाता है। मत-मतान्तरवाद और मानव-मानव में विभेद की सर्जक जो संकीर्णताएं आज राष्ट्र जीवन को जर्जरित कर रही हैं, यह सभी उनसे स्वदेश व स्वराष्ट्र को मुक्ति दिलाने हेतु एक सबल माध्यम है। संक्षेप में भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के उद्देश्य प्रस्तुत हैं।

(क) सम्पूर्ण भारत देश में सत्य, धर्म और ज्ञान का प्रचार करना।

(ख) वेद वैदिक साहित्य और आर्ष संस्कृति के विकास-प्रसार के लिए प्रयत्नशील रहना।

(ग) ऋषि दयानन्द द्वारा स्थापित 'आर्यसमाज' के संगठन को सुदृढ़ करना।

महर्षि दयानन्द की मान्यताओं के अनुसार विद्या के प्रसार और अविद्या की समाप्ति के लिए साहित्य और पत्र प्रसारित करना, विद्यालय खोलना, संस्थाएं चलाना। सर्वत्र स्थापित आर्य समाज प्रतिनिधि समाजों को सहयोग देना व लेना।

भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना की पृष्ठभूमि में जहां आर्यसमाज को गुटबंदी, दलबंदी और वाद-विवादों से मुक्ति दिलाने की महान् कामना क्रियाशील हैं वहां देव दयानन्द के मन्तव्यों से देश भर को अवगत कराना तथा धर्म का वेद वर्णित स्वरूप जन-जन तक विस्तारित करना भी हमारी पहली आकांक्षा है। हमारी यह कल्पना है कि मतवाद, सांप्रदायिकता, प्रान्तीयता, क्षेत्रीयता की भावनाओं से राष्ट्र को त्राण दिलाकर संगच्छध्वं संवदध्वम्, के वैदिक उद्घोष को जन-जन तक फैलाएं। वैदिक धर्म विशुद्ध मानव धर्म के रूप में जो उदात्त स्वरूप हैं, उनसे जन-जन को अवगत कराया जाए और देश और समाज में अनेकता के स्थान पर एकता, संघर्ष के स्थान पर सहयोग, गुटबंदी के स्थान पर गहन आत्मीयता और वैर-विरोध के स्थान पर समन्वय और सद्भावना के वायुमंडल का उद्भव हो।

कोरी घोषणाएं और मंचों का भाषण हमारा कार्यक्रम नहीं, अपितु हम 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' के योगिराज श्री कृष्णद्वारा दिए गए दिव्यगान के अनुगमन हेतु संकल्पबद्ध है। महर्षि दयानन्द का दिव्य जीवन हमारी प्रेरणा स्रोत है और अनेकानेक आर्य हुतात्माओं का बलिदान, त्याग तपस्या और तपःपूत जीवन वृत्त हमारा मार्ग दर्शक। प्रभु की प्रेरणा पर स्थापित भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा एक संस्था नहीं आंदोलन है अतः हमें आर्यसमाज के संग्राम की परिधि में आए सुहृदजनों के सहयोग की तो आशा है ही, साथ ही इस परिधि के बाहर खड़े उन सहस्रों आर्यजनों के सक्रिय योगदान का भी हमें विश्वास है

हमारे पास साधन नहीं साधना है। वही हमारा सम्बल है और ध्येय की आराधना ही हमारा बल है। ऋषि भक्तों की भावना स्नेह ही हमारा धन है और वैदिक ज्ञान पिपासुओं की शुभकामना ही हमारी पूंजी है। हमें विश्वास है कि हम सत्य, धर्म ज्ञान और साधना पथ के पथिक बनकर उत्तर में हिमगिरि की उत्तुंग शैल मालाओं से लेकर दक्षिण में सागर की उताल तरंगों तक विस्तीर्ण आर्य भूमि के कण कण को आर्यसमाज के महान् संदेश से गुंजित करने की कल्पना को धर्मप्राण भारतीय जन-जन के सहयोग से साकार करेंगे और समस्त भारत से समवेत, ध्वनि कोटि - कोटि कंठों से गूंजित होंगे।

जो बोले सो अभय। वैदिक धर्म की जय॥

मैं हृदय मन्दिर से लिख रहा हूँ~

मौत की छाया में : आशा का गीत

६ अगस्त शाम ४ बजे ! मुख पर लकवे का प्रकोप हुआ । सभी घबरा गए । डाक्टर को दिखाया, उसने पूर्ण विश्राम का आदेश दिया । कहा, बात भी न करो । अन्यथा इलाज न होगा । पर उसकी सलाह एक कान से सुनी दूसरे से निकाल दी । एक पल भी तो आराम नहीं किया ।

अगले दिन सुप्रसिद्ध डा० जानकी ने एक मास के लिए नर्सिंग होम में प्रविष्ट होने को कहा, पर मेरा उत्तर था, जब तक होश है भरती नहीं हूँगा । काम कौन करेगा ? कई शुभ चिन्तकों ने इसे पागलपन की संज्ञा दी । पर हमारी दिनचर्या नहीं बदली । काम जारी रहा । प्रभु को सब कुछ सौंप कर हम निश्चिंत हो गए ।

गत अप्रैल से आज अक्टूबर तक स्वास्थ्य बिगड़ रहा है । अन्न त्याग का फल अब भोगना पड़ रहा है पर काम में कहीं एक पल रुकावट नहीं आयी । दिन रात में नींद के अतिरिक्त एक पल भी तो अपना नहीं है ।

वस्तुतः हमारे मस्तिष्क में सिवाय वेद प्रचार के और किसी भी बात के लिए स्थान नहीं है । न धन, न पद, न राज्य, न स्वागत......इच्छा केवल एक है कि कैसे सारी धरती वेद की ऋचाओं के संगीत से गूंज उठे । क्या किया जाय कि सब वेद पथ के पथिक बन जाएं ।

हम जानते हैं कि भाग्य में केवल गालियां लिखी हैं । सम्मान को विष समझ कर हम ने सत्य का दामन पकड़ा है । इस रास्ते पर चलना कितना कठिन है, यह कोई भुक्त भोगी ही जान सकता है । आज के युग में जब झूठ—जाल—फरेब ही युग धर्म बन चुका हो, तब सच कितना कड़ुवा लगता है, यह कौन समझ सकेगा ?

हमारी निष्ठा व्यक्तियों के प्रति कभी नहीं रही । हम अनुयायी हैं केवल ऋषि दयानन्द के । निष्ठा है वैदिक विचारधारा पर । कथनी और करनी का अन्तर न सीखा न सीखेंगे । दुर्भाग्य वश आज नारों का युग है । नारों के बल पर नेता बनना जितना सरल है शायद उससे सरल और कुछ नहीं ! हम यह करेंगे, वह करेंगे......कहकर गाड़ी दौड़ायी जा रही है पर वह मंजिल तक कैसे पहुंचेगी ?

कोई कभी सोचता है कि संसार के ३०० करोड़ व्यक्तियों को कैसे बदलाजाए ? कितनी समस्याएं हैं —कितनी उलझनें हैं, क्या-क्या करना है, कभी कोई सोचता है ? क्या किसी के पास इस बात के लिए समय है ? क्या यह संगठन इसलिए ही बने थे कि केवल पदों के लिए झगड़ते रहें ? प्रश्न का उत्तर कौन देगा ? कौन समझेगा ?

नेता नामधारी व्यक्तियों ने अपने स्वार्थ के लिए आर्यसमाज को समाप्त कर दिया है जिनको आर्य समाज के संबन्ध में क—ख—ग का भी ज्ञान नहीं वे आर्यसमाज के कर्णधार हैं। हैं—तो हैं उन्हें कौन हिला सकता है।

आर्य जनता, ऋषि दयानन्द के भक्त, उपदेशक और विद्वान गंभीरता से सोचें कि क्या आपस में लड़-लड़ कर हम धरती को आर्य बनायेंगे ? क्या अपनों को निकाल निकाल कर -- आर्यसमाज आगे बढ़ेगा ? सच तो यह है कि जब तक सभी प्यार का मंत्र नहीं पढ़ेंगे, द्वेष को जड़ मूल से समाप्त नहीं किया जाएगा, तब तक आर्यसमाज दयानन्द के सपनों का आर्यसमाज नहीं बनेगा !

हमारे मन में किसी के भी प्रति विरोध नहीं है। बड़े से बड़े विरोधी को भी गले लगाने को हम सदा तैयार हैं। सच तो यह है कि हमने कभी किसी को विरोधी माना ही नहीं। जिन्होंने हमें गालियां दीं या दे रहे हैं हमारा मन तो उन से भी प्यार करता है। हम कोई ऐसा ढ़ंग ढूंढना चाहते हैं जिस से सब एक मंच पर एक साथ इकट्ठे हो सकें।

और झगड़े समाप्त करने का उपाय है केवल काम। सभी संगठन और उन के अधिकारी यदि सारी बातें छोड़ कर केवल वेद की विचारधारा के प्रचार में लगें तो झगड़े एक पल में मिट जाएं। सब के मस्तिष्क में यदि केवल यह भर जाए कि कैसे अपने क्षेत्र को आर्य बनाया जाए, तो फिर आपसी विवाद,क्यों होगा ?

नीचे से ऊपर तक, छोटे से बड़े तक, सब सोचें कि ऋषि का काम कैसे पूरा हो ? सभाएं संस्थाएं सब देश—विदेश को आर्य बनाने का उपाय सोचें। वोट बटोरने और पदों के लिए झगड़ने की प्रवृत्ति को हम मिटाएं और काम करें। दिन-रात काम करें फिर देखिए किस तेज़ी से बढ़ता है आर्य समाज !

आर्य समाज बढ़े, हम इसी लिये संघर्ष कर रहे हैं। इसी लिए बीमारी में भी १८—१८ घन्टे काम कर रहे हैं। नेताओं की गालियां खाकर भी हम मुस्कराते आगे बढ़ रहे हैं, हमारा विशवास है कि धरती से विदा होने से पहले हम आर्य समाज को ऋषि दयानन्द का आर्यसमाज बनाने में सफल होंगे।

आर्यसमाजें फिर सो गयीं........

१२ अप्रेल को शताब्दी दिवस मनाने के लिए जो उत्साह उभरा था वह १३ अप्रेल की प्रातः तक किसी गहरी नींद में सो गया प्रतीत हो रहा है। सब ने एक दिन सभा या जलूस निकाल कर कर्तव्य की पूर्ति कर ली है। किन्तु क्या यही हमारी शताब्दी है।

दुर्भाग्य वश हमारे नेताओं को या तो आपस में लड़ने की कला आती है या अपीलें निकालने की। धन संग्रह और गद्दी पर बने रहना ही उन का एक मात्र उद्देश्य बन गया है। पथ भ्रष्ट होकर वे इतने पतित हो गए हैं कि गृह-कलह की सारी सीमाएं लांघ कर नैतिकता—मर्यादा को तिलांजलि देकर गद्दी पर बैठे रहने के उपाय सोचना ही उन का जीवनोद्देश्य बन गया है।

शताब्दी वर्ष में भी जन जागरण का शंख नाद वे नहीं कर सकें। उनके द्वारा करोड़ों की अपीलें तो अनेक बार पढ़ने को मिलीं। पर देश को आर्य बनाने का

क्या उपाय उन्होंने किया ? अज्ञान पाखंड पर प्रहार के लिए क्या साधन उन्होंने जुटाए ? क्या किया उन्होंने वैदिक धर्म के प्रसार के लिए ? इसका उत्तर आज तक नहीं मिला ।

भाषण शूरता राष्ट्र व धर्म को विजयी नहीं बना सकती । धर्म की रक्षा और प्रचार के लिए बलिदान और मस्तिष्क चाहिए ब्राह्मण का, वैश्य का नहीं । संगठन व्यापारी बन गए हैं इस लिए धन पद ही उनका आराध्य है ।

किन्तु क्या ऋषि दयानन्द के अनुयायी इतने निष्प्राण हो चुके हैं कि नेताओं के माया जाल में गुरु का लक्ष्य समाप्त होने देंगे ? क्या आर्यसमाज मंदिरों की स्थापना इसी लिए हुई थी कि सप्ताह में एक दिन १० या १२ व्यक्ति हवन आदि करें तथा शेष दिनों में ताले आर्यसमाज में लगे रहें । जो कुछ यह हो रहा है क्या ठीक है ?

हमारा आग्रह है " जागो और प्रचार करो । हमारा नहीं—सत्यार्थ प्रकाश का, कहीं से भी मंगाओ, पर सत्यार्थ प्रकाश बांटो । ऋषि जीवनी बांटो । घर-घर में दयानन्द का नाम—कार्य और संदेश गुंजांओ ।

आग लगा दो पाप के ढ़ेर में, जला दो अज्ञान का कूड़ा,अंध विश्वासों की ढेरी । और उगाओ वेद का सूरज प्रत्येक मन मंदिर में । नेताओं की पथ भ्रष्टता, पद लोलुपता, स्वार्थ परायणता देखकर ही हम ने आवाज लगायी थी कि अपना धन अपने ही क्षेत्र में व्यय करो । अपने-अपने प्रांत की सुधि लो ।

जनता ने इस आवाज का स्वागत किया और आज हम आर्यसमाज के सर्वोपरि हित में यह मांग करते हैं कि आर्यसमाज जागे और पूरे एक वर्ष तक अपने-अपने नगर को वेद—दयानन्द मय बनाने के लिए जो कुछ भी कर सकते हों करें ।

काम होना चाहिए । सत्य बढ़ना चाहिए और धर्म जीतना चाहिए । पद स्वार्थ और कलह जिन्हें प्रिय है उन्हें वे मुबारक । पर जिन्हें देव दयानन्द के प्रति श्रद्धा है वे दयानन्द का संदेश पूरे बल से गुंजा कर आर्यसमाज शताब्दी मनाएं । यही समय की मांग है ।

शराब बंदी की नीति

शासन ने २ अक्टूबर को शराब बन्दी की नीति की घोषणा कर सराहनीय पग उठाया है । जो कार्य १५ अगस्त १९४७ को करना चाहिए था वह २८ वर्ष पश्चात् भी कर लिया गया, आंसू पोंछने के लिए यह पर्याप्त है ।

प्रभु कृपा करें कि शासन देश से शराब को समूल समाप्त करने में समर्थ हो । धनिकों में विलासिता और शराब जिस तेजी से बढ़ी है उसने हमारी जड़ें खोखली कर दी हैं ।

जो भी हो हम प्रधान मंत्री की इस घोषणा का स्वागत करते हैं । आर्य जनता को भी नशों के विरुद्ध वातावरण बनाकर देश के चरित्र को उठाने में योग देना चाहिए ।

स्व० पं० विद्यावती शारदा की पुनीत स्मृति में

सर्वश्रेष्ठ वैदिक ग्रन्थ पर ५००१) प्रतिवर्ष पुरस्कार

सत्यार्थ प्रकाश के प्रत्येक समुल्लास की व्याख्या एक-एक ग्रंथ में प्रत्येक समुल्लास पर १००१ रु० का पारितोषिक

दयानन्द संस्थान की कार्यकारिणी ने अपनी बैठक में सर्वसम्मति से प्रति वर्ष लिखे जाने वाले सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ पर ५००१) का पुरस्कार "विद्यावती पुरस्कार" के रूपमें देने का निश्चय किया है ।

इस के अतिरिक्त यह भी निश्चय किया गया कि सत्यार्थ प्रकाश पर १४ विशाल ग्रंथ प्रकाशित कराए जाएं । प्रत्येक खंड के लेखक को १००१) का पुरस्कार देने का निर्णय किया गया है ।

पुरस्कार समिति का संयोजक आचार्य श्री रत्नसिंह एम०ए० अध्यक्ष दर्शन विभाग म०मि० कालिज गाजियाबाद को बनाया गया है। विस्तृत जानकारी के लिए ग्रन्थ लेखक संस्थान कार्यालय से संपर्क कर सकते हैं। स्मरण रहे आर्य जगत् में नए साहित्य को प्रोत्साहन देने हेतु यह सब से बड़ा पुरस्कार है ।

दयानन्द संस्थान

प्रभु कृपा से क्या नहीं हो सकता, इस का सब से बड़ा और साक्षात उदाहरण दयानन्द संस्थान है।

बिना पूंजी और साधनों के दीपमाला संवत् २०२८ (१६७१) में कार्यारंभ हुआ । विरोध और झंझावात की आंधी में भी अडिग यह बढ़ता गया और आज १६७५ में हम सगर्व यह घोषण करते हैं कि संसार भर में आर्यसमाज की सारी संस्थाओं से अधिक वेद-प्रचार आप के अपने 'दयानन्द-संस्थान' द्वारा हो रहा है ।

संस्थान ने आज तक जो कहा वह किया ! घोषणाओं में नहीं कार्य में विश्वास रखते हुए संस्थान संसार को आर्य बनाने के लिए कार्य कर रहा है आर करता रहेगा ।

हमें विशवास है कि देश विदेश में दयानन्द के सच्चे अनुयायी कार्य का महत्व पहचानेंगे और अपना स्नेह-आशीर्वाद सहयोग संस्थान को अपना ही समझ सदैव देते रहेंगे ।

—भारतेन्द्र नाथ

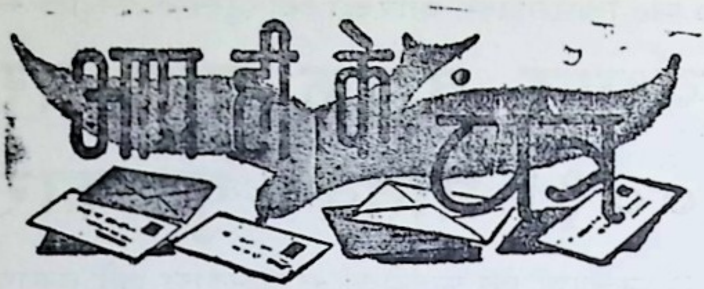

बम्बई से आया एक पत्र !

प्रभो वेद वीणा बजे विश्वभर में।
सुनें मंत्र झंकार प्रत्येक घर में॥

आर्यसमाज स्थापना शताब्दी के विषय में आपने पूछा सो भाई, मैं तो इस महोत्सव की किसी भी समिति में नहीं हूं और न हीं मुझे इस प्रकार के विशाल समारोहों में विश्वास है — आर्य समाज का करोड़ों रुपया खर्च हो जाएगा और परिणाम कुछ भी नहीं निकलेगा—यह मेरी मान्यता है आप माने या न मानें—क्यों इसमें केवल प्रदर्शन मात्र होगा और रुपये का दुरुपयोग हाथियों पर बैठ कर सवारियां निकालकर महन्तों के रूप में अपना प्रदर्शन करने से आर्य समाज की उन्नति होगी मेरी समझ में नहीं आता — यह ठीक है कि यहां के पदाधिकारी अपने व्यवसायिक प्रभुत्व से धन एकत्रित कर लेगें और मेले का आडम्बर भी कर लेगें परन्तु उससे होगा क्या ? यह अभी तक कम से कम मेरी बुद्धि में तो नहीं समाया क्योंकि आर्य समाज ने आज अपने को सभी क्षेत्रों से अलग कर लिया है

" आता है याद मुझ को गुजरा हुआ जमाना "

जब हर एक आर्य समाजी अपने आप में उपदेशक था,
जब हर एक आर्य समाजी अपने को दूसरों का सहायक समझता था,
जब हर एक आर्य समाजी अपने को अबलाओं का रक्षक समझता था,
जब हर एक आर्य समाजी हर व्यक्ति को अपना भाई समझता था,
और अछूतोद्धार का अगवा मानता था और अपना कर्तव्य समझता था

खान पान की मर्यादा थी - शिक्षा दीक्षा में अपने परिवार को सम्मुन्नत करता था वैदिक आदर्श पद्धति के आधार पर सत्य—सत्य आर्यसमाजी के जीवन का लक्ष्य था जिसका प्रभाव न्यायालयों तक में था - स्वाध्याय,अन्याय और अभाव से सदैव लड़ाई लड़ने वाला अपने को ऋषि का भक्त कहलाता था परन्तु आज हर दिशा में उल्टी गंगा बह रही हैं --

१ परम्परागत अन्ध विश्वास पहले से अधिक अपना प्रभाव जमा रहा है। घर में मूर्ति पूजा और आर्य समाज का प्रधान...

२ शिक्षा—साविद्या या विमुक्तये का आदर्श आज कहां गया है? बालिकाओं का शिक्षा ही विद्यालय बने पढ़ीलिखी और पढ़ लिखकर बन गई क्या? यह आप स्वयं

देखें मेरे से नहीं लिखा जायेगा ।

स्वाध्याय—स्वाध्याय तो जब हो जब उसकी आवश्यक्ता हो—पहले शास्त्रार्थ होते थे उनके लिए तैयारी करनी पड़ती थी ग्रन्थों को खोला जाता था परन्तु अब ?

हिन्दू जाति की अवनति—होने न पाये कोई हिन्दू ईसाई या मुसलमां या आर्यों की सेना तैयार कर गया है देखो तो स्वामी कैसा उपकार कर गया है और अब ? कालिजों में पढ़ने वाली अधिकतर हिन्दू लड़कियां ईसाई और अधिकतर मुसलमान हो रहीं है फैशन और आसक्ति का ताण्डव दिन रात चल रहा है।

भद्र कर्णेभि-शृणुयाम भद्र पश्येम-क्या सुनेंगे और देखेंगे यह आप भी देख और सुन रहे होगें लिखने को बहुत कुछ है पर क्या लाभ ? जब असंस्कृत-अनभिज्ञ और मिथ्याचारी व्यक्तियों के हाथ में किसी संस्था की बागडोर आ जाए तब और आशाएं क्या होगीं ?

पण्डित जी उधर की आर्य समाजों की क्या स्थिति है यह तो आपको मालूम होगी परन्तु मेरे ऋषि के कर कमलों से जिस आर्य समाज के भवन की आधार शिला रखी गई थी उसकी क्या दशा है -- वह आपको मैं लिख रहा हूं —

कभी यहां पर भी आर्य समाज का अपना विशिष्ट स्थान था। विद्वान उपदेशक थे। सान्ताक्रुज में गुरुकुल था जो सूपा में चला गया। आर्यसमाज में संस्कृत पाठशाला थी। आर्य समाज की रात्रि पाठशालायें थी, अनाथ आश्रम था औषधालय था परन्तु समय ने ऐसा थपेड़ा दिया कि आज यहां की आर्य समाज की ऊपर लिखी कोई भी प्रवृत्ति नहीं है। कभी आर्य समाज में श्रावणी पर्व पर यज्ञोपवीत बदलने के लिए दो २ समय यज्ञ करना पड़ता था परन्तु आज एक बार में भी भवन खाली पड़ा रहता है। कभी समय था साप्ताहिक सत्संग में आर्य समाज का भवन(प्रत्येक सप्ताह) भरा पूरा रहता था परन्तु हाय - आज कुल ८-१० व्यक्तियों का ही सत्संग होता है। आर्य समाज का वार्षिकोत्सव होता था, नगर कीर्तन निकलता था, एक समां बंध जाता था परन्तु आज दर्शन तक नहीं। आज आर्य समाज के कुल मुशिकल से २५ सभासद भी नहीं हैं।

पण्डित जी क्या लिखूं क्या न लिखूं दुःख होता है। बस इतने से ही समझ लें कि आज हम कहां हैं? भूत क्या था वर्तमान क्या है और जब वर्तमान को ही हम न बना सके तो भविष्य क्या बनेगा ?

अच्छा काफी बड़ा पत्र हो गया है आप भी सोचेगें किस पागल से पाला पड़ा है। कुछ अच्छा ही नहीं लगता इसे परन्तु करूं क्या हम तो कहते थे कि आयेंगे खत अरब से जिसमें लिखा यह होगा, आगे आप को याद होगा—

परन्तु अब क्या हो रहा है यह आप ही देखें इसलिए सभी प्रकार की प्रवृतियों से विरक्ति लेकर केवल अपने प्रैस में बैठे जो भी जन सेवा इस शरीर से हो सकती है करता रहता हूं (बड़ाई मत समझना) प्रभु शक्ति दें मैं देश के कुछ काम आ सकूं।

—गणपति आर्य,
गायवाड़ी, बम्बई-२

आपका भेजा हुआ "महर्षि दयानन्द के गौरव की रक्षा के लिये विनम्र निवेदन पत्रिका प्राप्त हुई। आपने अपना समय तथा धन दोनों लगाकर समाज की जो सेवा की है वह प्रशंसनीय तथा अनुकरणीय है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी को चाहिये कि वे दुराग्रह तथा अपनी जिद को छोड़कर घोषणा कर देते कि यह पुस्तक (सायण तथा दयानन्द के वेद भाष्यों का तुलनात्मक अध्ययन) धोखे से प्रकाशित हुई है तथा आर्य जनता को सावधान कर दें तथा जनता से क्षमा याचना करें कि यह हमसे भूल हो चुकी है। यदि वे ऐसा नहीं करते हैं तो **समाजों को चाहिये कि उन्हें सार्वदेशिक आ० प्र० स० के प्रधान पद से त्याग पत्र देने का आग्रह करें। अन्यथा उन्हें हटा दिया जाय।**

जो व्यक्ति इस योग्य नहीं है उसे जनता क्यों चुनती है समझ में नही आता।

अनन्तराम राम आर्य, ठेकेदार
मन्त्री आर्य समाज
महर्षि दयानन्द नगर रायपुर (म० प्र०)

मान्यवर ! सादर नमस्ते।

सितम्बर को जन-ज्ञान प्राप्त हुआ—जिसके द्वारा आपके नेतृत्व में भारतीय आर्य-प्रतिनिधि सभा के गठन के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। आर्यसमाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य - प्रतिनिधि सभा के कार्य कलापों के प्रतिक्रियास्वरुप और उसके निदान के लिए भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का गठन हुआ है। या यह भी—राजनीतिज्ञों के विक्षुब्ध गुटो जैसा पटाक्षेप ही है। सत्ता प्राप्त करने की होड़ में असफल होने वाले दल प्रायः अपनी नवीन गतिविधियों द्वारा जनमानस को आकर्षित करना चाहते हैं। लेकिन गत साल दिसम्बर माह के आरोप प्रत्यारोपों पर दृष्टि डालने से ऐसा प्रतीत होता है कि सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा का झूठा दम्भ तोड़ने के लिए और उसे राह विमुख होने से बचाने के लिए दयानन्द संस्थान बेचैन है। लेकिन पद, धन, व्यक्तिगत मर्याया की झूठी तृष्टीकरण की नीति के चलते पदाधिकारियों के कानों पर जू नहीं रेंगती।

आर्य जनता के लिए इससे अधिक खुशी की बात क्या हो सकती है कि आर्य समाज के मूर्धन्य विद्वानों की टोली वेद, सत्य और ऋषि दयानन्द पर कोई टिप्पणी सुनना पसन्द नहीं करती। अगर भारतीव आर्य प्रतिनिधि सभा के संगठन द्वारा प्रस्तुत भारतवर्ष की पावन धरती पर वैदिक घोष गूंजे, ऋषि की जय-जयकार हो, सत्य का राज्य और असत्य का त्याग हो तो आर्य जनता उसे सहर्ष सहयोग देगी, लेकिन वह भी कहीं पथ विचलित न हो जाय। यह विचारणीय विषय है। फिर भी आर्य जनता को अपने विद्वानों के वचन और चरित्र पर विश्वास है। अतः भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा को हमारा हार्दिक समर्थन प्राप्त है।

हम नेपाल की सीमा पर बसे हैं और नेपाल में भी ऋषि दयानन्द के आदर्शों का मैं प्रचार कर रहा हूं प्रभाव अच्छा हुआ है। अतः आप भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के बारे में पूर्ण विवरण हमें भेजने का कष्ट करेंगे ताकि हम सभा के सक्रिय सदस्य बनकर ऋषि भक्तों का काफिला खड़ा कर दें। —**राम किशोर शर्मा**
ग्राम हीरापुर बिहार

(पत्र पृष्ठ ८१ पर भी पढें।)

आय समाज शताब्दी पर : दयानन्द संस्थान के

दो अनुपम उपहार

वन्दना के स्वर

[सम्पादक श्री क्षेमचन्द्र सुमन]

हिन्दी साहित्य के प्राय: सभी मूर्धन्य कवियों द्वारा महर्षि दयानन्द पर लिखी कविताओं का अनुपम संग्रह ।

श्री मैथिली शरण गुप्त, नैपाली, बलवीर सिंह रंग' काका हाथरसी निराला, द्विवेदी, हरिऔध, माखन लाल चतुर्वेदी, नीरज आदि सभी सुप्रसिद्ध कवियों की रचनाओं का संग्रह

यह संग्रह सार्वदेशिक सभा ने तैयार कराया था किन्तु तैयार होने पर उन्होंने अर्थाभाव के कारण प्रकाशन में असमर्थता प्रगट की—धन हमारे पास भी नहीं हैं, फिर भी जनता के सहयोग बल पर आप का अपना संस्थान इस ऐतिहासिक महान् साहित्यिक कृति को प्रकाशित कर रहा है ।

बड़ा साइज : बढ़िया कागज

पृष्ठ लगभग २५० : मूल्य ८)

किन्तु प्रचार के लिए ८ नवम्बर १९७५ तक केवल

५) प्रति सजिल्द

डिलक्स लाइब्रेरी संस्करण १५)

आज ही आदेश भेजें

दयानन्द-संस्थान

नई दिल्ली-५

छप रही है : छप रही : चित्र बन गए

दयानंद चित्र दर्शन

इतिहास में पहली बार

महर्षि दयानन्द के चित्रों का ५ रंगों में अनुपम प्रकाशन

सुप्रसिद्ध साहित्यकार—नवनीत के भू० पू० यशस्वी सम्पादक
श्री सत्यकाम विद्यालंकार के निर्देशन में

कला और सौन्दर्य का संगम
महर्षि के जीवन की प्रेरक झांकी

जिसमें इतिहास स्वयं बोलता है—
शीघ्रातिशीघ्र तैयार हो रहा है

साइज १०×१५ इंच सर्वश्रेष्ठ
चिकना : मजबूत कागज= लागत लगभग २०)
मूल्य अजिल्द=१०)
सजिल्द=१५)

किन्तु १५ नवम्बर १९७५ तक अजिल्द=मूल्य ५)
सजिल्द=मूल्य १०)

शीघ्रता करें : अन्यथा प्रतियां
समाप्त होने पर फिर न मिल सकेंगी।

दयानन्द संस्थान नई दिल्ली-५

आर्य समाज शताब्दी वर्ष में

जन-ज्ञान (मासिक)

का सदस्यता अभियान

आप एक नया सदस्य बना कर
उस का शुल्क १५) हमें भेज दें

हम आप को एक बढ़िया - सजिल्द
सत्यार्थ प्रकाश मुफ्त भेज देंगे

शीघ्रता करें ! अधिक से अधिक
सदस्य बना कर अधिक से अधिक
सत्यार्थ प्रकाश मुफ्त मंगाएं

जन-ज्ञान (मासिक) नई दिल्ली-५

सत्यार्थ प्रकाश मुफ्त प्राप्त करने के लिए

श्री सम्पादक जी !

मैं 'जन-ज्ञान' का पुराना सदस्य हूँ। मेरा सदस्य नं.................. है। मैं एक नया सदस्य बनाकर भेज रहा हूँ—कृपया मुझे सत्यार्थ प्रकाश उपहार में भेज दें।

—हस्ताक्षर
—पूरा पता
—सदस्य संख्या

नए सदस्य का पूरा पता——————
——————
——————

धन भेजने की तिथि ————

आर्यसमाज शताब्दी अवसर पर

रामलाल कपूर ट्रस्ट का विशिष्ट प्रकाशन

आज ही आदेश भेज दें ....

ऋषि दयानन्द के वेद भाष्य सत्यार्थप्रकाश—संस्कार विधि, १४ लघु ग्रन्थों का संग्रह आदि ग्रन्थों के विशिष्ट सुन्दर शुद्ध एवं प्रामाणिक संस्करण समान आकार में छापे हैं। प्रत्येक ग्रन्थ के साथ सम्बन्ध रखने वाली १०-१२ सूचियां अन्त में दी है। इन सूचियों से इस संस्करणों का महत्त्व बहुत बढ़ गया है। निम्न ग्रन्थ छप चुके हैं—

१—**ऋग्वेदभाष्य** (संस्कृत हिन्दी) वेद विषयक सहस्रों टिप्पणियां के सहित भाग १-३०-००, भाग २-२५-००, भाग ३-३०-००। आगे छपाई चालू है।

२—**सत्यार्थप्रकाश**—प्रथम संस्करण समाप्त। द्वितीय छप रहा है। मूल्य (१२५० पृष्ट) २५-०० राजसंस्करण ३०-००

३—**संस्कार विधि**—मूल्य १०-०० राज संस्करण १२ ००

४—**दयानन्द लघु ग्रन्थ संग्रह**—१४ ग्रन्थों का अपूर्व संग्रह एवं संपादन। मूल्य २०-००

५—**उणादिकोष**—ऋषि दयानन्द की स्वरचित वृत्ति १२ प्रकार की सूचियों के सहित। मूल्य ७-००, सजिल्द १०-००।

६—**ध्यानयोग प्रकाश**— स्वामी लक्ष्मणानन्द कृत। मूल्य ८-००

अक्तूबर तक सत्यार्थ प्रकाश के ग्राहक बनने वालों को रियायत दी जायेगी। पत्रव्यवहार करें।

रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़ (सोनीपत)

मुझे कुछ नहीं चाहिये

—विरजानन्द दैवकरणि, गुरुकुल झज्जर (रोहतक)

सं० २००३। आषाढ़ मास के कृष्णपक्ष का छठा दिन। वह युवक रुग्ण शय्या पर लेटा था। उसका पैर भयंकर फोड़े के कारण ऊपर तक सूज गया था। दर्द से तेज बुखार भी चढ़ा हुआ था। उसे एक कदम चलना भी भारी था। अपने मां बाप का सबसे बड़ा पुत्र था वह। उसकी माता एवं भाई-बहन चिन्तित बैठे थे। पैर का साधारण-सा ग्रामीण उपचार हो रहा था। उस समय निकटवर्ती क्षेत्र में कोई अच्छा डाक्टर भी तो नहीं था, जिससे अच्छा उपचार कराया जा सके। इसी प्रकार कई दिन बीत गये, पैर अच्छा होने ही में न आ रहा था।

दिन का तीसरा पहर समाप्त हो रहा था। गांव के कुछ किसान व चरवाहे घर लौट रहे थे तो कुछ जल्दी जल्दी काम निपटाकर घर पहुंचने की तैयारी में थे। अचानक गांव के दक्षिण पूर्व में "हाय रे! लूट लिये! लूट लिये!! कोई बचाओ! बचाओ!!" का शोरगुल सुनाई पड़ा जिसे सुनते ही गांव के कई लोग लाठी, कुल्हाड़ी, जेली जो भी हाथ लगा, उसे ही उठा कर भागने लगे। पर अचानक यह क्या हुआ? सारी भीड़ गांव के बाहर झुन्ड बनाकर खड़ी हो गई। किसी में भी आगे बढ़ने का साहस नहीं था।

वास्तविकता का पता कुछ देर से लगा कि ऊंटों पर चढ़े तीन डाकुओं ने ग्राम के चार ऊंट लूट लिये हैं और दूर खड़े होकर लोगों की भीड़ की ओर बराबर गोलियां चलाते हुए पीछे हटने की चेष्टा कर रहे हैं। जिन किसानों के ऊंट छिने थे वे भी साहस नहीं दिखा रहे थे।

"हटो! हटो!! मुझे निकलने दो। रास्ता खाली करो।" यह कहता और भीड़ को धकेलता व एक पैर से लंगड़ाता वह युवक हाथ में एक तीक्ष्ण बरछी लिये भीड़ को चीर कर निकल ही आया और लगा डाकुओं की ओर बढ़ने। लोगों ने रोकना भी चाहा, किन्तु युवक ने किसी की नहीं सुनी। उसी जोश में पैर के दर्द और तीव्र ज्वर को भी वह भूल गया।

"खबरदार! जो एक कदम भी आगे बढ़ाया तो गोली सीने से पार हो जायेगी"— एक डाकू दूर से ही युवक को सम्बोधित करके चिल्लाया। परन्तु युवक तो इतने जोश में था कि उसने सुनकर भी अनसुनी कर दी। युवक के मां बाप पुत्र के संबन्ध में बहुत आशंकित और भयभीत थे। उसकी मां तो रो भी पड़ी। सचमुच मातृहृदय पुत्र प्रेम से सदा विह्वल रहता है।

"धांय ! धांय !!! धांय !!!" लगातार तीन धमाके हुए। उस जयदयाल नामक युवक के अच्छे पैर में दो छर्रे धंस गये और वह गिरता-गिरता बचा। वह सीधा दौड़ कर एक ऊंट के नीचे पहुंचा और एक डाकू पर प्रहार कर दिया। वार खाली गया और डाकू बाल-बाल बच गया। युवक को अपना खाली वार असह्य हो गया और वह तिलमिला उठा। ज्यों ही युवक दूसरा प्रहार करने के लिये ऊंट के नीचे से निकला, त्यों ही दूसरे डाकू द्वारा छोड़ा हुआ एक छर्रा उसकी जांघ में घुस गया। युवक ने प्राणों की परवाह न कर दूसरा वार किया, उसे भी डाकू बचा गया, केवल ऊंट की गर्दन पर साधारण खरोंच आई। अब तो युवक के क्रोध का पार न रहा, उसने सम्मुख आकर एक डाकू पर तीसरा तीव्र प्रहार किया, जो सीधा उसकी गर्दन पर हुआ और ऊंट पर सवार डाकू धड़ाम से नीचे गिर पड़ा। यह सब होता देख शेष डाकू चारों ऊंटों को छोड़कर कुछ दूर खिसक कर अपने ऊंटों पर बैठे-बैठे जयदयाल को लक्ष्य करके गोलियां चलाते रहे। वह भी उस मृत डाकू की आड़ में लेटे-लेटे उनसे अपना बचाव करता रहा।

भीड़ अब भी दूर खड़ी सारा दृश्य देख रही थी। युवक जयदयाल चिल्ला-चिल्ला कर उन्हें सहायता के लिये बुला रहा था, किन्तु किसी का भी साहस न था कि उस मरे हुए डाकू को उठा ले आयें। उसे ग्रामीणों पर झुंझलाहट हो रही थी। अन्त में वह उठा और मृत पुरुष की गर्दन से अपनी बरछी निकाली और शेष डाकुओं की ओर मुड़ा। किन्तु डाकू धीरे-धीरे दूर सरक गए थे। बचे हुए दोनों चतुर डाकू चकमा देकर पीछे से उस मृत डाकू साथी को भी उठा ले गये जिससे पुलिस पहचान न कर सके रातों रात डाकू कई कोस मार्ग तय करके राजस्थान की सीमा में बसे एक ग्राम में पहुंच गये। मार्ग में जाते हुए खेतों में पड़े सूखे ईंधन में अपने साथी के शव को डालकर आग लगाते गये।

गांव के सात व्यक्तियों ने तीसरे दिन उनके पदचिन्हों के सहारे खोज शुरू की और राजस्थान में जाकर शेष डाकुओं का पता लगा लिया। पुलिस को सूचना दी गई और डाकू पकड़े गये। सप्ताह भर बाद जिला महेन्द्रगढ़ के भगड्याणा ग्राम में पुलिस पहुंची और युवक जयदयाल को थाने ले गई तथा उससे पूछा—"तुम इन डाकुओं को पहचानते हो?" उसने दोनों के मुख को गौर से देखा और निषेधात्मक सिर हिला दिया और कहा कि मैं उस समय इतनी गर्मी में था कि मैंने किसी डाकू को ध्यान से देखने का यत्न ही नहीं किया। पुलिस ने युवक के साहस तथा वीरता की प्रशंसा की तथा पुरस्कार देने की घोषणा करके उसे घर भेज दिया तथा तीन दिन बाद पुनः आकर पुरस्कार लेने को कहा। परन्तु युवक चलते समय कह गया मुझे पुरस्कार वगैरा कुछ नहीं चाहिए, मैंने तो अपना कर्तव्य निभाया है। इनाम पाने के लिए मैंने यह काम नहीं किया, किन्तु निर्दोष पर अत्याचार होता देख मुझे जो क्रोध उठ आया था, अपने इस क्रोध का शमन मैंने इस रूप में किया है।" और सचमुच उस युवक ने कुछ न लेकर एक आदर्श प्रस्तुत कर दिखाया। काश, हम भी ऐसी निःस्पृह सेवा कर सकें।

यदि कोई विष खा ले तो......

—परमानन्द 'मधुकर'

प्रत्येक मनुष्य में कुछ न कुछ ईर्ष्या की भावना अवश्य होती है। दूसरों का धन और ऐश्वर्य किसी को फूटी आंखों नहीं सुहाता। दूसरों की किसी भी प्रकार की उन्नति देख कर कुछ लोगों का हृदय ईर्ष्या से जल उठता है। वे सदैव ही उन्नतिशील व्यक्तियों को पतन के गहन गर्त में ढकेलने का भरसक प्रयत्न करते हैं, किन्तु जब उनके किये कुछ होता नहीं तो वे मन मार कर बैठे रहते हैं।

यदि किसी की उन्नति से ऐसे ईर्ष्यालु व्यक्तियों की उन्नति अथवा स्वार्थ में जरा सा भी व्याघात हुआ तो उनकी ईर्ष्या पराकाष्ठा पर पहुँच जाती है। उनके अंतर का पशु जाग उठता है और वे उस व्यक्ति विशेष के प्राण लेने को तत्पर हो जाते हैं। अत: वे ऐसा उपाय खोजते हैं जिससे उस व्यक्ति का प्राणांत होकर उनका मार्ग अकण्टक हो जाय और साथ ही उनका यह पाप किसी को विदित भी न हो। ऐसा करने के लिये वे प्राणघातक विष का सहारा लेते हैं, और बहुधा वे अपने लक्ष्य में सफल भी हो जाते हैं।

कभी-कभी किसी के निकट-संबंधी भी संपत्ति हथियाने के लिये उसे विष देकर समाप्त कर देते हैं। इसके अतिरिक्त कोई-कोई इस असार संसार से इतने निराश हो जाते हैं कि विष और एकमात्र विष को ही मुक्तिदाता समझ कर अपने अमूल्य जीवन को समाप्त कर डालते हैं। अक्सर किसी अन्य खाद्य-पदार्थ के धोखे में भी कोई-कोई विष खा लेते हैं। फिर तो बस 'तू चल और मैं चल' मच जाती है।

यदि विष तीक्ष्ण हुआ, तो डाक्टर या वैद्य के पहुंचने तक प्राण-पखेरू उड़ जाते हैं और डाक्टर या वैद्य न आया तो फिर निश्चय ही 'राम नाम सत्य' समझिये। कोई कुछ खाने को बताता है और कोई कुछ। ठीक-ठीक बहुत कम लोग जानते हैं कि क्या किया जाय! यदि डाक्टर साहब या वैद्य जी ठीक अवसर पर पहुँच गये तब तो उनके पौबारह हैं, खूब तगड़ी रकम ऐंठते हैं।

इस लेख में मैं कुछ ऐसे उपाय बताऊंगा जिनसे जनसाधारण लाभ उठा सके और विष खा लेने वाले अभागों को अकाल-मृत्यु से कम धन व्यय करके बचाया जा सके। इन उपायों से आप डाक्टरों और वैद्यों की समय-कुसमय खुशामद कर के बुलाने की कठिनाई से मुक्त हो जायेंगे। यदि हो सके तो किसी कुशल चिकित्सक को तुरन्त बुला भेजिये। सिर्फ इन्हीं दवाओं पर निर्भर न कीजिए।

विष-चिकित्सा की मुख्य बातें

१. सर्वप्रथम यह पता लगाइये कि रोगी को जलाने वाला विष दिया गया है या न जलाने वाला। पहले प्रकार के विष से ओंठ और मुंह जलने लगते हैं और दूसरे प्रकार के विष से ऐसा कुछ नहीं होता। यदि विष जलाने वाला है, तो पता लगाइये कि वह तेज़ाब है या क्षार।

२. यदि रोगी की सांस रुक रही हो तो बनावटी सांस दीजिये।

३. यदि रोगी को नींद के झोंके आयें तो उसे कदापि सोने न दीजिये। इसके लिये चाहे ढोल बजाना पड़े या पीटना पड़े। भांग के मामले में सोने से कोई हानि नहीं होती।

४. रोगी को खुली हवा में रखिये। जहां रोगी रहे, वह स्थान ठंडा होना चाहिये।

५. रोगी ने यदि स्वयं कुछ खा लिया है, तो उससे पूछ लीजिये कि उसने किस स्थान पर से लेकर क्या खाया है? स्थान पता लगने पर उसे यह विश्वास दिलाने का प्रयत्न कीजिये कि वहां पर तो कोई हानिकारक वस्तु थी ही नहीं। अपने कथन की पुष्टि किसी अघातक वस्तु का नाम लेकर भी कर दीजिये। लेकिन ध्यान रहे कि आप के द्वारा बताई हुई वस्तु उस घातक वस्तु के अनुरूप ही हो। यह नहीं कि उसने पिया है लाल तरल और आप बता रहे हैं कि यहां तो खड़िया घुली रक्खी थी।

विष-चिकित्सा : जलाने वाले विष

(१) यदि कोई जलाने वाला बिष खाया हो और वह तेज़ाब हो, तो रोगी को तुरन्त ही कोई साधारण क्षार पीने को देना चाहिये। जैसे सोडा या मैगनीशिया या पानी में घोल या चूने का पानी खूब पिलाना चाहिये।

(२) यदि विष कोई क्षार हो तो कोई अम्लीय पदार्थ पीने को देना चाहिये। जैसे सिरका या नींबू।

(३) यदि यह पता न लग सके कि जलाने वाला विष अम्लीय है या क्षारीय तो खूब ठंडा पानी या दूध अधिकता से रोगी को देते रहिये। यदि अम्ल-विष और क्षार-बिष नाशक पदार्थ न मिल सके, तो भी ठंडा पानी या दूध उपयोग में लाया जा सकता है।

(४) विष-हरण पदार्थ देने के बाद रोगी की गर्दन के सामने सेंक और घी, मक्खन, जैतून का तेल और बार्ले वाटर, जौ की लपसी अथवा औषधीय पैराफ़ीन आदि शांतिदायक और बलवर्धक चीजें खाने-पीने को दीजिये। इन सभी से पीड़ा कम हो जाती है।

न जलाने वाले विष

(१) यदि किसी भी प्रकार का न जलाने वाला बिष खाया या पिया हो, तो सब से पहले रोगी को गन्ने का रस, गोबर, मिट्टी अथवा घी पिला या खिला दो। वैसे तो इन चीजों में से जो उस समय मिल जाय वही दे दीजिए अथवा यदि घी मिल सके तो सब से अच्छा है। रोगी जितना घी पी सके उतना पिलाना चाहिये। इन चीजों के पेट में पहुंचने से विष इनमें लिपट जाता है और उसकी घातक क्रियायें बंद हो जाती हैं।

(२) खाने या पीने के बाद विष आमाशय में जाता है. इसलिये उसे वहां से निकालने के लिये कोई कय (वमन) करवाने वाली औषधि देनी चाहिये। कय करवाने के लिये कुछ ऐसे उपाय भी हैं, जिसमें वमनकारक औषधि घी में ही मिला कर दी जा सकती है। ऐसे उपाय ये हैं—

(अ) घी में कड़वी तोरई का काढ़ा मिलाकर दीजिए। वमन होकर विष नष्ट हो जाएगा।

(ब) अधिक मात्रा में घी और दही मिला कर खिलाने से भी वमन हो जाता है।

(स) घी और सुहागा मिलाकर देने से भी वमन होकर विष के उपद्रव शांत हो जाते हैं।

वमन कराने के कुछ अन्य उपाय

(क) २० ग्रेन जिंक सल्फेट (माशा) थोड़े से पानी में घोलकर पिलाइये। पानी गुनगुना हो।

(ख) लगभग सवा पाव पानी में एक या दो चम्मच राई डालकर पिलाइए।

(ग) एक गिलास (लगभग सवा पाव) पानी में दो चम्मच नमक डालकर दीजिए।

(घ) कड़वा परवल घिस कर अथवा कड़वी तूम्बी के पत्ते या जड़ पानी में पीसकर पिला देने से भी कय हो जाती है। कच्चे करेले का रस भी वमनकारक होता है।

(ङ) आक की एक माशा छाल देने से भी वमन हो जाता है।

(ट) मुर्गे की बीट पानी में मिलाकर पिलाने से तुरन्त कय होकर विष बाहर आ जाता है।

जब तक कय न होने लगे पांच-पांच मिनट पर इनमें से कोई एक उपाय करते रहिए। यदि फिर भी कय न हो या होकर बिना विष निकले ही रुक जाए, तो गर्म पानी या नमक मिलाकर पानी पिला दीजिए। इससे कय कराने वाली औषधि का बल बढ़ जाता है। यदि फिर भी कय न हो तो हलक में उंगलियां डालकर कय कराइए।

अक्सर देखा जाता है कि किसी ने विष खा लिया है। अत: संदिग्ध व्यक्ति को करौंदे के पत्ते पानी में पीसकर पिलाइए। यदि विष खाया होगा, तो कय होगी अन्यथा नहीं।

(३) जब विष खाए अधिक देर हो जाती है, तो विष पक्वाशय में पहुंच जाता है। अत: ऐसी अवस्था में तेज जुलाब देकर विष निकालने का प्रयत्न करना चाहिए। जुलाब देने के लिए इनमें से कोई उपाय काम में लाइए—

(क) रेवन्द चीनी का शीरा (कमजोर अथवा बच्चों के लिए एक माशा और बड़ों के लिए डेढ़ माशा) चीनी या शहद में मिलाकर चटा दीजिए।

(ख) नींबू के रस में जायफल पीस कर चटा दीजिए।

(ग) आधा पाव गोमूत्र लीजिये। जितने दस्त लाने हों उतनी बार उसे महीन कपड़े से छानकर पिला दीजिये। जितनी बार कपड़े से छाना जायेगा, उतने ही दस्त होंगे।

(घ) पीपर, हल्दी, दारू हल्दी और मजीठ बराबर-बराबर लेकर गाय के मूत्र में पीस कर रोगी को दीजिये या थोड़ा घी पिलाकर ३ तोले कालादाना, ३ तोले सनाय, १/३ तोले काला नोन पीस छान कर ६ से ६ माशे तक गर्म जल से दीजिये।

विष के पक्वाशय में पहुँचने पर रोगी को साबुन के पानी का एनीमा भी देना चाहिये। इससे आंतों की सफाई हो जाती है।

(४) यदि विष आमाशय और पक्वाशय में रहने की स्थितियों से भी पार हो जाए और उसके घातक प्रभाव रोगी में होने लगें, तो उस विष विशेष के गुण के विरुद्ध प्रभाव वाली कोई औषधि देनी चाहिये। नीचे कुछ ऐसी औषधियां हैं जो हर प्रकार के न जलाने वाले विष के घातक प्रभावों को नष्ट करती हैं। इन औषधियों को वमन और रेचन (जुलाब) आदि के पश्चात् ही दें तो अच्छा है। पहले भी दें तो कोई हानि नहीं है, किन्तु वमन तो हर दशा में जब तक कि विष आमाशय में रहता है, आवश्यक है।

(अ) गाय के चालीस माशे घी में आठ माशे लाहौरी नमक मिला कर पिलाने से हर प्रकार का विष नष्ट हो जाता है अथवा घी के साथ १ तोला हरी चौलाई की जड़ पानी में पीसकर रोगी को दी जाए तो भी विष नष्ट हो जाता है। यदि चौलाई की जड़ सूखी हुई हो तो ६ माशे ही पर्याप्त है। इसके अतिरिक्त यदि चौलाई की जड़ आदि न मिल सके तो गाय के गर्म-गर्म घी में दूध मिलाकर बार बार देने से भी काम चल जाता है।

(ब) काली मिर्च, नीम के पत्ते, सेंधा नमक और घी मिलाकर रोगी को पिलाइए, विष अवश्य उतरेगा।

(स) कड़वी घीया तोरई की बेल की जड़ अथवा उसके पत्तों को गाढ़ा बना कर पिला दीजिए। यह बहुत ही अक्सीर दवा है।

(ड) घी के साथ सुहागा पीसकर पिला दीजिए। यह अति लाभप्रद है।

(ई) एक माशा कमलगट्टे की गिरी को - रत्ती शुद्ध तूतिये के साथ पानी में पीसकर रोगी को पिला दीजिए।

(फ) दरियाई नारियल पानी में पीसकर पिलाइये।

कुछ विषों के विशेष उपचार : संखिया

संखिया खाए हुए रोगी को कई बातों से विशेषकर बचाना चाहिए। उसके सिर पर शीतल जल न पड़े और न ही उसे शीतल जल पीने अथवा नहाने को दिया

जाये। पीने के लिए गर्म जल ही देना चाहिये। इसके अतिरिक्त चावल और तरबूज तो ऐसे व्यक्ति के लिए साक्षात् मृत्यु है।

वमन और जुलाब इत्यादि के पश्चात् नीचे लिखे उपायों में से कोई उपाय काम में लाइये।

(१) २ या ३ तोले पपड़िया कत्था पानी में घोल कर पिला दीजिए।

(२) १ माशा कपूर ३-४ तोले गुलाब जल में हल करके पिला दीजिए।

(३) कड़वे नीम के पत्तों का रस निकाल कर पिलाइये। यह अति लाभप्रद है।

(४) दूध में बराबर का चूने का नितारा हुआ पानी पिलाइये।

(५) बिनौलों की गिरी गुनगुने दूध के साथ खिलाइये।

यदि विष नष्ट हो जाने पर भी जलन हो, तो चीनी मिलाकर पेठे का रस या शिकञ्जबीन पिलाइये। जलन शांत हो जाएगी।

अफीम

अफ़ीम के रोगी के सिर पर ठंडे पानी की धार छोड़िये। यदि वह बेहोश है तो उसे तेज़ अमोनिया सुंघा कर होश मे लाइये। यदि उसे बहुत घबराहट हो तो गर्म पानी की बोतलों से पिंडलियां तथा पेट के नीचे के अंग सेंकिये। वमन-विरेचन के पश्चात् भी यदि विष शांत न हो या उसका कुछ अंश रह जाए तो उसे नष्ट करने के लिए इनमें से कोई उपाय करना चाहिए।

(१) पानी में ४ या ५ माशे हींग घोलकर या रीठे का पानी रोगी को पिला दीजिए।

(२) चौलाई के पत्ते पीस कर उनका पाव भर रस रोगी को पिलाइये।

(३) आधे-आधे घंटे बाद २/३ माशा लाल दवा पानी में घोल-घोल कर दीजिए।

(४) कड़वे नीम या मकोय के पत्तों का रस पिलाइये।

(५) यदि अफ़ीम खाये हुए देर हो गई हो तो आध पाव आंवले के पत्ते आध सेर जल में घोंट कर तीन चार बार पिलाने से अफ़ीम का विष अवश्य नष्ट होता है।

कुचला

कुचला खा लेने वाले रोगी को डाक्टर लोग क्लोरोफार्म सुंघाकर अथवा क्लोरलहाइड्रेट पिला कर नशे में रखते हैं। क्लोरलहाइड्रेट कुचले का विष नष्ट कर देता है। इनके अतिरिक्त निम्नलिखित में से कोई उपचार करना चाहिए।

(१) क़य-दस्त आदि के बाद रोगी को कपूर का पानी पिला दीजिये।

(२) दूध में घी और मिश्री मिलाकर अधिक मात्रा में पिला दीजिए।

(३) घी में कपूर मिलाकर पिलाइये। घी तो कुचले के विष पर अमृत-तुल्य है।

धतूरा

धतूरे के विष में सिर पर शीतल जल की धार छोड़ने मे लाभ होता है। बेहोशी हो तो अमोनिया (चूना, नौसादर) सुंघाना ओर घबराहट हो तो पेट के नीचे के अंगों को गर्म पानी की बोतलों से सेकना चाहिए। इसके अतिरिक्त विष की घातक क्रियाएं रोकने के लिये इनमें से कोई उपाय करना चाहिए।

(१) बिनौले और कपास के फूलों का काढ़ा पिलाइये।

(२) बैंगन के टुकड़ पानी में खूब पीस कर पिलाइये। यदि बैंगन न मिल सकें, तो उसकी पत्तियों और जड़ों को ही पीसकर पिलाया जा सकता है। बैंगन के बीजों का रस भी लाभप्रद है।

(३) गाय का बहुत सा घी दूध और मिश्री मिला कर पिला दीजिए।

(४) कुछ लोगों का विचार है कि यदि धतूरे के बीजों से विष चढ़ा हो, तो कपास के बीज पीस कर पिलाइये और यदि डाली से चढ़ा हो, तो कपास की भी डाली पीस कर पिला दीजिये। अर्थात् धतूरे के पेड़ के जिस भाग के खाने-पीने से विष चढ़ा हो, तो कपास के पेड़ का वही भाग पीस कर खाने से वह नष्ट होता है।

(५) शखाहूली की जड़ यदि पानी में पीस कर पिला दी जाए तो धतूरे का विष निस्संदेह नष्ट हो जाता है।

भाँग

अधिकतर भाँग तो केवल नशा करने के प्रयोग में आती है। किंतु जब यह अधिक खा ली जाती है, तो इससे मृत्यु हो जाती है। यदि किसी ने बहुत अधिक भाँग खा ली हो तो नीचे लिखे उपाय काम में लाइए। (यदि खाये हुए देर न हुई हो तो वमन ही काफी है।)

(१) अरहर की दाल पानी में धो लीजिए, उसी धोवन का पानी पिला दीजिए। यह एक बहुत ही सरल और उत्तम उपाय है। नशा तो इससे छूमंतर हो जाता है। इसे पिलाने के पांच छः मिनट बाद ही उल्टी होती है और सारी भांग बाहर आ गिरती है।

(२) सोंठ पीस लीजिए और गाय के दही में खिला दीजिये।

(३) यदि गला सूख रहा हो तो दूध में मिश्री, और घी डालकर गुनगुना पिला दीजिए। घी की मात्रा काफी होनी चाहिए। यदि दूध के स्थान पर बिनौलों की खीर में घी इत्यादि मिलाकर दिया जाये तो बहुत फायदा होगा। इसके साथ-साथ गले पर घी चुपड़ने से खुश्की दूर होती है।

यदि भांग का विष हल्का हो तो वह इन उपायों के अतिरिक्त सो जाने से ही उतर जाता है। तेज विष की दशा में भी वमन इत्यादि कराने के पश्चात् भांग के विपरीत गुण वाली तेज दवा देकर रोगी को सुला देने से कोई हानि नहीं होती। भांग का विष अक्सर सो जाने से ही उतर जाता है जब कि अन्य सब विषों में सोने देने की भी मनाही है।

अधिकतर इन्हीं विषों को खाकर लोग मरते हैं। यदि बिना घबराये हुए उनका विधिवत् उपचार किया जाये तो मृत्यु की संभावना बहुत कम रहती है। यदि कोई उपचार याद न रहे तो कम से कम उल्टी कराना और उससे भी पहले घी पिलाना तो सब को याद रहेगा। यदि विष खाने के बाद रोगी को बहुत अधिक घी पिला दिया हो, तो वास्तव में उसकी मृत्यु की संभावना रहती ही नहीं है। घी तो विष में अमृत समझना चाहिये। यदि घी के साथ सुहागा भी मिला दिया जाये, तो फिर बस डर की कोई बात ही नहीं रह जाती। बिना किसी भय के किसी भी विष की दशा में आंख मीचकर घी पिलाइये, जितना अधिक से अधिक पी सके।

वैसे तो कच्चे बेल का गूदा तथा अन्य वस्तुएं भी हैं जो विष के तुरन्त बाद खिला देने से विष से कोई हानि नहीं होने देतीं। किंतु घी तो ऐसी वस्तु है जो लगभग हर एक के घर में होती है। लेकिन घी से मेरा अभिप्राय डालडा का नहीं, असली घी से है, और यदि गाय का हो तो क्या कहने हैं।

इसके पश्चात् मैं एक बार फिर कहूंगा कि अन्य औषधियों के फेर में पड़ कर कय कराने और यदि देर हो गई हो तो जुलाब भी देना कभी न भूलिए। यदि अधिक विलम्ब नहीं हुआ है, तो वमन-विरेचन ही ७० प्रतिशत, और कभी-कभी शत-प्रतिशत, विष नष्ट कर देता है।

आर्य समाज स्थापना शताब्दी स्वागत समिति के सदस्य बनें

आर्य जगत् को सूचित किया जाता है कि बम्बई में अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर हो रहे आर्य समाज स्थापना शताब्दी समारोह के लिये एक 'स्वागत समिति' का निर्माण किया जा रहा है, जिसका सदस्यता शुल्क रू २५१/— है। प्रत्येक भाई बहिन से प्रार्थना है कि इस स्वागत समिति के अधिक से अधिक संख्या में सदस्य बनकर शताब्दी की सफलता में अपना योगदान देवें।

स्वागत समिति के सदस्यों को समारोह के अवसर पर जहां विशेष सुविधायें प्राप्त होंगी वहां उनके समारोह में बैठने की व्यवस्था भी मंच के समीप की जायेगी स्वागत सदस्यों के लिये एक विशेष बैज बनाया गया है, जो समारोह के अवसर कार्यालय से उन्हें प्राप्त हो जायगा।

दलीप वेदालंकार
आर्य समाज स्थापना शताब्दी समारोह समिति
यूनाइटिड इंडिया बिल्डिंग, दूसरी मंजिल,
सर फीरोजशाह मेहता रोड़ बम्बई — १

ईर्ष्या का भूत

—चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

भीष्म पितामह ने भौतिक काया त्याग दी थी। महाभारत का युद्ध समाप्त हो चुका था। युधिष्ठिर ने पितामह की अन्तिम क्रिया गंगातट पर की। असह्य विषादानल उनके चित्त को झुलसा रहा था। भाई-भाई के कट मरने वाला कुरुक्षेत्र कितना घृणित, कितना वीभत्स था। धर्मपुत्र पश्चात्ताप से जल रहे थे। तब भगवान् व्यास ने यह चर्चा छेड़ी।

"असूया (डाहकी भावना) ऐसा रोग है, जिससे बचना मेधावी मनीषियों के लिए भी सभव नहीं है। असूया से मान-मर्दन हो जाता है, यह जानकर भी बुद्धिमान् उसका शिकार हो जाता है और उसका फल भोगता है। तुम जानते हो, देवताओं के आचार्य बृहस्पति कितने महान् तपस्वी, ज्ञानी और साधक हैं। वे भी एक बार असूयाग्रस्त होकर अपमानित हुए। ईर्ष्या से बच पाना दुष्कर होने पर भी उससे बचकर रहने का सतत प्रयास करते रहने में ही मानव का कल्याण है।"

इस भूमिका के साथ महर्षि व्यास ने यह वृत्तान्त सुनाया —

आचार्य बृहस्पति के एक अनुज थे। नाम था संवर्त। सवर्त भी अपने बड़े भाई के समान ही वेदों, शास्त्रों और नाना विद्याओं के पारंगत थे। तपस्वी औ' साधक भी थे। स्वभाव के इतने भले कि उनके प्रशंसकों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती गयी। भाई की यह प्रसिद्धि देखकर बृहस्पति को ईर्ष्या हुई।

ये वर्त को सताने लगे। संवर्त सब कुछ सहते रहे। किन्तु जब सहिष्णुता की सीमा आ गयी, और प्राणों के लिए संकट उपस्थित हो गया, तो वे वहाँ से भाग निकले और पागल का वेश बनाकर घूमने लगे।

तब उत्तरापथ में इक्ष्वाकु वंश का नरेश मरुत् सिंहासनरूढ था। उसने बहुत बड़ा यज्ञ करने का निश्चय किया। यह यज्ञ संपन्न कराने हेतु उसने बृहस्पति से ऋत्विज बनने की प्रार्थना की। बृहस्पति ने यह सोचकर उसका अनुरोध ठुकरा दिया कि यज्ञ के प्रभाव से वह देव कोटि में आ जाएगा, जो देव सहन नहीं करेंगे।

संयोगवश, संवर्त उस समय मरुत् के ही राज्य में भ्रमण कर रहे थे। राजा ने उन के चरण पकड़ लिये संवर्न ने पहले तो उमका अनुरोध न माना, परन्तु जब राजा अपने आग्रह पर डट गया तो महर्षि को झुकना पड़ा। उन्हें पता था कि इस उपकार से इक्ष्वाकु कुल का तथा भूखंड का कल्याण होगा; किन्तु साथ ही बड़े भाई बृहस्पति और भी अधिक कुपित होंगे। यज्ञ की तैयारियां होने लगीं। बृहस्पति ने समाचार सुना, तो ईर्ष्या से संतप्त नि.श्वास छोड़ते हुए इन्द्र से बोले—"मेरा भाई संवर्त भूलोक में महान् यज्ञ करने वाला है। उसका वैभव और प्रभाव बढ़ेगा। यह बात मेरे लिए असह्य है।"

इन्द्र को आश्चर्य हुआ कि यह पामरोचित दुर्भाव ज्ञानधनी आचार्यवर में कैसे आ गया। उसने समझाया 'विप्रवर ! आप समस्त विभूतियों के स्वामी हैं। आप देवों के परमाचार्य और पूज्य पुरोहित हैं। छोटे भाई से आपका अनिष्ट कैसे हो सकेगा ? क्यों व्यर्थ असूयाग्रस्त होकर अकुला रहे हो।"

बृहस्पति को हंसी आने लगी कि यह महत्त्वाकांक्षी, असूयक देवराज मुझे उपदेश दे रहे हैं। किन्तु इस भाव को छिपाकर उन्होंने कहा—"देवराज ! तुम्हारा प्रतिस्पर्धी मरुत् बलिष्ठ होता जा रहा है—तुम्हारा कर्त्तव्य है कि संवर्त के यज्ञ को पूर्ण न होने दो।

इन्द्र मान गया। अग्निदेव को बुलाकर उसे मरुत् का यज्ञ विफल करने का आदेश दे दिया। वह मरुत् की राजधानी में पहुंचा। यज्ञवेदी के समक्ष उसे देखकर मरुत् परेशान हो उठा। फिर भी उसने उसका विधिवत् स्वागत सत्कार किया।

अग्निदेव ने अपने आगमन का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए कहा—"राजन्, तुम महर्षि संवर्त को हटा दो। मैं बृहस्पति को तुम्हारे यज्ञ की पूर्ति के लिए ऋत्विज बनाने को मना लूंगा।"

महर्षि संवर्त ने यह बात सुनी तो क्रुद्ध हो उठे। ब्रह्मचर्य के प्रभाव से उनमें प्रचण्ड तपःशक्ति संचित थी। उन्होंने अग्निदेव को तुरन्त चले जाने की चेतावनी दी। वह चुपचाप वहां से खिसक गए और इन्द्र को आकर सारा वृत्तान्त बताया। इन्द्र ने जब विश्वास न किया तो अग्नि ने कहा कि देवराज ! ब्रह्म की शक्ति और ब्रह्मचर्य का बल अपरिमेय है। आप तो अनभिज्ञ के तुल्य बोल रहे हैं।

इन्द्र ने अपना दूत राजा मरुत् के पास भेजकर कहलाया कि संवर्त को पुरोहित पद से हटा दें। अन्यथा इन्द्र का कोपभाजन बनकर राज्य से वंचित होना पड़ेगा। किन्तु मरुत् अडिग रहे और बोले "मैं मित्रद्रोह नहीं करूंगा। मैं किसी भी स्थिति में ब्रह्मचारी संवर्त को हटा नहीं सकूंगा।"

दूत ने उन्हें इन्द्र के वज्रायुध का भय दिखाया। तभी आकाश में बिजली सी कड़की। भीषण हलचल मची। राजा मरुत् समझ गए कि इन्द्र आक्रमण करने को आ रहे हैं। भयग्रस्त होकर उन्होंने ब्रह्मचारी संवर्त के चरण पकड़ लिए।

संवर्त ने मरुत् को अभयदान दिया और अपने तपोबल का प्रयोग किया। इन्द्र भी हतप्रभ हो उठे और अपने प्राणों पर संकट जानकर संवर्त के समक्ष आकर क्षमा मांगी।

उदारमन संवंत ने इन्द्र को सामने देखा। अर्घ्य देकर उनका स्वागत किया तथा विधिवत् यज्ञ का हविर्भाग देकर गौरवान्वित किया। इन्द्र यज्ञ की सपूर्ति करा मंगलवचन उच्चार कर लौट गए।

बृहस्पति यह सब देख रहे थे। उन्हें ब्रह्मचर्य की महिमा और असूया की क्षुद्रता का बोध हो गया। मन ही मन उन्होंने अनुज संवर्त का गुणगान भी किया।

असूया एक बुरा रोग है। उससे बचना महामेधावी बृहस्पति तक के लिए दुष्कर रहा तो साधारण जन की तो बात ही क्या है ?

●

तैरना सीखेंगे आप ?

—प्रफुल्ल घोष

गर्मी के दिनों में कलकल करती जलधारा भला किसे तैरने का निमन्त्रण नहीं देती? तबीयत तो हर शख्स की होती है, पर जो बेचारे तैरना नहीं जानते वे नदी किनारे जाकर तैरते हुए लोगों को ईर्ष्या की नजर से देखा करते हैं।

तैराकी दरअसल एक उपयोगी व्यायाम है। गर्मी के दिनों में तैरने से शरीर तरो-ताजा हो उठता है, जाडे में तैरने से स्वास्थ्य सुधरता है, और अपनी और दूसरों की जान बचाने का मौका तो कभी भी मिल सकता है।

गर्मी के दिनों में बहुत से लोग तैरते-तैरते डूब जाते हैं। इसकी वजह यह है कि गर्मियों में तैरने में बड़ा आनन्द आता है। लोग अक्सर तैरते हुए किनारे से काफी दूर निकल जाते हैं और लौटने की शक्ति उनमें नहीं रहती। इसलिए आज हम कुछ ऐसी ही बातों पर विचार करेंगे, जिनका ध्यान रखने स तैरने वाले इनमें से काफी दुर्घटनाओं से बच सकेंगे।

पानी में रहने पर डूबने से बचने के लिए पहली बात तो यह जरूरी है कि आप विश्वास रखिये कि पानी स्वयं आपके शरीर को अपनी सतह पर रखेगा। आप यकीन कीजिए कि तैरना न जानने वाला व्यक्ति भी अगर यह विश्वास रखे कि उसका शरीर पानी पर तैरता रहेगा, तो वह बहुत जल्दी तैरना सीख सकता है।

पर यह बात कहना सरल है, करना कठिन। इसलिए हम कुछ ऐसे सुझाव भी दे रहे हैं जिनकी मदद से तैरने वालों का विश्वास दृढ़ हो जाए।

पहली बात तो यह है कि जिस तरह आप जमीन पर सांस लेते हैं, उसी तरह पानी में भी लेते रहिए—नियमित रूप से और लगातार। कुछ और गहरी सांसें लीजिए तो और भी बेहतर हो। जब आपके फेफड़ों में सांस नहीं रहेगी, तभी आप डूबेंगे। साधारण लोग जब तैरना सीखने की कोशिश करते हैं, तब सभी पहली गलती तो यही करते हैं कि पानी में पहुंचते ही सांस लेना भूल जाते हैं। फिर उन्हें ताज्जुब होता है कि उनके शरीर इतने भारी क्यों हो जाते हैं, अंगों में इस कदर थकावट क्यों मालूम पड़ती है। सांस की क्रिया गड़बड़ होते ही तमाम कठिनाइयां सामने आने लगती हैं।

तैरते वक्त इस बात का बराबर ध्यान रखिए कि आप भीतर-बाहर सांस ले रहे हैं या नहीं।

दूसरी बात यह ध्यान में रखिए कि अगर आपको तैरना सीखना है तो अपने चेहरे पर पानी का स्पर्श सहन करना सीखिए। जितने पानी में आप मुंह धोते हैं, उसके अलावा भी देर से पानी का स्पर्श अपने मुंह नाक, कान और आंखों पर सहन करने की आदत डालिए।

पानी में पहुंचते ही मुंह या नाक से ढेर सा पानी पेट में पहुंचने का अनुभव बड़ा भयानक होता है। पर आत्म-विश्वास से काम लेने वाला व्यक्ति थोड़ी ही देर में अनुभव से जान जाता है कि मुह को बन्द रखने और नाक से सांस लेने पर पानी पेट में नहीं घुसता ।

छुट्टियों में तैरने या तैरना सीखने से पहले इन बातों की अच्छी तरह शिक्षा ले लेनी चाहिये।

इन बातों का अभ्यास कम जल में नहाते वक्त कर लेना चाहिये। आप पानी में सिर डुबा लीजिये. जहां तक बन सके आंखें खुली रखिये। फिर पानी में सिर को डुबाये हुए ही मुंह से सांस निकालिये। सिर बाहर निकालिये, सांस लीजिए उसके बाद फिर पानी में सिर डुबा कर सांस निकालिये। इसी तरह बार-बार कीजिये, तब तक, जब तक कि आपकी आदत न पड़ जाय। कम पानी में कमर झुका कर यही अभ्यास किया जा सकता है।

पानी में रहने के विषय में यह जानकारी हासिल करने के बाद अगर आप पानी की सतह पर उतराना सीखें, तो बेहतर होगा !

जो लोग तैरना नहीं जानते उनको दो महत्त्वपूर्ण बातें और जाननी चाहियें। पहली तो यह कि पानी की सतह पर उतराते कैसे रहें और दूसरी यह कि पानी में फिर से खड़े कैसे हों।

उतराते रहना तो आसान है,परन्तु जरूरत इस बात की है कि आप पानी से लड़ाई-झगड़ा न मचायें। पानी की सतह पर आप पीठ के बल उतराते रह सकते हैं, और सच पूछिये तो खड़े होकर भी तैर सकते हैं। हां, इस तीसरे तरह की तैराकी में जमीन पर पैदल चलने के समान एक विशेष ढंग से हाथ-पैर चलाने पड़ते हैं, जो शुरू-शरू में सीखने वालों के लिए मुश्किल होता है।

कम गहरे पानी में खड़े होकर शरीर का कमर के ऊपर का भाग आगे की तरफ झुकाइये। अपने धड़ के ऊपरी भाग को धीरे-धीरे पानी की सतह पर गिराइये। ऐसा करते वक्त सिर को उठाये रहिये और अपनी बाहें सामने की तरफ फैलाये रखिये।

अगर सांस रोककर, शरीर के स्नायु-मण्डल को कड़ा कर या घबरा कर आपने अपने शरीर को असाधारण रूप से भारी नहीं बना लिया है,तो आप देखेगें कि ऊपर बताई हुई क्रिया करने से आपका शरीर खुद-बखुद पानी की सतह पर आ जायेगा।

पैरों को जरा चलाने और हाथ हिलाने की क्रिया से आपको तैरना आ जायेगा। यही क्रिया पीठ के बल अर्थात् चित तैरने के लिये भी की जानी चाहिये। इतना करने से आप मशहूर तैराक तो नहीं होंगे, पर हां, तैरना आपको जरूर आ जायेगा।

पर अब दो तरह की तैराकी सीखते ही नौसिखिया व्यक्ति जोश में आकर तीसरी तरह की कठिन तैराकी का भी अभ्यास करना चाहेगा ।

पर यह क्या ? वह शायद जबर्दस्त संघर्ष करेगा, हाथ-पैर फटकारेगा—पानी उछल कर उसके मुंह-नाक में जाएगा ।

पर यह तो बिलकुल गलत तरीका है। तीसरी तरह की तैराकी के लिए सिर जरा और पीछे को उठा लीजिये (अगर आप पेट के बल तैर रहे हैं तो),और होगा यह कि आपके पैर भी अपने आप नीचे को चले आयेंगे। (अगर आप चित यानी पीठ के बल तैर रहे हों तो सिर सामने की तरफ उठा लीजिए और आपके पैर नीचे को हो जाएंगे।) इस तरह से आप पानी में भी सीधे खड़े हो सकेंगे ।

आखिरी, लेकिन सबसे जरूरी बात यह है कि आप पानी से डरिये मत। जिस तरह से घोड़ा डरपोक सवार को पहचान लेता है. ठीक उसी तरह पानी भी डरने वाले तैराक को पहचान लेता है। आप अगर डर गए, तो पानी के वश में हो जाएंगे और आपकी एक न चलेगी।

इसलिए शरीर को शिथिल रखिए—मन को शान्त और सांस बराबर लेते रहिए। आप निश्चित रूप से पानी पर उतराते रहेंगे ।

अब आपको पानी में सफलतापूर्वक तैरते रहने की चार आवश्यक बातें मालूम हो गई। पहले, आत्मविशवास रखिये कि आप डूब नहीं सकते। दूसरे, कम से कम कोशिश से पानी की सतह पर उतरते रहिये। तीसरे, नियमित रूप से सांस लेते रहिये मुंह में अगर थोडा बहुत पानी चला भी जाये तो उसकी परवाह न कीजिये। चौथे, शरीर को सही स्थिति में रखिये।

अगर आप इन सब बातों का पालन करेंगे, तो आप पानी में हमेशा सुरक्षित रहेंगे। आप यकीन कीजिए कि तैरना आप को ज्यादा भले ही न आता हो, पर आप आश्चर्यजनक रूप से बहुत अधिक देर तक पानी पर रह सकेंगे। आप होड़ लगा कर भी किसी अच्छे तैराक से ज्यादा देर तक पानी की सतह पर उतराते रह सकेंगे।

तैराकी का पहला सबक आप सीख चुके हैं। अब आप चाहें तो अगली गर्मियों में पूरी तरह तैरना भी सीख सकते हैं। मगर एक बात याद रखियेगा, खाना खाने के बाद कभी तैरने की कोशिश न कीजियेगा।

और हां, जब तक आपको अच्छी तरह यकीन न हो जाये कि तैरना आपको आ गया है, कभी गहरे पानी में ज्यादा दूर तक बढ़ने की कोशिश न कीजिएगा। मुमकिन है, आगे निकल चुकने पर आप किसी कठिनाई में फंस जायें और वहां कोई आपकी मदद भी न कर सके। पानी पर बहुत ज्यादा विश्वास करना भी खतरे से खाली नहीं है।

'जन-ज्ञान' मासिक के नए सदस्य बनाकर सत्यार्थ प्रकाशन उपहार में प्राप्त करें।

नारी कल्याण में आर्य समाज का योगदान

—कमलावती आर्य, अमृतसर

नारी पुरुष की अर्धांगिनी व समाज का महत्त्वपूर्ण अंग है। समाज निर्माण का उत्तरदायित्व उसके कंधों पर है। योग्य माताएं ही योग्य सन्तान की निर्माता हो सकती हैं। जब नारी जाति जागृत, विदुषी और कर्त्तव्यनिष्ठ होगी, तभी नए भारत का स्वर्णिम स्वप्न साकार हो सकेगा।

अविद्यान्धकार और दासता के कारण भारतीय नारी का जीवन सदियों निष्फल रहा। वैदिक काल में जबकि भारत स्वतन्त्र था, नारी को समाज का आभूषण और सौभाग्य समझा जाता था। तब नारी सब विद्याओं में निपुण और योग्य होती थी। गार्गी, इन्दुमती, शकुन्तला, सीता, साबित्री, लीला आदि उच्च शिक्षित देवियां भारतीय इतिहास की शोभा थीं, जो राजकाज चलाने में मन्त्रियों की तरह सहयोगी होती थीं, परन्तु मध्यकाल में वैदिक व्यवस्था के टूटने के कारण स्वार्थी सत्ताधारी सामन्त पण्डे पुजारियों ने पैसे के बल से मनमानी व्यवस्था लेकर नारियों की स्वतन्त्रता का गला घोंट कर अपनी अश्लीलता के लिये देवी को दासी बनाया, उसे मूर्ख व पीड़न ताड़न की अधिकारी कह कर उसके पढ़ने लिखने के सब अधिकार छीने। उसके जन्म और अस्तित्व तक को अभिशाप बना दिया। नारी को दास बनाकर पुरुष का जीवन रथ एक ही पहिये से कैसे चल सकता था, अत: नारी के दासी बनने से देश गुलाम और पराधीन हो गया।

१९७५ का यह वर्ष विश्व भर में अन्तरराष्ट्रीय महिला कल्याण वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है, और उनके अधिकारों में भेद भाव को समाप्त करके पुरुषों के समान अधिकार दिलाने में कानूनों और व्यवस्था में संशोधन की मांग की जा रही है, ताकि नारी, जीवन के हर विभाग में आगे बढ़ने को प्रोत्साहित हो सके। नारी कल्याण के जिस रहस्य को संसार ने आज समझा है, आर्यसमाज ने एक सदी पहले उस दिशा में महत्त्वपूर्ण क्रान्तिकारी ठोस कदम उठा कर नारी मन में चेतना, जागृति और साहस भरने का सफल प्रयास किया। आर्यसमाज के निर्माता महर्षि दयानन्द ने नारी जाति को राष्ट्र उत्थान का आधार बताया, और दासी को देवी, अर्द्धांगिनी व मातृ शक्ति की उपमा से अलंकृत किया, उसकी शिक्षा, दीक्षा, सुधार, उद्धार और अधिकार को सामान्य और अनिवार्य बताया, और रूढ़िवादी विरोधियों के विरोध का सीना तान कर सामना किया। नारी पर्दे और घर की देहरी से बाहर नहीं निकल सकती थी। आर्यसमाज ने देश भर में समाज मन्दिरों के साथ कन्या पाठशालायें भी संचालित कीं, और शिक्षा दीक्षा अपने प्रचार प्रकार, साहस बल से नारी को घर के पर्दे और ड्योढी से निकाला और पाठशालाओं, समाजों एवं सभाओं के समारोहों-उत्सवों के आयोजन से नारी की सार्वजनिक क्षेत्र में आगे बढ़ने की हिम्मत बढ़ी, घर की चारदीवारी की कैद और पर्दे का अभिशाप विनष्ट हुआ।

आर्य समाज ने नारी में अपने बारे में सोचने की प्रेरणा से, उसे उसका भाग्य विधाता बनाया। उसमें आत्मविश्वास और स्वाभिमान भर उसे जीवन जागरण का क्रान्तिकारी मोड़ दे, समृद्ध और सशक्त भारत की महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, महर्षि

किसी भी कन्या को देख मस्तक झुका मातृशक्ति कहकर उसका अभिवादन किया करते थे 'स्त्रीशूद्रौ नाधीयाताम्' की जगह उन्होंने 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः' का जय घोष किया, और वेदों के प्रमाणों से कहा कि वेदों का प्रकाश ईश्वर ने सबके लिये किया है, जीवन उत्थान के लिए लड़के लड़की दोनों का विद्वान् और विदुषी होना आवश्यक है। नारी तेजस्वी और आकर्षणमय व्यक्तित्व विकसित कर ही आदर्श कुशल शक्तिशाली समाज का निर्माण कर सकती है। नारी को पूर्णत दक्ष और जागरूक बनाने के लिए महर्षि ने अपनी शिष्या 'रमाबाई' को अपना जीवन नारी कल्याण को समर्पित करने की प्रेरणा की, जिसने आजीवन पथ प्रदीप बन नारी जीवन को गौरवान्वित किया।

जो सामाजिक कुरीतियां स्त्रियों के पतन का कारण थीं आर्य समाज ने उन्हें समूल उखाड़ फैंकने के लिए खुला संघर्ष किया। सती प्रथा को तोड़ा, विधवाओं के मन मस्तिष्क में नई जीवन चेतना के बीज अंकुरित किए। वह बाल्यावस्था से तिल तिल जल वैधव्य तथा तिरस्कृत जीवन बिताने पर बाध्य होतीं थीं। उसमें पुनर्विवाह की नव व्यवस्था संचालित कर आर्यसमाज ने समाज को नई दिशा दिखाई, न केवल नई दिशा ही दी बल्कि क्रियात्मक समर्थन भी दिया। बाल विवाह की कुप्रथा को खत्म कर तरुण विवाह की प्रथा चलाई। आर्य नेता हरविलास शारदा ने बाल्यावस्था विवाह के विरुद्ध कानून पारित कराया। वृद्ध विवाह और बहु विवाह दोनों के खिलाफ जनमत खड़ा किया, और आदर्श विवाह के लिए माता पिता की अनुमति के साथ वर और कन्या की सहमति को भी आर्य समाज ने अनिवार्य घोषित किया। दहेज की लालसा रूपी अग्नि में दग्ध समाज के सामने आर्यसमाज के नेता स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज और भाई परमानन्द ने अपने सुयोग्य सुशिक्षित बच्चें-बच्चियों के विवाह बिना दहेज के करके नारी सम्मान के उज्ज्वल आदर्श खड़े किए।

आज का भारत आर्यसमाज के बलिदान व उत्सर्ग की कर्म भूमि पर खड़ा है। आर्य समाज ने नए भारत का निर्माण किया है। महर्षि का सन्देश भारत के लिए अरुणोदय था। उनके मन में मस्तिक में ऐसे विवेकशील प्रगतिमय सशक्त समृद्ध भारत का नक्शा था जो अपने गौरवशाली अतीत के स्वाभिमान में अपना स्वर्णिम भविष्य निर्माण कर सके। नर नारी दोनों के विकास और उभार से ही इस नक्शे में रंग भरे जा सकते थे। इस लिए आर्य समाज ने नारी को अबला से अबला और पैर की जूती से समाज का गर्वमय अंग बनाया। यह आर्यसमाज के जागरण-पुण्य-प्रयासों का ही मधुर फल है कि आज सवैधानिक रूप में नारी को स्वतन्त्रता और समानता के मूल अधिकार प्राप्त हुए हैं, और वह अपनी योग्यता और साहस के बल पर जीवन के समस्त क्षेत्रों में आगे बढ़ रही है। वह अपने जीवन जागरण के सन्देश वाहक प्रेरणापुंज, जीवन दाता और त्राता आर्यसमाज की चिर ऋणी है। आर्य समाज उसका मार्गदर्शक और संरक्षक है। अभी नारी जागरण का कार्य अधूरा है, अज्ञान और वहमो के गढ़ इन की अज्ञानता के कारण ही खड़े हैं। नारी समाज को अपनी समस्त नारी जाति के कल्याण के लिये आर्य समाज के झंडे तले इकट्ठे हो कर कड़ा संघर्ष करना है। आर्य समाज ने नारी जागरण और कल्याण के लिये जो महान् क्रान्तिकारी और कण्टकाकीर्ण कर्तव्य निभाया है उसी के फल स्वरूप आज का यह स्वस्थ विकासशील नया भारत खड़ा हो रहा है। ❀

'साकेत' पर आर्य समाज का प्रभाव

—डा० लक्ष्मी नारायण दुबे

स्वर्गीय मैथिलीशरण गुप्त की सर्वश्रेष्ठ और सर्वाधिक प्रख्यात कृति 'साकेत' आर्य-समाज की विचारधारा की संवाहिका है। यह गुप्तजी की जीवन-रचना तथा जीवन-कार्य है। यह उनका प्रमुख तथा प्रतिनिधि ग्रन्थ है। 'साकेत' रचना-काल में ही आर्य-समाज के संस्थापक दयानन्द सरस्वती की प्रथम जन्मशती (सन् १९२५) मनायी गयी थी। 'साकेत' सन् १९१४ तथा सन् १९३१ के मध्य सत्रह वर्षों में लिखा गया। 'साकेत' द्विवेदी युग (सन् १९००-२०) की प्रमुख चिंतन-धारा की प्रवाहिका कृति हैं। द्विवेदी-युग को मूलतः आर्य-समाज का साहित्यिक संस्करण कहा जा सकता है। 'साकेत' के रचना-काल के समय हिन्दी प्रदेशों में आर्य समाज का व्यापक प्रचार-प्रसार था, अतएव, 'साकेत' उससे दूर नहीं रह सकता था। साकेतकार राष्ट्र की सम-सामयिक समस्याओं तथा चिंतन वृत्तियों के प्रति जागरूक था।'साकेत' में युग-चेतना को सफल अभिव्यक्ति मिली है।

भारत के अन्य अनेक महापुरूषों के समान महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रति गुप्तजी के हृदय में निष्ठा एवं श्रद्धा थी। उनके 'साकेत' का प्रकाशन सन् १९३२ में हुआ था।

आर्य-समाज ने जीवन-जगत् की अनेक समस्याओं के समान शारीरिक उन्नति तथा स्वस्थता पर विशेष आग्रह किया था। इसलिए गुप्तजी के अयोध्यावासी स्वस्थ तथा अध्यवसायी हैं—

डा० रामधारीसिंह 'दिनकर' ने 'पन्त,प्रसाद और मैथिलीशरण गुप्त ग्रन्थ में लिखा है कि वे (स्वामी दयानन्द) यूरोपीय बुद्धिवाद के भी प्रेमी थे और बुद्धिवाद के ही आलोक में वे हिन्दुत्व के समग्र रूप का परिमार्जन करना चाहते थे।

इसी आधार पर गुप्तजी ने 'साकेत' में राम-कथा को आधुनिकता तथा बुद्धिवादिता का आधार बनाया। ड० द्वारिका प्रसाद सक्सेना ने 'प्रियप्रवास में काव्य, संस्कृति और दर्शन' ग्रन्थ में लिखा है कि 'साकेत' और 'प्रियप्रवास' के कवियों ने अपनी कथाओं के परंपरागत रूपों को स्वीकार न करके आधुनिक बौद्धिक जगत् के अनुरूप उनमें कुछ नवीन उद्भावनाएं की हैं जिनसे कथाएं अलौकिक एवं अग्राह्य न रहकर पर्याप्त बुद्धिग्राह्य एवं मानव जीवन के अनुकूल बन गयी हैं। साथ ही जिनमें आज का बुद्धिजीवी मानव विश्वास भी कर सकता है नहीं तो काली नाग का नाथना, गोवर्धन पर्वत का अंगुली पर उठाना, हनुमान का पर्वत उखाड़ लाना आदि आज तक हास्यास्पद ही बना रहता।

आर्य-समाज ने जीवन तथा परिवार में सदाचार एवं संयम को प्रमुखता प्रदान की। मै हूं कौटुम्बिक कवि मात्र कहने वाले गुप्तजी इससे कैसे वंचित रह सकते थे।—इसीलिए गुप्तजो की उर्मिला 'हे मन, तू प्रिय पथ का विघ्न न बने' कहकर घृति तथा आत्मानुशासन का पवित्र परिचय देती है।

'साकेत में 'आर्यपुत्र्, 'देवी' आर्य आदि के सम्बोधनों के द्वारा शिष्टाचार तथा नैतिकता को सफल अभिव्यक्ति मिली है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'हिन्दी साहित्य में लिखा है कि भारत वर्ष के सभी मर्यादा प्रेमी कवि परिवार के कवि रहे हैं।

स्वामी दयानन्द का मत था कि जीवितों की श्रद्धापूर्वक सेवा ही श्रद्धा है। यद्यपि गुप्तजी सनातन धर्म के कट्टर पथी थे फिर भी वे अपने 'साकेत' को आर्य समाज की युगचेतना से बचा नहीं सके—इसीलिए माता कौशल्या का यह कथन सर्वथा प्रासंगिक है—है श्रद्धा पर ही श्राद्ध न आडम्बर पर।

स्वामी जी ने जोवन भर नारियों को यही सदुपदेश दिया कि वे पति को ही सर्वस्व मानें और उन्हीं की ही सेवा करें—अन्यत्र किसी के पास जाने की आवश्यकता नहीं है। इसीलिए उर्मिला प्रथम सर्ग में ठीक ही कहती हैं —

खोजती हैं किन्तु आश्रय मात्र हम,
चाहती हैं एक तुम-सा पात्र हम,
आंतरिक सुख-दुख हम जिसमें धरें,
और निज भव-भार यों हलका करें।

सीता भी कहती हैं —

मेरी यह महामति है—पति ही पत्नी की गति है।
नाथ! न भय दो तुम हमको, जीत चुकी हैं हम यम को।
सतियों को पति संग कहीं—अगम गहन क्या दहन नहीं।

डा० द्वारिका प्रसाद सक्सेना ने लिखा है कि आर्य समाज के प्रयत्नों से आधुनिक युग में शुद्धि-आंदोलन बड़ी तीव्रता के साथ चला था। इसके द्वारा कितने ही विधर्मी भारतीयों को पुनः हिन्दू धर्म या आर्य धर्म में सम्मिलित करके उन्हें समाज में उच्च स्थान दिया गया था और उनके हृदय में अपने देश एवं अपने समाज के प्रति श्रद्धा विश्वास जाग्रत करने का प्रयत्न किया गया था। कविवर गुप्तजी ने 'साकेत' में इस शुद्धि-आंदोलन की ओर भी संकेत किया है क्योंकि राम अपने वन-गमन का उद्देश्य बताते हुए वानरों को आर्यत्व प्रदान करने की बात कहते हैं। डा० त्रिलोचन पान्डेय का 'साकेत-दर्शन' में यही मत है कि राम को हिन्दू संस्कृति के प्रचारार्थ दक्षिणी जंगलों में भेजने को कवि शुद्धि-आन्दोलन की ओर इशारा करते हैं।

गुप्तजी के राम कहते हैं—

बहु जन वन में है बने ऋक्ष-वानर से,
मैं दूंगा अब आर्यत्व उन्हें निज कर से।

स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में आश्रम व्यवस्था की नई व्याख्या करके उसके महत्व को पुर्नस्थापित किया। गुप्तजी ने भी 'साकेत' में इसकी सम्पुष्टि की थी। आर्य समाज ने नारी को अत्यधिक आदर प्रदान किया। गुप्तजी की सीता राम के साथ वन में चलने के लिए यह तर्क प्रस्तुत करती है।

मातृ-सिद्धि, पितृ-सत्य सभी, मुझ अर्द्धांगी बिना अभी।
है अर्द्धांग अधूरे ही, सिद्ध करो तो पूरे ही।

'सत्यार्थ प्रकाश' में राजा को विद्यार्थ सभा, धर्मार्य सभा तथा राजार्य सभा के अधीन माना गया है। गुप्तजी के लक्ष्मण भी कहते हैं—

भला वे कौन हैं, जो राज्य लेवें,
पिता भी कौन हैं जो राज्य देवें ?
प्रजा के अर्थ है साम्राज्य सारा,
मुकुट है ज्येष्ठ ही पाता हमारा।

आर्य समाज ने देश में राष्ट्रीयता के परिवेश को उत्पन्न करने में विशेष योगदान दिया था। 'साकेत' में भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की ध्वनि सुनायी देती है।

दयानन्द सरस्वती ने अवतारों का निषेध किया था। उन्होंने राम को महापुरुष माना था। गुप्तजी ने इसी विचारधारा को सम्पुष्ट किया है—

राम तुम मानव हो ? ईश्वर नहीं हो क्या ?
विश्व में रमे हुऐ नहीं सभी कहीं हो क्या ?
तब मैं निरीश्वर हूं, ईश्वर क्षमा करें,
तुम न रमो तो मन तुममें रमा करे।

गुप्तजी के राम आदर्श महामानव हैं। वे आर्य संस्कृति के पुरोधा, प्रतिष्ठापक तथा पुरस्कर्ता हैं—

मैं आर्यों का आदर्श बताने आया,
जन-सम्मुख धन को तुच्छ जताने आया।
सुख-शांति—हेतु मैं क्रांति मचाने आया,
विश्वासी का विश्वास बचाने आया।
जो विवश, विकल, बल-हीन,दीन शापित हैं।

वे आगे कहते हैं—

मैं आया जिसमें बनी रहे मर्यादा,
बच जाय प्रलय से, मिटे न जीवन सादा।
मैं यहाँ जोड़ने नहीं, बाँटने आया,
जगदुपवन के झंखाड़ छांटने आया।

'साकेत' के राम वेदों की वाणी को प्रचारित करना चाहते हैं—

उच्चारित होती चले वेद की वाणी,
गूंजे गिरि-कानन-सिंधु पार कल्याणी।
अम्बर में पावन होम-धूप घहराने,
वसुधा का हरा दूकूल भरा लहराने।
तत्वों का चिंतन करें स्वस्थ हो ज्ञानी।
निर्विघ्न ध्यान में निरत रहें सब ध्यानी।।

साकेत कार यज्ञों में पशु-बली का विरोधी है—

कौन धर्म यह शत्रु खड़े हुंकार रहे हैं,
देते आयुध यहाँ दीन पशु मार रहे हैं।

खर तथा दूषण की मृत्यु का वर्णन करते शत्रुघ्न कहते हैं—

आर्य सभ्यता हुई प्रतिष्ठित,

आर्य धर्म आश्वस्त हुआ ।

साकेतकार एकादश सर्ग में कहता है ।

होते हैं निर्विघ्न यज्ञ अब, जप-समाधि तप पूजा पाठ,
यश गाती हैं मुनि कन्याएं कर व्रत पर्वोत्सव के ठाठ ।

आर्य समाज के अनुसार जीव कर्म करने में स्वतंत्र और कर्मफल भोगने में परतंत्र होता है। साकेतकार का भी कहना है कि जीव की कर्मानुसार गति है और वह सदैव पूर्व कर्मानुसार यहां दुख-सुख भोगा करता है—

माना आर्य, सभी भाग्य का भोग है,
किन्तु भाग्य भी पूर्व कर्म का योग है ।

गुप्तजी के 'साकेत' पर आर्य-समाज की अपेक्षा गांधीवाद का प्रभाव अधिक है और गांधीवाद की अपेक्षा महाभारत का—इस प्रकार वे एक सीमा तक आर्य समाज को 'साकेत' में स्थान देते हैं। वे मूलतः तथा प्रधानतः वैष्णव हैं और उन्होंने 'साकेत' में आर्य समाज के सिद्धान्तों को मर्यादित रूप में स्वीकार किया है। युगधर्म के कवि होने के नाते गुप्तजी आर्य-समाज के परिवेश से असम्प्रक्त नहीं रहे ।

यह है तो इतिहास की अभूतपूर्व घटना

यह है तो इतिहास की अभूतपूर्व घटना ।
अपोलो-सोयुज का अंतरिक्ष में मिलना ।

यह संगम इस तथ्य का परिचायक है ।
कि शांतिपूर्ण सहयोग ही फलदायक है ।।

भावी विज्ञान योजनाओं हेतु परीक्षण ।
महान ऐतिहासिक महत्व का दिग्दर्शन ।।
शायद वह दिन भी निकट आएगा ।
जब धरती पर भी मेल मिलाप हो जाएगा ।।

कहीं ऐसा न हो कि गगन में तो मिलें ।
किन्तु धरा पर प्यार के तार न हिलें ।।
अन्तरिक्ष यात्रीओ ! कुछ ऐसा बरसाओ ।
धरती पर प्रेम की सुधा सरसाओ ।।

केवल यदि शून्य में ही होते रहे प्रयास ।
और धरती पर मानव न आए पास-पास ।।
तो विज्ञान की उपलब्धि तो होगी ।
किन्तु धरा तो रहेगी रोगी ।।

क्षुब्ध दुनिया तुम्हारी ओर निहार रही है ।
शांति सुधा पाने को आरती उतार रही है ।।
तुम अंतरिक्ष से दो कुछ संदेश ।
कि जिससे संघर्षों का रहे न अंदेश ।।

आज के धर्म धुरंधर

"धर्म धुरन्धरों की महिमा न्यारी है। उन की गुण गरिमा अपरम्पार है। यहां भी उनकी चलती है, वहां भी उनका जयजयकार है।"

"जी किसका बखान कर रहे हैं। राघवानन्द जी ! लगता है कोई बड़े सिद्ध पुरुष आज कल आपके मठ में विराजे हैं। जिन्होंने आप के काज भी संवारे हैं। जन्म-जन्मतांर के कर्जे उतारे हैं। किस पुनीत धरती से वे महाजन आए हैं। कुछ हमें तो बताइए। हमारा ज्ञान भी तो बढ़ाइए।"

"सदानन्द जी ! आप तो उन्हें जानते हैं। भली भांति पहचानते हैं, ये तो मैं इन नए मुरीदों को बता रहा था, उनकी विरुदावलि गाकर इन सब को उस त्याग के पुतले की महिमा से अवगत करा रहा था।"

जी मैं कुछ समझा नहीं राघवानन्द जी, आः किसकी महिमा बखान रहे हैं। किसका कर गुणगान रहे हैं।

जी यह चर्चा उसी बड़े आदमी की है सदानन्द जी। जो घरबारी होकर भी विरक्त हैं। सब कुछ संजों कर भी त्याग का पुतला है। यह महत्जन अपने करिश्मों से ही आगे बढ़ा है और चढ़ा है। धर्म क्षेत्र में तो पूरा ही चौधरी है, चौधरोहट चाहिए, चाहे जहां ले जाइए। आनन्द ही उसकी साधना है, पैसा ही आराधना है। 'जहां देखा तवा परांत वहीं गवांई सारी रात' की उक्ति को जीवन में उसने खरा उतारा है। कभी एक गुट में रहे तो कभी दूसरी चौखट में। दूसरे को पुकारें और तीसरे की कहें।"

"हां हां राघवानन्द जी ! अब मैं समझ गया यह कहानी आप अपने उन पुराने संत जी की सुना रहे हैं जो अब अपनी मंहताई से सकल जहान में गुरू के नाम पर गुरू के काम पर, पानी फिराकर श्रद्धालुओं की श्रद्धा को चार चांद लगा रहे हैं।"

आपकी अनुमति हो तो जिज्ञासु जनों को मैं भी उनके चंद चमत्कार बता दूं इस त्याग से ही आनन्द लेने वाले महान् जन की गुण गरिमा गा दूं। इन का भी कुछ ज्ञान बढ़ जाएगा और हमने भी जो अनुभूति ली है, उस का पिटारा खुल जाएगा।

हां हां अवश्य बताइए। तनिक इन सब श्रोतागणों को उनकी महिमा से अवगत कराइए।

जी हां तो सुनिए और सच्चे मन से इस वृत्तान्त को गुनिए और फिर बताइए कि यह त्याग तपस्या की मूर्ति हैं या नहीं ?

पहले ये एक अखाड़े के पहलवान थे। या यों कह लीजिए कि भाड़े के बिन बुलाए मेहमान थे। दरियां बिछाते थे, मजमा जोड़ते थे। कभी किसी संन्यासी का बिस्तर उठाते तो कभी किसी विद्वत् जन की गरिमा गाते थे। धीरे धीरे गाल

बजाने में कुछ प्रवीणता आ गई। इनकी मुद्राएं भी उर्दू में कहें तो अदाएं कुछ कर्णधारों को भा गयीं। उन्होंने तनिक नजदीक लगा लिया। ये बन गए पूरे 'वामन' से बावन। धीरे धीरे पग पसारा। जिनके चरण कभी पूजते थे, उन्हें चरणों से पकड़ कर ही देवालय से बाहर धकेला। जिसके साथ अनेक थे, उससे गए मिल। फटे हुए दिल के टुकड़े लिए सिल। फटे थान के मेहरबान कद्रदान से हो गई जान पहचान वह भी थे पूरा चालीस सेरे विद्वान्। अत. एक से दो हो गए। सिद्ध साधक योग हो गया। जैसे गणेश वैसा ही वाहन। किन्तु धीरे धीरे स्थिति उलटती गई। स्वयं हो गए गणेश और गणेश हो गए इन के वाहन। फिर भी कतर बौंत में हैं चतुर। झट से बन जाते हैं किसी के भी पुत्तर। भज गोपाला दीन दयाला की धुन छेड़ी। ऊंची उठी उनकी ऐड़ीं। आखिर कलाकारी काम आई। थान बहादुर स्थान बहादुर बन गए। ये हो गए उनके संतरी। पर हैं बड़े चतुर गुरू को गुड़ कर स्वयं शक्कर हो गए। जिन के धड़े में अड़े थे, वे अब नहीं रहे थे अत: उन्हें धकिया दिया अपना रंग जमा दिया। बताइए हैं न पूरे कलाकार संतों! करो इनका जयजयकार।"

"श्रीमन् ये तो बड़े गुणवान हैं कुछ और बखानिए।" जिज्ञासु जनों ने गुहार लगाई। "तनिक इनको त्याग तपस्या का भी तो बखान करिए।"

अच्छा तो त्याग की बात सुनिए। सदानन्द सुनाने लगे।

कथा बेटों की

इनके थे दो बेटे। उनमें से एक पड़ा बीमार। होना था उपचार। जो था विवाहित उसे हुआ था रोग। किन्तु इन्होंने लगाया योग। साधना साधी और फिर नई कला दिखला दी। जो था बीमार उसका नाम दिया बदल। क्योंकि विवाहित के नाम पर फ्री फंड में न होता था उपचार। अतः अच्छे को कर दिया बीमार और बीमार को कर दिया चंगा। क्योंकि त्याग में हैं माहिर, अत: नाम का एक से त्याग कराया और दूसरे को नाम का चोगा पहनाया। रोग था भयानक हो गई दुर्घटना, रोगी चल बसा। बड़े महंत हो गए हैं, न। अत: चतुर्दिग् से शोक संवादों का तांता गया लग। थोड़े ही जानते थे जो हुआ था चमत्कार। बात बड़ी दुखद थी। युवा बेटा चला जाए, तो भला कौन पाषाण हृदय होगा कि जिसका दिल न पसीजे। अनेक सुहृद जन रोए। शोक सागर में निमग्न थे परिजन। किन्तु ये तो ठहरे विरक्त। नश्वर काया के प्रति मोह क्या। अतएव विचारते रहे और अंततः दूर की कोडी उड़ाई और विधि लगाई। दिवगंत के नाम पर था काफी पैसा। जाने वाला चला गया तो निरासक्त कर्म योगी ने फिर उसका असली नाम उजागर कर घर की गागर भर ली। संतों और कोई कर सकता है ऐसा चमत्कार। ये सिद्ध जन हैं कि जो जीवित को मार दें। मुर्दे को ज़िला दें। जो हो नहीं उसे सब को दिखा दें और जो हो उसे लापता करा दें। क्योंकि ये निरासक्त योग के पुजारी हैं।"

श्रोता धन्य धन्य कर उठे। वे एक स्वर से बोल उठे "अब कलिकाल इन्हें पाकर निहाल हो गया है। सत्य को चुल्लू भर पानी में स्वयं को डुबाना होगा। असत्य को भी अपने मुख पर पर्दा गिराना होगा क्योंकि ये सत्य को मारने में प्रवीण हैं तो असत्य के भी कान काटने में इनकी सानी नहीं। महन्ताई पाई है तो किसी का अहसान नहीं। अखाड़े में सीखी पहलवानी के पुराने दाव-पेचों की मेहरबानी है।

जी हां बंधुगण इनकी पौ बारह हैं। वामनावतार के भी छक्के छुड़ाने वाले ये तिरपनराज हैं। आज गुरू गद्दी इनकी चरण रज से धन्य हो गई है। स्वर्ग में बैठी महान आत्माएँ भी धर्म-धुरन्धर जी की कलाबाजियों पर सन्न रह गई हैं तो रहे, ये तो प्रसन्न है। थान प्रसाद जो को स्थान पाने के लिए इनके समक्ष गर्दन झुकानी पड़ती है। और अब इन्हें इल्हाम भी होता है। गुरू ने सिखाया था कि सत्यवाणी प्रभु की देन है और इनका कथन है कि नहीं नहीं वह किसी एक जगदाधार का वरदान नहीं अपितु अनेक का फरमान है।

राघवानन्द जी भी सब जानते थे। अच्छी तरह त्याग के पुतले को पहचानते थे। किन्तु सदानन्द को निकट बुला कर बोले "भइया इतना न बोलो। नए नए गुरू गद्दी के महंत की इस तरह पोल न खोलो। वरना अपना ब्रह्मास्त्र चला देगें।

सदानन्द बोले "वह बात क्या है, मैं भी तो जान लूं, उसकी कहां तक है मार यह भी तो पहचान लूं।

राघवानन्द कहते गए "सुनो सदानन्द जी वे आपका बहिष्कार करा देंगे, धर्माचार पत्रिका में प्रकाशित करा देंगे। सत्य प्रचार को बंद करा देंगे।

सदानन्द तो है सत्यव्रती अत: न घबराए बोल उठे इन्हें प्रहार करने दीजिए। आपकी तो रोजी रोटी का सवाल है अत: आप तो रहिए मौन। हम तो न रह पाएंगे। जो है असलियत वह कहे जाएंगे। क्योंकि हमें न उन से वैर है न विरोध। हमारा तो प्रण है गुरू की गद्दी पर जमे हुए से लोगों को गुमराह होने से बचाना। सावधान होने के लिए कहना। हम नही जानते चुप रहना। हमें तो कबीर दास की एक उक्ति ही आप को इस संबंध में सुना सकते हैं —

कबीरा खड़ा बाजार में मांगत सब की खैर
न काहू सौं दोस्ती न काहू सौ वैर॥

परमात्मा से विनय है इन्हे भी सत्य मार्ग पर चलाएं। ये सत्य पथ पर आएं और वह इन्हें दिन दूना चमकाए॥

बम्बई शताब्दी समारोह पर आने वाले आर्य बन्धुओं को सूचना

आर्य समाज स्थापना शताब्दी समारोह (दिसम्बर २४ से २८-१२-७५) बम्बई के पुनीत अवसर पर भाग लेने के लिये आने वाले बन्धुओं की भारी-संख्या में सूचनायें बम्बई शताब्दी कार्यालय को प्राप्त हो रही है। सभी को सीधा उत्तर देना सम्भव नहीं है। अत: सूचित किया जाता है कि आनेवालों की व्यवस्था प्रान्त के निवासी एक ही स्थान पर रह सकें। भोजन की व्यवस्था भी उनकी रुचि व सुविधा का ध्यान करके ही की जाएगी, परन्तु उसका व्यय उन्हीं को वहन करना होगा। इस विषय में अन्य जानकारी समय २ पर आपको प्राप्त होती रहेगी। आने की सूचना भेजें॥

—दलीप वेदालंकार

विश्वशांति कैसे हो ?

,संयुक्तराष्ट्रसंघ' ने विश्वशान्ति के अनेक उपाय किये; तो भी शान्ति के दर्शन नहीं हो पा रहे ! भला क्यों ? इसका एक ही उपाय है जिससे विश्वशान्ति संभव है। वह है ईश-अ ज्ञा ''वेद''की शिक्षा का पालन, जिसे सत्पुरुष निम्न प्रकार से सूक्तिरूप में प्रे षित करते रहे हैं/ करते ही रहेंगे,जब तक कि विश्वशान्ति के दर्शन नहीं हो जाते !

१ कुछ पाने के लिये 'नम्रता' पहली शर्त है। यह पूरा नहीं करोगे,तो क्यां पा सकोगे ? कुछ भी नहीं। अतः नम्रता-पूर्वक हीकोई विषय समझा जासकता है !

२ शक्तिसंपन्न राष्ट्रो शान्ति एवं कल्याण यदि स्थापित नहीं होते,तो समझें कि उन्हें शान्ति,कल्याण दोनों का तरीका नहीं आता ! आता होता तो सर्वत्र अमन आदि हो जाता। मानव समझे कि ईशकृत ही तरीका सुखकर है। और वह " वेद " में सुवर्णित है। वह है :—

(क)''हम कल्याणकारी बाज के स्वामी बनें। ''हमेशा यह सोचो कि पड़ोसी, नौकर, कुत्ते इत्यादि सारे पशु और मानव मात्र सुख से सोयें। —ऋग्वेद

३ जितनी भी खराबियाँ युद्ध, अपराध इत्यादि हो रहे हैं सब शुभ विचार न होने से ! यह 'बुनियादी चीज' जब तक न होगी, तब तक कोई भी विधि कारगर न होगी।

(क) निस्सन्देह विचार, आचार, व्यवहार की अशुद्धि से ही, विश्वअशान्ति है। अतएव शुद्ध विचार, शुद्ध आचार, शुद्ध व्यवहार से ही, विश्वशान्ति संभव होगी।

४ 'प्रथम सदाचार योजना। पश्चात अन्य योजना।' बस इसी प्रकार आचरण करने पर राज्यों-रांष्ट्रों-विश्व में सुख,शान्ति, कल्याण निश्चय ही स्थापित हो सकते हैं। अन्यथा-अन्य योजनाओं के बावजूद, देखले नहीं ? अतएव समस्त संसार के समस्त शासनों का 'उक्त'-अनुसार ही, आचरण करना चाहिए।

(क) जब तक विश्व में दार्शनिक शासक नही बन जाते यां जब तक शासक लोग दर्शनशास्त्र नहीं पढ़ लेते, तब तक आदमी की मुसीबतों का अन्त नहीं हो सकता। — अफलातून

५ "सत्य (उक्त तथ्यों) का सर्वश्रेष्ठ अभिनन्दन यही है कि हम उसे (इन्हें) आचरण में लायें। — एमरसन

(क) आचरण में लाना, 'निश्चय ही विश्वशान्ति पाना'।
न लाना, देख नहीं रहे ? 'रह जाना-रह जाना' !

(अर्थात 'विश्वशांन्ति ही एवं विश्वअकल्याण' !) उक्त ही तथ्यों अपन ही, विश्व-शान्ति कल्याण। तो क्यों न करलो उक्त तथ्यों का अनुष्ठान !

फिर, देखें/शर्तिया ही विश्वशान्ति के शीघ्र ही दर्शन !

बस, सेवक उपरोक्त सब कुछ सहानुभूति पूर्वक प्रेषित कर स्वकर्त्तव्य से उऋण हो जाता हैं। अब तो मान्य 'संघ' आदि का ही उऋण होना शेष रह गया है ! सर्वशक्तिमान सर्वेश्वर सब को इस हेतु समर्थ करे। ❀

—सज्जन

आधुनिक मां और बच्चा

बेटा बीमार है,
चलने फिरने से लाचार है,
लगता है काफी तेज बुखार है,
देखो अकेला खाट पर पड़ा,
ज़रा-२ रो रहा है,
पीड़ा से, दुख से,
बेचैनी से कराह रहा है,
क्या करे बेचारा,
कितना व्याकुल है,
ऐसा लगता है जैसे,
उसकी बेबस निगाहें,
किसी को ढूंढ रही हैं,
शायद मां को ही खोज रही हैं,
कहां गई है मां,
कैसी हैं मां की ममता,
बच्चा बीमार है,
और वह स्वयं कहीं जाने को तैयार हैं,
क्या कहा, अरे नहीं'
मां को समय नहीं,
वह कोई बेकार नहीं
जो अपना अमूल्य समय बरबाद करे,
और वहीं बैठकर उसकी सेवा करे,
उसकी बेरहमी पर,
बालक का हृदय चिल्ला उठा,
मां! मां!! मां आओ
केवल एक बार, मां केवल एक बार,
मां आओ! जल्दी से आओ!!
बस एक बार मुझे अपनी गोद में बिठाकर,
वही बचपन वाली लोरी सुना जाओ!
पर बच्चा चिल्लाता रहा,
रोता रहा सिसकता रहा,
मां क्लब में बैठकर
बच्चों के पालन पोषण पर
भाषण झाड़ती रही!
रात को देर से लौटी, सो गई……
सुबह आया ने बच्चे को जगाया
वह नहीं जागा, मां को खबर दी
वह आयी —
पर तब तक बच्चा सो चुका था,
गहरी नींद में
अब वह कभी मां कहकर
आवाज नहीं लगाएगा।

तीन अफीमची नशे में धुत्त होकर सड़क पर टहलने निकले। बाहर रिमझिम वर्षा हो रही थी। सड़क पर देखा उन्होंने एक मेढ़क को फुदकते हुए, तो उनमें से एक बोला: -

कितना शरारती है यह छोकरा जो सड़क में फुदक-फुदक कर चल रहा है।

दूसरा उसे रोकते हुए बोला, अरे तुम नशे में तो नहीं हो। यह तो घोड़े का बछेरा है।

तभी तीसरे ने कहा "भ. दोनों ही बुद्धू हो। यह तो हिरन छलांगें मार रहा है।"

निकलिये एकाकीपन की घुटन से

१ गलत है यह सोचना कि अपने आप पर तरस खाकर, या दूसरों के एकाकीपन का रोना रोकर कोई राहत पा सकेंगे।

२ अच्छा यह होगा कि आप इस बात को गांठ बांध लें इस तरह कुड़-कुड़ाते रहना लोगों को आप से दूर रखता है।

३ गलत है अपना सारा समय अपने ही संबन्ध में सोचने में बिता देना, अपने ही में डूबकर बिता देना।

४ अच्छा यह होगा कि आत्मकेन्द्रितता की निरर्थकता को पाप समझा जाय और दूसरे लोगों में अपने बाहर की चीजों में दिलचस्पी लें।

५ गलत है, हरदम यह सोचना कि लोग आप पर तरस खा रहे हैं और ऐसा सोचकर अकड़ना, चिढ़ना दूसरों से सहज ही मिलने वाले स्नेह या भाईचारे को ठुकरा देना।

६ अच्छा यह होगा कि आप जान लें कि अगर आप बहादुर और खुश हैं, अपने जीवन को सफल-सुखी बनाने के लिए कृत संकल्प हैं, तो किसी को आप पर तरस खाने का साहस न होगा।

७ गलत है यह सोचना कि घर बैठे राह देखने या चलते फिरते लोग अपने आप चलकर आपसे मित्रता करने आएगें।

८ अच्छा होगा कि आप जान जायें कि आपको खुद ही लोगों के पास जाना और कामों में हाथ बंटाना होगा, उन्हें इसका अवसर देना होगा कि वे आपको जानें—पहचानें।

९ गलत है यह सोचना कि अगर लोग आपके—पीछे नहीं दौड़ रहे हैं, तो आप जीवन में सफल नही हैं।

१० अच्छा यह होगा कि आप याद रखें कि लोग बहुत व्यस्त हैं, उन्हें दूसरों की परवाह करने की फुरसत नहीं है। सभी का अपना परिवार है और आपका मित्रवर्ग है। इसलिए सिर्फ उन्हीं लोगों से आपकी मित्रता होनी सम्भव है, जिनके पास आपकी रुचियों में समानता हो, जिनके साथ मिलकर आप कुछ कर सकें बिना 'बोर' हुए जिनके साथ देर तक बात कर सकें। इसलिए संगीत, बागवानी, पशु-पक्षी प्रेम जैसी 'होबियों' का विकास कीजिए।

दो सहेलियां मिलीं तो अपने-अपने पतिदेव के भुलक्कड़पने की चर्चा करने लगी।

एक बोली "बहिन जी! हमारे वो तो बड़े ही भुलक्कड़ हैं। रविवार को भी कालेज में चले जांय कक्षा में पढ़ाने।"

दूसरी ने कहा 'यह तो कोई बड़ी भूल ही नहीं। तनिक हमारे बेबी के डैडी के भुलक्कड़ का किस्सा तो सुन लो। पिछले सप्ताह मैं बाजार गई थी तो आफिस से लौटते हुए श्री मान जी भी बस स्टैन्ड पर खड़े दिखाई दिए। फिर वे मेरी ओर बढ़े और समीप आकर कहने लगे क्षमा कीजिए। मुझे ऐसा लगता है कि मैंने आपको कहीं देखा है।"

— वचनेश

जमाना पुराना और आज का जमाना

वह था जमाना पुराना और उसकी बातें भी थी पुरानीं। अब तो जमाना भी नया है तो बातें भी नयी। उस जमाने में तो हर घर में एक परिवार बसता था, जिसका हर सदस्य एक दूसरे पर जान वारने को तैयार रहता था। किन्तु आज के परिवार में तो केवल पति पत्नी और बालक रहते हैं जो 'ढाक के तीन पात' के समान अपनी राहें खुद बनाते हैं।

उन दिनों हर मकान में आंगन होता था और वह भी इतना बड़ा कि पूरा परिवार चाहे तो कवड्डी खेल ले। किन्तु मकान में आंगन की आवश्यकता ही कहां है। अब तो सकल जहान ही आंगन बन गया है। जहां जी चाहे उन्मुक्त विचर लीजिए।

तब और अब के मकानों में एक और भी अन्तर आ गया है। तब मोटी-मोटी दीवारें होती थीं। घरों की तथा छोटे-छोटे से वातायन। किन्तु अब तो हर घर की दीवार डेढ़ ईंट की होती है। पहले मकानों में खिड़की और दरवाजे होते थे तो अब पूरा मकान ही खिड़की व दरवाजों से बनता है। और शीशे पर शीशा चढ़ता जाता है।

उन दिनों हुआ करते थे ऊंचे, लम्बे तगड़े जवान। उनके सुन्दर सुघड़ स्वास्थ्य को देखते ही मन में विश्वास की भावना बलवती हो उठती थी कि ये अपनी जिन्दगी में कुछ कर गुजरेंगे किन्तु अब होते हैं सींकियां पहलवान। वे भी लम्बे नहीं अपितु ठिगने। पहले पुरुषों की वाणी का कुछ रौब ही और था, किन्तु अब तो मर्दानी आकृतियों से भी आवाज जनानी ही निकलती है। दूर से उन्हें देखें तो ऐसा लगता है कि 'शटल काक' दो पिनों पर टंगे हुए हैं। यह सिलसिला अभी और कहां तक जाएगा यह तो परमात्मा ही बता पाएगा। पहले लोगों को अपने पैरों पर भरोसा था, बल पर विश्वास था किन्तु अब तो 'बस' न मिले तो आदमी परबस है।

उस पुराने जमाने में हृष्ट-पुष्ट बालक पाठशालाओं में पढ़ने जाते थे किन्तु अब, दुर्बल कृशकाय शिशु विद्यालयों में रेंगते नजर आते हैं। कभी कालेजों में मुच्छल जवान पढ़ते थे तो अब वहां भी निरे गंगू पहलवान ही नजर आते हैं। उन्हें देखकर लगता है भला ये क्या ज्ञान की पोटरी उठाएंगे बस चला तो बरसात में किताबों को ही वैतरणी उतारने वाली नौका बनाएंगे।

उन दिनों में कहा जाता था 'जो साठा सो पाठा' किन्तु अब तो चालीस साल के होते ही दो-दो कदम बढ़ने के लिए भी चालीस-चालीस मिनट वाहन का इंतजार करने पर बाध्य हो जाते हैं। चालीस वर्ष की आयु बुढ़ापा ला देती है तो बेचारे २० वर्ष के नौजवान के सिर पर भी सफेदी ला देते हैं।

उन दिनों बालक कहा करते थे "चन्दा मामा दूर के, देखो न हमको घूर के'। किन्तु आज तो मामा के भानजे इस वेगवती दुनिया में अपने मामा की गोद में ही रम कर जा बैठने की उछल कूद करते हैं और आज का बालक कह सकता है "मामा आना हाथ में भोजन करना साथ में"।

तब चिल्लाने से आवाज कोसों दूर तक सुनाई पड़ जाती थी अब आवाज में दम ही इतना है कि सामने वाला भी तीन बार पूछता है कि "हां जा तो फिर क्या फरमाया। तनिक पुनः बताइए. समझ में नहीं आया"।

परिवर्तन की इस मार ने आदमी तो क्या मौसम को भी नहीं बख्शा। तब समय पर जाड़ा होता था तो समय पर गर्मी और समय से ही वर्षा। किन्तु अब तो आलम ही निराला है। गर्मी पड़ती है तो जी भर कर। सर्दी होती है तो पहले के ५ सेर की तुलना से मन भर। और बरसात या तो आती ही नहीं और किसान अपने अश्रुकणों को सूखे खेतों में छिडका कर मन में सोचता रहता है और यदि होती है तो इतनी कि बस तोबा ही बुलवा देती है। हंसने का तो मानो अन्त ही हो गया है तो बसंत कब आता है और चला जाता है, इसका पता ही नहीं लग पाता है।

विज्ञान के चमत्कारों से स्थानों की दूरी तो घट गयी है और वह भी यहां तक कि धरा-धाम के देश ही नहीं अपितु नक्षत्र भी पडौसी बनते जा रहे हैं। हजरते इंसान अपने चरण चिन्ह मंगल ग्रह और चन्द्रमा जी की ओर बढा रहे हैं। इस जमाने में उस जमाने की तुलना में रास्ते ही तो घटे हैं दिलों की दूरियां तो बढ़ती ही जा रही हैं। तब के माता-पिता, पुत्र-पुत्री, मित्र-शत्रु कहीं-कहीं ही नजर आते हैं। अन्यथा स्थिति यह रही है कि सब की अलग है ढपली और अलग ही है राग। हां अधिकारों की मांग बढ़ रही है और कर्त्तव्य विदाई ले रहा है।

तब का पुत्र अपने पिता के ऋण से कभी उन्मुक्त नहीं हो पाता था किन्तु आज का पुत्र तो पिता पर ही ऋण चढाता है। उन दिनों गुरू के ऋण से शिष्य दबा रहता था किन्तु अब का गुरू बेचारा शिष्य से ऋण लेकर ही कई बार अपने जीवन का खटारा आगे बढ़ा पाता है। उन दिनों समाज व्यक्ति का और अपने सदस्य का सम्बल होता था किन्तु आज तो बल के आधार पर समाज का गठन किया जाता है।

वे दिन ऐसे थे कि जब 'संगच्छध्वम' मूलमंत्र था किन्तु अब तो प्रायः परिवारों में न रहेंगे हम' का प्रलाप अपने आप छिड़ जाता है। तब एक का दुख दूसरे का गम था किन्तु अब तो दूसरे का दुख सरगम का स्वर गुंजाता है। कितनी तेजी से आगे बढ़ रहा है जमाना।

यही सब देखकर बरबस एक प्रश्न मन में उठता है अभी और कितनी तरक्की करेगी हमारी ये दुनियां। अभी कितना और बदलेगा जमाना। कहां तक चलेगा हमारी तरक्की का यह सिलसिला।......

❀

लघु कथा

ज्ञान गरिमा

—डा० श्री शिवनारायण

राजवंशों में कोई छोटी सी बात भी पारस्परिक वैमनस्यका कारण बन जाती है। ऐसी ही किसी सामान्य बात को लेकर राजा केशिध्वज ने खांडिक्य के राज्य पर चढ़ाई कर दी। दोनों ओर से घमासान युद्ध हुआ पर विजय श्री केशिध्वज के हाथ लगी। खांडिक्य परास्त हो गये। पराधीनता स्वीकार करने के भय से वह अपने मंत्रियों को लेकर जंगल में भाग गये और वहीं निवास करने लगे।

केशिध्वज और खांडिक्य दोनों ही नरेश महाराजा विदेहके वंशज, थे अतः अन्य राजाओं की तरह उनमें क्रूरता छल प्रपंच और विश्वासघात जैसी कूटनीतियों का सर्वथा अभाव था। केशिध्वज ने धर्मशास्त्रों का गहन अध्यन कर सम्यक् दृष्टि प्राप्त करली थी और खांडिक्य कर्मकांड के प्रकान्ड पंडित थे।

युद्ध के समापनोपरान्त केशिध्वज ने एक यज्ञ का आयोजन किया। उस क्षेत्र के अनेक धर्म-प्रेमी व्यक्तियों तथा संत महात्माओं ने पधार कर यज्ञ कार्य में हिस्सा बंटाया। संयोग की बात उनके यज्ञ की गाय को जंगल में चरते समय किसी सिंह ने मार डाला। अब यज्ञ की पूर्ण आहुति कैसे हो? उनका धर्मानुष्ठान अधूरा रह गया। उन्होंने अपने धर्मगुरूओं से इस सम्बन्ध में परामर्श किया तो सबने एक स्वर में कहा 'महाराज! खांडिक्य इस विषय के अधिकृत विद्वान हैं। वह जितना अच्छा परामर्श दे सकते हैं शायद और कोई विद्वान नहीं दे सकता। अतः मेरी राय आपको उन्हीं से परामर्श लेना चाहिये।'

केशिध्वज अपने शस्त्रों का त्याग कर एक सेवक को लेकर खांडिक्य से भेंट करने जंगल की ओर चल पड़े। वह भूल गये की मैं भी एक राजा हूं अतः परास्त राजा के पास इस तरह नहीं जाना चाहिये। उन्हें तो सम्यक् दृष्टि प्राप्त थी। धर्म-कर्म में वह मित्र और शत्रु का भेद भुला चुके थे। उन्हें साधारण वेश में आते देखकर मंत्रियों ने राजा खांडिक्य को सचेत करते हुये कहा—'महाराज! ऐसा प्रतीत होता है कि नरेश केशिध्वज मार्ग भटक गये हैं। ऐसा अवसर फिर हाथ लगने वाला नहीं है अतः क्यों न पुरानी शत्रुता का प्रतिशोध लेकर अपनी तलवार की प्यास बुझाई जाये।

'मंत्रिश्रेष्ठ! कहीं ऐसा अनर्थ न कर बैठना। क्या तुम युद्धशास्त्र साधारण से नियम को भी नहीं जानते कि निःशस्त्र और असावधान शत्रु पर प्रहार करना एक जघन्य अपराध है। युद्धकला हमें विश्वासघात करके शत्रु पर आक्रमण करने की शिक्षा नहीं देती। मैं ऐसा लोक निन्दित कार्य करने को कदापि तैयार नहीं हूं। इसमें शौर्य और वीरता की क्या आवश्यकता? एक साधारण सा व्यक्ति भी असावधान सेनानायक का काम तमाम कर सकता है।'

अब तक केशिध्वज बिल्कुल निकट आ चुके थे। उन्होंने पराजित राजा के चरणों में झुककर प्रणाम किया और करबद्ध निवेदन करने लगे—'गुरूश्रेष्ठ! आपकी बताई विधि के अनुसार ही मैंने यज्ञ—अनुष्ठान जैसे धार्मिक कृत्यका आयोजन किया पर मन को जितना संतोष और आत्मिक शान्ति मिलनी चाहिये थी न मिल पाई। पर्याप्त समय तक इन विचारों में डूबने के पश्चात मुझे ऐसा आभास

हुआ। मेरी अन्तरात्मा ने स्वीकार न किया जिस मार्गदर्शक ने मुझे यज्ञ का सारा विधान बताया उसे न मैंने दक्षिणा दी और न श्रद्धा ही प्रदान की। जब तक मैं आपको संतुष्ट नहीं करलेता तब तक मुझे मानसिक शान्ति कैसे मिल सकती है? आप मुझे आदेश दीजिये कि मैं आपकी सेवा किस प्रकार करूं?

यदि आप गुरू दक्षिणा के रूप में कुछ देना ही चाहते हैं तो विशुद्ध ज्ञान का उपदेश दीजिये। ज्ञान सम्पदा से बढ़कर इस भूलोक में अन्य कीमती वस्तु है भी क्या? फिर आपने विभिन्न धर्म ग्रन्थों का मंथन कर अनुभव के अनेक बहुमूल्य रत्न प्राप्त किये हैं। आपका धर्म ज्ञान दुःखों की निवृत्ति में पूर्ण सहायक होगा ऐसा मेरा विश्वास है।' खांडिक्य 'गुरूश्रेष्ठ' का सम्बोधन सुनकर एक क्षण को चौंके पर अपने को नियंत्रित करते हुये सहज रूप में बोले।

'इस शुष्क ज्ञान की अपेक्षा यदि आपने अपना राज्य ही वापस मांग लिया होता तो कम से कम वनवासियों की तरह अभावग्रस्तता का जीवन तो न जीना पड़ता। भला ज्ञान की प्राप्ति से आपका और राज्य की जनता का कौन सा हित होने वाला है?

'राज-सुख मेरे लिये कोई नूतन वस्तु नहीं। उसका उपभोग तो कर चुका हूं राजवैभव पाकर संताप में वृद्धि ही होती है। राजा जनक जैसी विरक्ति तो विरले व्यक्तियों में ही आ जाती है। अत मैं राज्य के क्षणिक सुख की अपेक्षा ज्ञान को अधिक श्रेष्ठ मानता हूं।'

खांडिक्यका विरक्ति भाव देखकर केशिध्वज ने उन्हें ज्ञानामृत का पान कराया और स्वयं भी आत्मतोप प्राप्त किया।

नई ······ नई ········ बिल्कुल नयी

सशक्त भाव भारी श्रद्धापूर्ण भाषायुक्त

महर्षि दयानन्द की जीवनी

❀ अब छपकर तैयार है ❀

१६ रंगीन चित्र : पृष्ठ २१२

तिरंगा बढ़िया कवर : मूल्य २)···१५०) सैकड़ा।

शीघ्रता कीजिए :

भारी संख्या में मंगाकर बांटे

दयानन्द संस्थान नई दिल्ली-५

डा० फतेह सिंह

राम तथा सूर्यवंश

आर्य जाति को भ्रमित कर अपने इतिहास के प्रति ही अनास्था जगाने की दुरभिसन्धि में अनेक देशी विदेशी विद्वत्जन नितान्त ही सक्रिय हैं। इस प्रकार के तत्वों के कृत्यों का ही यह परिणाम हो रहा है कि आज के विद्वत् समाज में ऐसे अनेक सज्जन दिखाई देते हैं कि जो यह कहने मे भी संकोच नहीं करते कि राम नाम का कोई ऐतिहासिक पुरुष हुआ ही नहीं। प्रस्तुत लेख में सुप्रसिद्ध पुरातत्व विद्वान डा० फतेहसिंह ने अपने इस खोजपूर्ण लेख में इसी प्रकार की भ्रान्तियों का निरावरण करते हुऐ मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम की ऐतिहासिकता की तर्कपूर्ण विवेचना की है।

इस लेख में प्रतिपादित तथ्य कुछ लोगों को चौंकाने वाला होगा, क्योंकि आज का विद्वत् समाज प्राय: यह मान बैठा है कि राम नाम का कोई ऐतिहासिक पुरुष नहीं हुआ। इतिहास की पाठ्य पुस्तकों में अभी कुछ दिन पहले तक रामायण पर एक अध्याय रहता था। अत: उसकी भी आवश्यकता नहीं समझी जाती, क्योंकि राम प्रतीक हो सकते है, इतिहास निर्माता महापुरूष के रूप में आजका इतिहासकार उनको नहीं मानता।

राम की ऐतिहासिकता को अस्वीकार करने के लिए, उनके पास अनेक कारण हैं। अध्यात्म रामायण, अदभुत रामायण जैसे शीर्षक जिस प्रतीकवाद की ओर संकेत करते हैं, क्या उसी को राम-कथा में सर्वत्र नहीं देखा जा सकता? क्या राम जैसा स्वार्थ शून्य, त्यागी, तपस्वी जीवन मनुष्य के लिए अस्वाभाविक और असम्भव नहीं है? क्या रामायण के पात्रों का आदर्श चरित्र एक कल्पनामात्र नहीं है? क्या रावण और कुम्भकरण आदि की अदभुत कथा एक गपोड़ा से भिन्न है? ऐसे ही अनेक और प्रश्न उनके मानस से उठते हैं, परन्तु इससे भी अधिक विश्वसनीय पुरातत्व की आती हुई यह धारणा है कि यदि राम-कथा इतिहास की वस्तु होती, तो इतनी खुदाई होने पर कहीं तो उसका कुछ प्रमाण मिलता। एक विद्वान 'बोले बाईबिल में वर्णित नगर भी खुदाई में मिल रहे हैं, परन्तु आपके राम और कृष्ण के नगरों की कहीं छाया भी नहीं दिखाई पड़ती।

संदेहों का अन्त पगार-का मुद्रा भंडार

इन शंकाओं का समाधान अनेक ढंगों से किया जा सकता है, परन्तु पीलीभीत जिले के पगार ग्राम से प्रात: मुद्रा-भंडार इन्हीं सभी संदेहों का अन्त करने के लिए सर्वथा समर्थ प्रतीत होता है। ये सभी सिक्के चांदी के हैं और उस वर्ग में आते हैं, जिन्हें पुरातत्वविद 'पंच मार्कड' अथवा आहत मुद्रा का नाम देते हैं। मेरी सम्मति में इनको सुम्म-चिन्हित कहना अधिक उपयुक्त होगा, क्योंकि इनके ऊपर जो चिन्ह आदि बने हैं वे इस प्रकार के यन्त्र से बनाए गये हैं जिसे अंग्रेजी में पंच अथवा हिन्दी की ग्रामीण बोलियों में "सुम्मा" कहा जाता है।

सूर्य वंश का प्रतीक

इन सिक्कों की सबसे बड़ी विशेषता है कि इन पर सूर्य का चिन्ह सर्वाधिक व्यापक रूप से मिलता है। अतः इनको किसी सूर्य वंश से सम्बन्धित मानना स्वाभाविक है। सूर्य का सम्बन्ध और सम्प्रदाय से जोड़ते हुए, कुछ लोग सम्भवतः इस सुझाव को न मानें, परन्तु जब सूर्य के साथ इक्षु (गन्ना) का पौधा भी किसी-किसी सिक्के पर मिलता है तो सन्देह का अवसर नहीं रहता क्योंकि इक्षु का सम्बन्ध संस्कृत साहित्य में एकमात्र सूर्यवंशी इक्ष्वाकु की व्युत्पत्ति से ही मिलता है। अतः कम से कम सूर्य एवं इक्षु दोनों चिन्हों से युक्त रजत मुद्राओं को राम के पूर्वज इक्ष्वाकु के सूर्य वंश से सम्बन्धित ही मानना पड़ेगा।

पुष्पक सूर्य और इक्षु

इस प्रकार सूर्य के साथ जब सिक्के पर पुष्पक-विमान है तो स्वभावतः सूर्यवंशी राम की याद आती है, जिन्होंने इस विमान द्वारा लंका से अयोध्या तक यात्रा की थी। इस विमान द्वारा जाते हुए साहित्यिक परम्परा के प्रेरणा सूत्र, राम ने सीता से उन पशु-पक्षियों की भी चर्चा की थी, जिन्हें सीता ने दण्डकारण्य में प्रवास करते हुए पाला-पोसा था। इन में हाथी, मृग एवम मयूर का विशेष रुप से उल्लेख है। क्या इसको संयोग मात्र ही कहा जाए कि एक सिक्के पर सूर्य के साथ हाथी और मृग के चित्र भी हैं, और दूसरों पर सूर्य एवं मयूर का। घनिष्ठ सम्बन्ध स्पष्ट हैं। इसके अतिरिक्त जिस सिक्के पर पुष्पक विमान है, उस पर सूर्य और इक्षु दोनो चिन्ह ही सूर्यवंशी राम की ओर संकेत कर रहे हैं।

राम लक्ष्मण और सीता

ऐसी स्थिति में, जब कुछ सिक्कों पर से पुरुषों समेत एक स्त्री की मूर्ति सूर्य चिन्ह एवं मयूर के साथ दिखाई पड़ती है, तो उन्हें राम, लक्ष्मण तथा सीता मानना स्वाभाविक लगता है। इन सिक्कों के ऊपर जब हम राम-नाम अंकित पाते हैं, तब तो संदेह के लिए कोई विशेष कारण नहीं रह जाता। अतः यह माना जा सकता है कि राम, लक्ष्मण एवं सीता के चित्रों वाली मुद्राओं का प्रचलन राम-राज्य में किया गया होगा।

क्या सिक्के जाली नहीं हैं!

फिर भी राम-राज्य की ऐतिहासिकता प्रभावित होते देखकर, हमारा विज्ञान युगीन हृदय शंका कर बैठता है, 'कहीं ये सिक्के जाली तो नही हैं'? इसके उत्तर में प्रश्न किया जा सकता है कि "जाल किसने बनाया होगा, किस उद्देश्य से और कब?" इसमें मूल शंका 'कब' शब्द पर आश्रित है। यदि किसी ने एक ओर राम-राज्य की ऐतिहासिकता प्रभावित करने के लिए ४० या ५० वर्ष पूर्व भी यह जाल बनाया हो, यह असम्भव है, क्योंकि जिस ताम्रपत्र में सिक्के पाये गए हैं, वह क्षारों की क्रिया के फलस्वरुप सर्वथा क्षत विक्षत होकर कापर-सल्फेट में बदल गयी है और रेत के साथ मिलकर सिक्कों के पिण्डीकरण केलिए उत्तरदायी हुआ है। उसके लिए ४०-५० वर्ष का काल निस्सन्देह अपर्याप्त है। दूसरे इस प्रकार के सिक्के पहली बार नहीं मिले हैं और केवल उसी स्थान पर नहीं मिले हैं। ऐसे सिक्के ब्रिटिश म्युजियम में पहुंच चुके हैं और जान अलेन तथा दुर्गा प्रसाद ने भी अपने अपने अध्ययन में इस प्रकार के कुछ सिक्कों का उल्लेख किया है। इसके अतिरिक्त ये सिक्के निस्संदेह चांदी के उसी वर्ग के सिक्के हैं, जिन्हें सुम्मा चिन्हित अथवा आहत-मुद्राओं की संज्ञा दी गयी है और जिनको

कनिघंम ने सामान्यत: ६०० ई० पू० से लेकर २०० ईस्वी तक का माना है, परन्तु कुछ विशेष स्थितियों में १,००० ई० पू० तक का काल भी स्वीकार किया है।

सिन्धु लिपि

यदि यह कहा जाए कि ये सिक्के इसी कालावधि में किसी राम भक्त राजा अथवा महंत ने अपने आराध्य राम के नाम से चलाए होंगे, तो बाधा यह उपस्थित होती है कि इन पर सिंधु लिपि में राम का नाम इस प्रकार लिखा हुआ है :)।□

इन तीनों चिन्हों में प्रथम रकार है, दूसरा आ की मात्रा तथा तीसरा मकार। सिंधु-लिपि का अभी तक उक्त कालावधि में पाया जाना प्रमाणित नहीं है, दूसरे यहां जो चतुश्कोणात्मक मकार हैं उसके दर्शन हमें उन सिंधु मुद्राओं में होते हैं जो सुमेर में खुदाई से प्राप्त हुई हैं और जो डामर मैके के अनुसार कम से कम २८०० ई० पू० की हैं। मोहनजोदड़ो से प्राप्त मुद्राओं में भी मुझे राम-नाम मिला है, परन्तु वहां मकार परवर्ती सिंधु लिपि का है। इसके अतिरिक्त सुम्मा चिन्हित सिक्को में मुझे एक ऐसा मकार भी मिला है जो सिंधु लिपियों में से प्राचीनतम लिपि में होता था।

अतएव इन सिक्कों का काल ईसा से सहस्राब्दियो पूर्व मानना पड़ेगा जब किसी को राम-नाम के जाली सिक्के बनाने के लिए औचित्य नहीं प्रतीत होता इस सुदूर अतीत में सम्भवत: राम-भक्ति के किसी सम्प्रदाय को ढूंढनां भी युक्ति संगत नहीं लगता, क्योंकि यह संदिग्ध है कि उस समय राम के अवतार की मान्यता समाज में प्रतिष्ठित हो चुकी थी और उन्हें आराध्यदेव के रूप में स्वीकार कर लिया गया था।

ओंकार और राम

हां पगार से प्राप्त कम से कम एक सिक्के में अवश्य राम और ओंकार का समीकरण अभिप्रेत है जिससे रामावतार की मान्यता का प्रारम्भ माना जा सकता है। इस सिक्के पर वही राम, लक्ष्मण, सीता की मूर्तियां और मयूर है, परन्तु ओम् शब्द के साथ राम इस प्रकार लिखा गया है जिसके मकार को अभयनिष्ठ माना जा सके :— OV□

इन चिन्हो में पहला ओं गोलाकार है, मकार चतुष्कोणात्मक हैं तथा इन दोनों के बीच दण्डाकार आ- मात्रा है और उसके ऊपर रकार है। इस प्रकार के सिक्के पहले भी अन्यत्र मिल चुके हैं। जॉन अलेन ने ब्रिटिश म्युजियम में संग्रहीत सिक्कों का जो विवरणात्मक सूची-पत्र अब से ५० वर्ष पूर्व तैयार किया था, उसमें भी द्वितीय वर्ग के ५५ से० के सिक्के पर यही त्रिमूर्ति और यही लेख है। स्वर्गीय दुर्गा प्रसाद ने १८३४ के न्यूमिस्मेटिक सप्लीमेट (बगाल की एसियाटिक सोसाइटी के मुख्य पत्र में) कम से कम ऐसे ही दो सिक्को का उल्लेख (प्लेट २७, ११४ तथा ११४५) किया है। ये सभी सिक्के एक स्थान पर नहीं, अपितु बिहार - उत्तर प्रदेश से लेकर तक्षशिला तक पाये गये हैं।

इसलिए यह माना जा सकता है कि सिंधु-लिपि के जिस काल में चतुष्कोणात्मक मकार प्रचलित था, तव राम नाम और ओंकार का समीकरण प्रारम्भ होने लगा था।

परन्तु इसी समय के ऐसे सिक्के भी मिलते हैं, जिन पर वही, वैसी ही त्रिमूर्ति और मयूर है, परन्तु केवल राम-नाम अंकित हैं, ओंकार का कही कुछ पता नहीं है। दोनों प्रकार के सिक्के पगार से भी मिले हैं।

क्या ये भारत द्वारा चलाए गए सिक्के हैं ?

राम के जिस शील का आदर्श हमें साहित्य में मिलता है, उसको देखते हुए यह मानना प्रसंगत-सा लगता है कि उन्होने स्वयं अपने नाम का समीकरण ओंकार के साथ किया होगा। अतएव स्वभावत हमारी दृष्टि इस भार को वहन करने वाले किसी राम-भक्त को ढूंढना चाहती है। निस्सन्देह यह राम भक्त ऐसे युग का होना चाहिए, जब राम को राजा के स्थान से उठाकर विख्याति के स्थान पर बैठाने के लिए प्रयास हो रहा हो। ऐसे महापुरुष की खोज करते हुए हमारी निगाह अतीत में केवल एकपर जाती है, क्योंकि भारत में न केवल राम के समय में ही राम भक्त थे, अपितु उन्होने राम की ओर से राम-राज्य की स्थापना करने का भी सौभाग्य पाया था। अतः यह असम्भव नहीं कि ये सिक्के भारत द्वारा चलाये गए हों।

इसकी पुष्टि में भी इन्हीं सिक्कों से कुछ संकेत मिलते हैं। कुछ सिक्कों के पृष्ठ भाग पर दो पैरों खड़ाउओं के चिन्ह देखे जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त मयूर के नीचे इन सिक्को पर सिंधु-लिपि के दो चार उल्टे उकार बने होते हैं। इनमे से दो उकारों को तो मयूर के पंखों के स्थान पर मानना पड़ेगा, परन्तु दो निचले उकार खड़ाऊं के प्रतीक मालूम पड़ते हैं और ऊपर बैठा हुआ मयूर स्वयं भक्त हो सकता है। वैदिक साहित्य में उकार ज्योति का वाचक है, और राम भक्त भरत के लिए राम के खड़ाऊं निसन्देह ज्योतिमय आधार थे जिनके द्वारा न केवल १४ वर्ष की अवधि से अपितु समस्त जीवन को ही उन्होंने अवलोकित किया होगा।

सिक्के नेता युग के नहीं हो सकते

इन सिक्कों की उतनी अधिक प्राचीनता के लिए, इसी पगार भंडार के कुछ अन्य सिक्कों से भी प्रमाण उपलब्ध होते हैं। इनमें से एक मुद्रा ऐसी है जिसे राम-राज्य की उदात्त कल्पना का अच्छा प्रतीक माना जा सकता है। यदि इसकी बारीकिओ को छोड़ भी दिया जाय, तो भी सूर्य के साथ वृषभ मृग के बीच सिंह का चिन्तित होना इस कथन को दुहराता-सा प्रतीत होता है कि राम राज्य में शेर और बकरी एक घाट पानी पीते थे। सिंह उत्साहित होकर पूंछ उठापे हुए ज्योतिर्वाचक सिंधु को चुमता हुआ-सा दिखाया गया है और यह उकार 'ओं' से संलग्न दिखाया गया है। क्या यहां पशुबल द्वारा ओंकार की ज्योति के समक्ष पूर्ण आत्मसमर्पण अभिप्रेत नहीं है? क्या राम-राज्य का जो चित्र हमारी परम्परा में सुरक्षित है उसको व्यक्त करने के लिए यह प्रतीक समर्थ नहीं है?

इसके अतिरिक्त एक ऐसा सिक्का भी है जिस पर अज (राम के एक पूर्वज) का नाम अंकित है और दूसरे पर ओम् और सूर्य के साथ "अज" का नाम है। यहां सब से बड़ी विशेपता यह है कि ओम् का मकार चतुष्कोणात्मक मकार से भी पूर्व का है जों रोमन लिपि के मकार से भिन्नता है। जैसा कि मैंने सिंधु-लिपि वाचन के प्रसंग में अन्य बतलाया है सिंधु लिपियो में भी सेम 'म' मिलता है। इन लिपियों में से प्राचीनतम के मकार का इन सिक्कों पर होना इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि इस प्रकार के कुछ सिक्के सिंधु सभ्यता काल के उस प्राचीनतम युग के हैं, जिसकी लिपि एक ही दो स्थानो पर अपवाद रूप में मिलती है और जो सम्भवतः सिंधु सभ्यता काल से पूर्व भी प्रचलित रही हो।

इसलिए, विद्वानों को सुखद आश्चर्य के लिए तैयार रखना चाहिए कि ये सिक्के भारतीय परिवार के उस युग के सिद्ध हों जिसे हम त्रेता-युग के नाम से जानते हैं। परन्तु इसके लिए पगाल ग्राम में प्राप्त सभी मुद्राओं का सविस्तार अध्ययन आवश्यक है। आशा है इसके लिए उत्तर-प्रदेश सरकार सभी सुविधाएं उपलब्ध करायेगी।

सिन्धु लिपि वाचन की पुष्टि

यहां यह बताना आवश्यक है कि इन सिक्कों के इस अध्ययन से मेरे सिंधु-लिपि वाचन की पुष्टि होती है, क्योंकि इनसे उसी वर्णमाला के आधार पर चढ़ाया जा रहा है जिसे मैंने सिंधु-घाटी की २५०० मुद्राओं के वाचन के बाद निर्धारित किया था। यहां यह भी कहना अनुचित न होगा कि इससे विदेशी एवम् स्वदेशी विद्वानों की वह परम्परा पसन्द नहीं करती जिसका प्रारम्भ विशर जालडवल, फादर हेरास जानमार्शल तथा व्हीलर जैसे विद्वानों से इस शताब्दी के प्रारम्भ में सर-हरवर्ट दिश्ते जैसे साम्राज्यवादी लेखको की लक्ष्य-पूर्ति के लिए हुआ और जिसे 'लेटेस्ट-लाईट आन इंडस सिवलीजेशन' के लेखक ने देश के विद्वानों को सावधान किया है। खेद की बात है कि फिर भी जब १८६८ की मेरी सिंधु-लिपि सम्बन्धी शोध पर चर्चा चली तो कैम्ब्रिज के एक प्रोफेसर ने भारत सरकार को भयभीत करते के लिए लिखा सिंधु सभ्यता को 'आर्यन' हल ढूढने के लिए जो अद्भुत उत्साह उत्तरी भारत में दिखायी पड़ता है, उसको देखते हुए किसी भी 'द्रविड़' समाधान का वहां घोर तथा सशक्त विरोध होगा। उसके विपरीत स्थिति में वही बात दक्षिण में होगी। यह कथन भ्रामक है, यह इस बात से स्पष्ट है कि आज लगभग ३०-३५ वर्ष से सिंधु सभ्यता को आदि द्रविड़ सभ्यता कहा जा रहा है, परन्तु उत्तर भारत में उसके विरुद्ध कोई प्रतिक्रिया देखने में नहीं आयी। वस्तुतः कैम्ब्रिज प्रोफेसर का यह कथन केवल इस तथ्य को प्रकट करता है कि उत्तर एवं दक्षिण को लड़ाने के लिए जो साम्राज्यवादी षडयंत्र विद्वत्तापूर्ण ढंग से चलता रहा है, उसको किसी प्रकार से क्षति न पहुंचे, उसके लिए कुछ शक्तियां प्रयत्नशील हैं। हमारे विद्वानों को सावधान होकर इन साम्राज्यवादी विद्वानों के हाथो की कठपुतली नहीं बनना चाहिए। यह राष्ट्र की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

सत्यार्थ प्रकाश की परीक्षाएं

आर्य युवक परिषद (पंजीकृत) दिल्ली द्वारा संचालित सत्यार्थ प्रकाश की सत्यार्थ रत्न, भूषण, विशारद तथा शास्त्री परीक्षा के प्रति वर्ष वेद सप्ताह के उपलक्ष्य में सारे देश के भिन्न २ डेढ़ सौ केन्द्रों में होती हैं आर्य जनता के आबाल वृद्ध स्त्री पुरुष सभी इन परीक्षाओं में सम्मिलित हो सकते हैं। परीक्षा देने के इच्छुक बहिन-भाई परीक्षा मंत्री एच–६४ अशोक विहार दिल्ली-५२ से पत्र व्यवहार कर परीक्षाओं सम्बन्धी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

देव व्रत धर्मेन्दु
आर्योपदेशक,
प्रधान आर्ययुवक परिषद दरिया गंज दिल्ली -११०००६

वैदिक त्रैतवाद और दयानन्द

—विजय प्रताप सिंह

अध्यात्म (METAPHYSICS) भाषा, भूषा, भोजन, साहित्य, ललित एव स्थापत्य कला, आचारशास्त्रा तथा उपासना ही नहीं, राजनीति और विधि सहित सम्पूर्ण संस्कृति की मनोविज्ञानिक आधारशिला है। किसी भी विषय पर प्रारम्भ हुआ प्रश्न-प्रतिप्रश्न अन्ततः अध्यात्मशास्त्र पर आकर टिक जाता है। यास्क पारस्कर बुद्ध कुमारिल शंकर सायरण राजा राममोहन राय और समर्थ रामदास के पुञ्जीभूत व्यक्तित्व महर्षि दयांनन्द ने जिस वैदिक दर्शन का पुनरुद्धार किया, उसे बुद्धिजीवियों ने त्रैतवाद कहा है। वैष्णव ब्रह्मसम्प्रदाय की माध्वविचारधारा से मतवैभिन्नय प्रदर्शन तथा व्याकरणिक तर्कसम्मत होने की अपेक्षा सामान्यजन के बोधपरकता के दृष्टिकोण से इसे द्वैतवाद न कहकर त्रैतवाद की संज्ञा दे दी गयी। निश्चय ही सूत्रों पर स्वयं भाष्य लिखने का समय उन्हें नहीं मिल पाया। यजुर्वेद के बाद ऋग्वेद के अन्तिम चरण पर भाष्य लिखा ही जा रहा था कि बीसों बार के असफल प्रयासों के बाद उनके वैचारिक और वैयक्तिक शत्रुओं का उनकी हत्या का अन्तिम प्रयास सफल हो गया। फिर भी सामान्य रूप से सत्यार्थप्रकाश में (विभिन्न दार्शनिक मतों विशेषकर नववेदान्तियों और जैनों बौद्धों की निर्मम आलोचना करते हुए) तथा विशेषरूप से ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका और वेदभाष्य में अपनी अर्थात वैदिक विचारधारा का प्रतिपादन उन्होंने किया। अत्यन्त संक्षेप में उन सबका सार मैं यहां प्रस्तुत करता हूं।

वालखिल्यसूक्त-रहित मन्त्रसंहितायें ही ईश्वरकृत स्वतः प्रमाण वेद हैं। सृष्टि के आदि में अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा इन चार ऋषियों ने सर्वप्रथम क्रमशः ऋक्, यजुष, साम और अथर्व संहिताओं का दर्शन किया था; उनसे परम्परा से ब्रह्मा और फिर अन्यान्य ऋषियों ने वेदों को प्राप्त किया। मन्त्रों के आरम्भ में उल्लिखित ऋषि मन्त्रार्थों के प्रथम व्याख्याता आचार्य हैं। वेदों में देवता शब्द के दो अर्थ हैं: जहां सविता अदिति आदि का वर्णन ईश्वर के स्वभाव प्रतिकूल गुण कर्मों के साथ हुआ हो,वहां वे सूर्य, पृथ्वी आदि दिव्य गुणों से युक्त जड़ पदार्थों-पिंडों के वाचक हैं; अन्यत्र सर्वत्र वे ईश्वर के पर्यायवाची संज्ञापदवत् व्यवहृत रूढ़ विशेषण मात्र हैं। उत्तरकालीन ब्राह्मण-महाभारतादि ग्रन्थों में जिन विष्णु, शिव, इन्द्र जैसे विवाह मैथुन-भोजनाच्छादन-युद्ध धर्मा शरीरधारी देवों का वर्णन मिलता है, वे, भारत और उसके बाहर भी, आर्यों द्वारा स्थापित, प्रागितिहास की धुंध में खोये, विकसित ही नहीं भौतिक दृष्टि से कदाचित अतिविकसित संस्कृतियों वाले साम्राज्यों के पुरुष-राजपुरुष मात्र हैं। असुर राक्षस यक्ष, गन्धर्व, विद्याधर, नाग आदि भी परस्पर विशिष्ट शत्रु-मित्र मानव जाति विशेष ही थे। वेदों में किसी भी ऐतिहासिक घटना का उल्लेख नहीं है। उनमें वर्ण परिवर्तनशील गुण-कर्म-स्वभावादि से उत्पन्न व्यक्तित्व और बौद्धिक सामाजिक स्थिति का नाम है। उनमें ब्राह्मण और श्वपच का समान अधिकार है शाखायें व्याख्यान हैं। पुराण, कल्प इतिहास, गाथा और नाराशंसी

इन पाँच अन्य नामों से भी जाने जाते वाले ब्राह्मण तथा उपांग वेदों की ऋषिकृत व्याख्यायें होने से परत. प्रमाण हैं। ग्यारह प्राचीन उपनिषदां तथा स्मृतियों में एक प्रक्षेप-रहित मनुस्मृति ही आर्ष है। ईश्वर कृष्ण की सांख्यकारिका, भागवतादि पुराण, पांच रात्र, शैवागम, तन्त्र आदि अवैदिक जालग्रन्थ हैं। ब्रह्मसूत्र वेदान्तपरक है, पर वही बात गीता के लिए सही नहीं है, यद्यपि उसका आचारशास्त्र कर्मयोग वैदिक मन्तव्य है [बाद में विद्वानों आदि ने सम्पूर्ण गीता की त्रैतवादी व्याख्या की। सत्यदेव शर्मा ने विष्णुसहस्रनाम पर विपुलकाय सत्यभाष्य लिखा] छः सूत्र एक ही शास्त्र के विषयानुसारी भाग हैं और वे समाष्टिरूप में वेदिक त्रैतवाद का विवेचन करते हैं।

महर्षि दर्शनों के समान तन्त्र होने के विषय में विज्ञानभिक्षु से, ईश्वर, जीव और प्रकृति के विजातीय भेद में मध्व से, सगुण निर्गुण परिभाषा, जीवों के सजातीय भेद (गुणात्मक अभेद) और मुक्ति के स्वरूप में रामानुज से, ज्ञान के स्वतः प्रामाण्य और नास्तिक दर्शनों के बाद खण्डन में कुमारिल से, पदार्थव्याख्या और सृष्टि प्रलय के बारे में बहुत कुछ प्रशस्तपाद से, सत्कार्यवाद और प्रकृति परिणामवाद में वाचस्पति से प्रमाण मीमांसा और ईश्वर सिद्धि में उदयन और जयंत से और पौराणिक श्राद्ध आदि कर्मकाण्ड, महाधर आदि के वेदों के भाष्य, पुष्टिमागादि सैकड़ों सम्प्रदायों की आलोचना की पद्धति में लोकायतों से सहमत हैं। प्राचीन दार्शनिकों की भांति योग को वे निर्विवाद स्वीकार करते हैं पर अणिमा आदि विभूतियों का अर्थवादात्मक अर्थ करते हैं।

ज्ञानमीमांसा : ज्ञान वस्तुतः दो प्रकार का होता है। साधारण व्यक्ति के लिए किसी पदार्थ का ज्ञान सामान्य लक्षणों से व्यतिरिक्त उमके न्यूनतम विशिष्ट धर्मों को जानना है जिनसे उस पदार्थ की पृथक् सत्ता का बोध होता है। ईश्वर और मुक्त पुरुष का ज्ञान पदार्थ के समस्त धर्मों का परिचय है। इन्हीं दोनों दृष्टियों से कभी तो सत् को ज्ञेय कहा जाता है और कभी नेति-नेति। ज्ञान अपूर्ण तो हो सकता है, उसकी विस्मृति भी सम्भव है पर उसका निषेध कदापि नहीं हो सकता; जिसका निषेध हो वह ज्ञान है ही नहीं। सत्य कोई ऊर्ध्वाधर रेखा नहीं है जिसके व्यावहारिक पारमार्थिक आदि उच्च, उच्चतर अनेकों बिन्दु हों वह क्षैतिक रेखा भी नहीं है जिस पर समान ऊंचाई के अनेकों सत्य बिन्दु हों। इसके विपरित असत्य के अनगनित स्तर सम्भव हैं।

दयानन्द प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द अर्थापत्ति सम्भव, अभाव और ऐतिह्य इन आठों को प्रमाण मानते हैं। इनमें यदि अर्थापत्ति, सम्भव और अभाव का अनुमान और एतिह्य का शब्द में समावेश कर लिया जाय तो न्याय के कुल चार प्रमाण बच रहते हैं। भ्रम एक सत् वस्तु के अपूर्ण ज्ञान पर दूसरी (देश-कालान्तर में) सत् वस्तु की स्मृति का अवैध आरोप है। जब एक ही वस्तु देश-काल की भिन्नता या अलग-अलग गुणों की दृष्टि से दो वस्तु, जैसे गंगा और पद्मा, समझी जाती हैं तो उनका भेद औपाधिक भेद कहा जाता है, और यही अद्वैत है। अंशी और अंश, कोई वस्तु और उससे उत्पन्न दूसरी वस्तु एक और उससे साधर्म्य रखने वाली दूसरी वस्तु आयाम के अतिरिक्त अन्य साधर्म्य रखने वाली तथा इसी प्रकार वैधर्म्य रखने वाली दो वस्तुओं का भेद क्रमशः स्वमत भेद, परिणाम भेद, सजातीय भेद, गुणांश भेद और विजातीय भेद हैं।

प्रस्तुत पदार्थ से एक व्यक्ति किन्हीं उपकरणों की सहायता से एक वस्तु का

निर्माण करता है। उत्पन्न वस्तु कार्य कही जाती है और पदार्थ, व्यक्ति तथा उपकरण क्रमशः उसके उपादान कारण, निमित्त कारण और साधारण निमित्त। उपादान कारण से कार्य में जो रूप-गुण परिवर्तन होता है वह कारणव्यापार कहा जाता है। अब दो कणों क और ख के मिलकर एक नया युग्म ग बनने पर प्रायः यह समझा जाता है कि क-त्व और ख-त्व तत्तत् कणों के समग्र लक्षण हैं, और उनके संयुक्त होने पर एक सर्वथा नवीन गुण ग-त्व उत्पन्न हो गया है। वस्तु-स्थिति यह है कि क-त्व क के अनेकों लक्षणों में मात्र वह लक्षण है जो उसकी स्वतन्त्र अवस्था में प्रकट होता है, इसी प्रकार ख-त्व ख के अनेकों लक्षणों में मात्र वह लक्षण है जो उसकी स्वतन्त्र अवस्था में प्रकट होता है; संयुक्त होने पर वे स्वतन्त्र अवस्था में प्रकट होने वाले लक्षण को अव्यक्त कर अपना सामान्य लक्षण ग-त्व प्रकट कर देते हैं। कारणव्यापार का तात्पर्य समवायी कारण के अवयवों के सामान्य गुण को व्यक्त कर देना मात्र है। यदि अवयवों मे कोई सामान्य गुण नहीं है तो वे संघात बना ही नहीं सकते। द्रव्यों की भांति गुण की भी आत्यन्तिक उत्पत्ति या नाश सम्भव नहीं है। यही सत्कार्यवाद है। आकृति की भी सामान्य के रूप में नित्य सत्ता है। कुछेक गायें देखकर हमें गायों की विशिष्ट संरचना से अलग एक बिम्ब से साक्षात्कार, एक सामान्य गोत्व से परिचय होता है। यही सामान्य अस्त-व्यस्त होकर स्वप्नों के दृश्य बनते हैं।

तत्वमीमांसा : त्रैतवाद बहुदेवतावाद (Polytheism) एकैकाधिदेववाद (Henothesim) और अवैदिक बौद्ध धारण अद्वैतवाद (Monism) का घोर विरोध कर एकेश्वरवाद (Monotheism) को एकमात्र वैदिक दर्शन निरूपित करता है तीन पदार्थ अनादि अतः नित्य हैं—ईश्वर, जीव और प्रकृति।

ईश्वर—एक, विभु, सूक्ष्मतम, अविकारी, सच्चिदानन्द, आप्तकाम, ज्ञानी सर्वशक्तिमान् (अर्थात गुण-कर्म-स्वभानूकूल असीम सामर्थ्ययुक्त) सक्रिय द्रष्टा, न्यायी तथा निमित्तकारण। अपने स्वभाविक गुण के कारण ईश्वर सगुण तथा विरूध गुण (अनेकता,अवतार, आकृति, राग,विरक्तता,गति सुषुप्ति,विकार, जड़ता,दुःख,भोगेच्छा भ्रम, बाध्यता, अन्याय, बन्ध-मोक्ष,शब्द-स्पर्श-रूप-रस-गन्ध) से रहित होने से निर्गुण कहा जाता है। आत्मा और पुरुष ईश्वर और जीव दोनों की सामान्य जातिवाचक संज्ञायें हैं। ब्रह्म इश्वर का पर्याय है, पर दिग्गत तादात्म्य से गौण रूप से, इसका प्रयोग कभी इश्वर और जीव के युगल तथा कभी-कभी तो समूची त्रयी समष्टि के लिये होता है।

जीव...असंख्यात, सूक्ष्मतर, अणसच्चित, जन्म-मरण सुख-दुःख-इच्छा-द्वेष प्रयत्न-स्वल्पज्ञान-बल-क्रियाशील,भोक्ता,कर्म करने मे स्वतन्त्र तथा ईश्वर की व्यवस्था से परतन्त्र है। शुभाशुभ कर्मों से उत्पन्न अदुष्ट या अपूर्व ही पुण्य और पाप है; इन संचित कर्मों का बिना भोगे नाश नहीं हो सकता। सुखभोगविशेष का नाम स्वर्ग और दुःख भोगने को नरक कहते हैं। मोक्ष निरतिशय आनन्द है पर वह सावधि-महाकल्प-पर्यन्त-है इश्वर की स्तुति (गुण की प्रशंसा) प्रार्थना (बल-बुद्धि-विवेक-आयु आदि के लिए याचना)उपासना (ईश्वर के गुणनूकूल आचरण) अष्टांगसाधन और पंचमहायज्ञ ये स्वर्ग और मोक्ष के साधन हैं ईश्वर की व्यवस्था से किसी तरह विवश न हुई भी सहजकरुणवश, स्वेच्छा से मोक्ष आनन्द का त्याग कर जन्म लेने और मानव कल्याण हेतु अपनी संचित शक्तियों का उपयोग करने वाली मुक्त जीवात्मा को अवतार कहते हैं।

प्रकृति—सूक्ष्म, सत्, जड़, विकारी, भोग्या। जिसकी स्वतन्त्र सत्ता हो उसे द्रव्य और उसके अविभाज्यकरण को परमाणु कहते हैं। किसी वस्तु के उत्पन्न होने का अर्थ उसके अवयवों का विशेष ढंग से संयुक्त होना और नष्ट होने का अर्थ अवयवों का अलग हो जाना है। निरवयव होने से परमाणु नित्य हैं। उपयुक्त ईश्वर और जीव इन दोनों में कोई भी परमाणुओं का कार्य नहीं है। सभी कार्य विनश्वर हैं। वर्तन में खौलते पानी के बिन्दुओं की तरह कार्यद्रव्यों मे परमाणुओं का संयोजक परिवर्तनशील हैं। व्यष्टि संयोजनों का यह क्षणस्थायीत्व ही क्षणकवाद है। वस्तुएं टूटती-फूटती सड़ती-गलती, पुरानी हो जाती हैं; मानव शरीर के सेल बराबर नष्ट होते और बनते है। संयोजनों का यह बदलाव ही प्रवाह (Flux) है; वस्तुत: हर कार्य प्रवाह है। एक सीमा के बाद वस्तु के गुण-धर्म अत्यधिक भिन्न हो जाते हैं, तो उसकी पुरानी अभिधा भी समाप्त हो जाती है।

प्रकृति तीन प्रकार के परमाणुओं (Elementary Pa ticles) का समुदाय है—सत्वगुण, तमोगुण, रजोगुण। सत्व (ऋणात्मक आवेशयुक्त इलेक्ट्रान ?) भारहीन गतिशील, और श्वेत; राज (धनात्मक आवेशयुक्त प्रोट्रीन आदि ?) भारयुक्त, गतिशील और लाल; तथा तमस् (उदासीन न्यूट्रान आदि ?) भारयुक्त, निष्क्रिय और काला होता है। सृष्ट्यादि में ईश्वर प्रेरणा से प्रकृति मे क्षोभ उत्पन्न होता है। तीव्र गति से रजस् सत्व के साथ मिलकर द्वयणुकों का निर्माण करते हैं; प्रकृति की यह अवस्था महत् कहलाती है। इन द्वयणुकों और तमस् के विशिष्ट संघात त्रसरेणु हैं; प्रकृति की यह अवस्था अहंकार प्रथम है जिसके कण में तीनों गुण उपस्थित हैं। इससे आगे प्रकृति का विकास दो दिशाओं में होता है जिन्हें हम भोग साधन प्रकृति और भोग्या प्रकृति कह सकते हैं। पहली के अन्तर्गत एक देश इन्द्रिय कण तथा द्वितीय मे पंचतन्मात्राओं (सूक्ष्मभूतों) का निर्माण होता है। बुद्धि, अहंकार और ग्यारह इन्द्रियां ये करण कही जाती हैं—मनसहित प्रथम दो अन्तःकरण तथा शेष दस वाह्यकरण पत्येक जीव के साथ सर्गकाल में करण - तन्मात्रा इन अठारह से निर्मित एक सूक्ष्म-शरीर सम्बद्ध रहता है, जो एक देह को छोड़ने और दूसरी को प्राप्त होने के अन्तराल में भी जीव के साथ ही रहता है। इनमें तन्मात्र को प्रायः कारण शरीर या आश्रय कहते हैं। मन का कार्य इन्द्रिय संवेदनों को आत्मा और उसके निर्देशों को इन तक पहुंचाने में मध्यस्थता करना, संस्कारों का संचय तथा वितर्क है।

तन्मात्राओं से महाभूत—वर्ग, जिनमें स्थूल जगत् के सभी पदार्थों का सन्निवेश किया जा सकता है—के विकास का क्रम रोचक है। प्रचण्ड आकर्षण से दिक् (Space) में बिखरे परिछिन्न तन्मात्र एकत्र होकर एक दीर्घवृत्तज (Ellipsoid) में स्थित निरन्तर सघन हो जाते हैं। यह दीर्घवृत्तज ही वेदों का हिरण्यगर्भ या ब्रह्माण्ड है; प्रकृति की यह अवस्था आकाश (Luminiferous ether) है जो न केवल प्रकाश का माध्यम है अपितु शब्द भी इसमें उत्पन्न हो सकते हैं। घनीभूत होने से प्रकृति की अगली दशा वायु (Gaseous) आती है, जिसका विशिष्ट गुण स्पर्श है। बढते संघनन और फलतः भीषण तापक्रम से समस्त वायुभूत जल उठने की स्थिति अग्नि या तैजस (Igneous) है जिसका गुणविशेष रूप—देखा जाना—है। हिरण्यगर्भ खण्ड-खण्ड होता जाता है, जिनसे विविध आकाश गंगा परिवार, आकाशगंगा (Galaxy) और नीहारिकाओं (Nebulae) की रचना होती है। बराबर संघटित हो रहे इस लघु हिरण्यगर्भ का भयानक ताप बढ़ता जाता है; अन्ततः यह दहकता हुआ अत्यन्त पतला लावा बन जाता है;

यह चौथा स्तर आपस् (Liquid) है जिसका विशिष्ट गुण रस है। यहां से तापक्रम घटना प्रारम्भ होता है मन्थर गति से पिण्ड जमने और अपनी एक कल्पित धुरी के चारों ओर घूमने लगता है ; स्वाभाविक ही इसका ध्रुवीय भाग चपटा हो जाता है। प्रायः अभिकेन्द्रीय (Centripetal) बल की अपेक्षा अपकेन्द्रीय (Centrifugal) बल के अधिक होने से, अभी कठोर न हो पाये पिण्ड के मध्य-प्रान्त भाग से एक वलयाकार भाग अलग होकर, गति की जड़ता से पिण्ड के साथ घूमना आरम्भ कर देता है। सर्वत्र समान मोटाई का न होने के कारण स्थूल भाग के पास सिमट आने से, परिमण्डल टूट और स्वतन्त्र पिण्ड बनकर अपनी कक्षीय और धुरीय गति बना लेता है। ग्रहों से इसी प्रकार उपग्रहों की उत्पत्ति होती है। धीरे-धीरे पिण्ड जमकर कठोर हो जाता है : प्रकृति की यह अवस्था पृथ्वी (`olid, ठोस) कही जाती है जिसका प्रमुख लक्षण गन्ध है। उपग्रह, ग्रह और तारे उत्तरोत्तर बड़े होने से इसी क्रम से पृथ्वीभूत होते हैं : सूर्य अभी तैजस और आपस् स्थिति में है ; पृथ्वी (Earth) ठोस हो चुकी है ; और चन्द्रमा पर तो पानी ही नहीं वायुमंडल भी घनीभूत हो चुका तथा वह एक मृतलोक है।

पृथ्वी पर क्रमशः वनस्पति, अन्न, पशु, अमैथुनीय मानवीसृष्टि और फिर सन्तान परम्परा से मानव जाति का विकास होता है।

इस प्रकार असंख्य परमाणुरूप द्रव्यों के संयोजन से विश्व का हर पदार्थ निर्मित है। निश्चित काल (कल्प-४ अरब, ३२ करोड़ वर्ष) के अनन्तर परमाणुओं के पुनः वियोजित हो जाने की स्थिति प्रलय है। नित्य परमाणुओं की तरह सृष्टि और प्रलय का क्रम भी अनादि है।

आचार मीमांसा : महर्षि के समय अनेकों जीवित, मृत सम्प्रदाय धरती के कोने-कोने में थे। लोकायत, श्री रामावत, रामदासी, महानुभाव (हरपालदेव); सनक, उद्धवि (सहजानन्द), टट्टी (हरिदासी), हरिव्यासी ; ब्रह्म गौडीय, पुरुषिया (शंकरदेव), वारकारी (ज्ञानदेव), रुद्र, राधावल्लभ, हितहरिवंश व गोकुलेश, सखीभावक, मार्गी, सिख, कबीरपंथ' दादूपंथ मलूकपंथ, रैदासी, हीनयान, महायान, वज्रयान सहजयान, नाथ, दिगम्बर, श्वेताम्बर आजीवक, खाखी, नकुलीश-पाशुपत, लिंगायत, शैवसिद्धान्त, रसेश्वर, प्रत्यभिज्ञा कापालिक, कालामुख, कौल, समय, मिश्र, यहूदी, कैथोलिक-, प्रोटेस्टेण्ट इसाई, शिया, सुन्नी, सूफी, वहावी अहमदिया, ब्राह्म समाज प्रार्थना समाज असामान्य मेधासम्पन्न व्यक्तियों से लेकर नत्थू खैरे तक हल्दी की दो गांठ लेकर पंसारी की दूकान खोल बैठे थे ऋषि ने इन सभी स्वदेशी तथा विदेशी वेदवाह्य धर्मों पर आक्रमाक बौद्धिक प्रहार किया। भागवत-जैन-बौद्धों की मूर्तिपूजा, तीर्थ श्राद्ध, नवग्रहपूजन, मुसलमानों की कबीर-परस्ती, कबीरपंथियों की गद्दी-खड़ाऊं पूजा तथा सिखों का ग्रन्थ पूजना सभी प्रकार की प्रकृति पूजा का एक साथ विरोध उन्होंने किया। सामूहिक अनुष्ठानो के लिये वैदिक यज्ञों के पुनरुद्धार पर उनकी दृष्टि गयी। "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का उद्घोष करते हुए २००० वर्षों से बन्द वैदिक धर्म का सिहंद्वार मानवमात्र के लिये उन्होंने फिर से खोल दिया। प्राचीन अष्टाध्यायी व्याकरण पद्धति का उद्धार कर जहां उन्होंने संस्कृत को नव जीवन दिया, वहीं अहिन्दीभाषी होते हुए भी सुदृढ़ राष्ट्र की अनुपूरक कल्पना के रूप में, हिन्दी के राष्ट्रभाषा-सम्पर्क भाषा स्तर को सांस्कृतिक आधार देने के लिये उसे आर्यभाषा की अभिधा प्रदान की। दूसरी तरफ लुप्तप्राय संस्कारों, समाज रचना और शिक्षा प्रणाली से लेकर अभिवादन तक का

वैदिक विकल्प उन्होंने प्रस्तुत किया। उन सब का सामान्य परिचय भी यहां दे पाना असम्भव है।

समाज की सहस्त्रों वर्षों की तन्द्रा को एक बार ही में झकझोर डालने के उनके इस प्रयास ने जहां मैक्समूलर, रोम्यारोलां. कर्नल आल्काट एनीबिसेन्ट और अरबिन्द के महिमामय मस्तक को श्रद्धावनत कर दिया वहीं उनके आर्य अनुयायियों को कथित धार्मिक सहिष्णुता के इस आधुनिक युग भ रूढ़ि और पाखण्ड की बलिवेदी पर शतशः रक्तात्क बलिदान देने पड़े। आज उनका वैदिक धर्म किसी अशोक.. कनिष्क, समुद्रगुप्त . चन्द्रगुप्त अबूबकर और जस्टीनियन के राज्याश्रय बिना ही. मन्द किन्तु सतत गति से भूमण्डल पर फैलता जा रहा है।

बंबई शताब्दी समारोह सफल बनाएं।

देश विदेश के आर्य समाजों के लिए यह शक्ति प्रदर्शन का अनुपम अवसर है। भारत के कोने-कोने में वैदिक नाद गुंजाने का संकल्प लेने के लिए बम्बई शताब्दी समारोह सफल बनाइये और बम्बई भारी संख्या में पहुंचिए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आयोजित इस महान सम्मेलन का परिणाम नए उत्साह और उमंग को जन्म देगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

संगठन की गोरव गरिमा को प्रगट करने के लिए बम्बई पहुंचने की तैयारी कीजिए।

और संकल्प लीजिए कुछ करने का। आगे बढ़ने का। महर्षि के दिव्य स्वप्न पूर्ण करने का।

भारतेन्द्र नाथ अध्यक्ष **रत्न सिंह एम० ए०** मंत्री

भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली-५.

सहयोगी होने का इच्छुक हूँ......

आपने "उत्तराधिकारी" के लिए पुन जुलाई में अपील छपवाई हैं। मैं उत्तराधिकारी तो होने का इच्छुक नही। क्यों कि मेरी ओयु इस समय साठ के लगभग हैं। और मैं आपकी दीर्घायु के लिए प्रार्थी हूं। आप जैसे ब्राह्मण विद्वान विरले ही उत्पन्न होते है। मैं तो सहयोगी हो सकता हूं।

डा० परमानन्द एम०ए०पी०एच०डी०
फरीदाबाद

श्रीराम का चरित्र

—श्री अनूप सिंह आर्य, एम०ए०

कहावत है जादू वह जो सिर चढ़कर बोले। उत्तम चरित्र उसका है जिसकी प्रशंसा विरोधी भी करे। श्री राम के उज्जवल चरित्र का रावण के ऊपर कितना प्रभाव था इसका उदाहरण देखिए —

रावण जब अनेक उपाय करके भी सीता को अपने अनुकूल नहीं कर सका, तो कुम्भकर्ण समझाता है—

तुम राम कौ रूप अनूप धरी, पुनि जावहु वेगि सिया ढिग भाई।
मिलि है भरि अंक में दौरि तुम्हें जिय जानि सिया सुपिया रघुराई ॥
रावण उत्तर देता—तुम्हारा उपाय तो सुन्दर है पर
यह कारज हूं करि देखि लियो, नहिं पाय सक्यो किंचित सफलाई।
जब राम को रूप बनावत हौं, तब मातुसी दीखति नारि पराई ॥

धन्य है राम तुम्हारा यह उज्ज्वल चरित्र। आपका रूप धारण करने वाला रावण भी पर नारी में माता का रूप देखता है।

पितृभक्ति मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम जब पिता जी से वन की ओर जाने की आज्ञा लेने उनके पास गए तो उन्होंने कहा—

अह राघव कैकय्या वरदानेन मोहितः।
अयोध्यायां त्वमेवाद्य भव राजा निगृह्य माम् ॥

अर्थात् हे राम ! मैं कैकेयी को वरदान देकर उसमें फंस गया हूं। तुम मुझे जेल में डालकर अयोध्या के राजा बनो !

पूज्य पिताश्री की आज्ञा सुनकर श्री राम हाथ जोड़ कर उत्तर देते हैं

भवान् वर्ष सहस्त्राय पृथिव्या नृपते पतिः।
अहं त्वरण्ये वत्स्यामि न मे राजस्य कांक्षिता ॥

अर्थात् — पिताजी आप सहस्त्रों वर्षों तक राजा बनकर पृथ्वी पर शासन करें। मैं तो अब वन में जाकर ही निवास करूंगा। मुझे राज्य की आकांक्षा नहीं है।

स्वदेशभक्ति— श्रीराम अपने भ्राता लक्ष्मण जी को मातृभूमि स्वर्ग से भी ऊंचा बताते हुए कहते हैं —

अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ॥

श्रीराम सुख दुःख में सदैव एक से रहते थे।
देखिए आदि कवि श्री बाल्मीकि जी लिखते हैं—

आहूतस्याभिषेकाय विसृष्टस्य वनाय च।
न मया लक्षितस्तस्य स्वल्पोऽप्याकार विभ्रमः ॥

अर्थात् राज्याभिषेकार्थ बुलाए हुए और वन के लिए विदा किए हुए श्रीराम के मुख के आकार में मैंने कुछ भी अन्तर नहीं देखा।

यह है श्री राम के चरित्र का जाज्वल्यमान चित्र।

जगद्गुरू महर्षि दयानन्द

[१]

मृतप्राय राष्ट्र को सौमित्र की यदि संज्ञा दें
तब तो महर्षि [मानो] वैद्य श्री सुषेण हैं।
स्वर्णिम अतीत के महान दिग्दर्शक ऋषि
आर्य गायिकी के एकमात्र तानसेन हैं।
सकल सत्य सार पर विचार ऐसे तरल 'सरल'
अमल धवल जैसे सागर के फेन हैं।
देश भक्त वीरों की प्रेरणा के मूल स्रोत
गांधी, गांधीवाद दयानन्द जी की देन हैं।

[२]

वल्लरी की भांति विटप विटप लसी रहती थी
किन्तु आज अपना आधार लिए खड़ी है।
कल की बेचारी ये अनारी नारी आज देखो
कैम्ब्रिज, आक्सफोर्ड और हैरो तक पढ़ी है।
कहते थे महर्षि सृष्टि स्वर्ण मुद्रिका है ता मे
रत्न नारि जगमग नगीना सी जड़ी है।
श्रीमती गांधी हों, सरोजिनी या साराभाई
आज की ये नारी ऋषि दयानन्द जी की ऋणी हैं।

[३]

चलो चलें भागि आलि चली न कुचालि अब
कहें डिवहार ओर संहार कहें काली से।
छाया उजियार अंधकार भागा भागा फिरे
लटकि रहे उल्टे उलूक डाली डाली से।
ऋषि की ललकार से सिंगार सब सूने हुए
कांपे कर मदिरा गई छलक स्वर्ण प्याली से।
भस्म हुए अत्याचार, अनाचार, वामाचार
ऐसी आग निकली दयानन्द की दुनाली से।

[४]

महर्षि दयानन्द की अवतारणा से पूर्व 'सरल'
आर्यावर्त विश्व का गुलाम और चेरा था ।
सारी आर्य अस्मिता कलंकिनी कहलाती थी
नगर, घाट, बाट में बुराइयों का डेरा था ।
देश के दुर्भाग्य की नकेल पकड़ ऋषिवर ने
बरबंस मुंख उसका शुभ गति की ओर फेरा था ।
राष्ट्र के विधायक जन नायक सदा याद रखें
राष्ट्र शब्द ऋषि ने ही सर्वप्रथस टेरा था ।

[५]

पीते स्वयं कालकूट औरों को पिलाते अमृत
शूल सब संहारि 'सरल' पुष्प बीज बोते थे ।
भारत के दामन में दाग कहीं दिखता तो
ऋषिवर उन्हें पटकि पटकि कर धोते थे ।
दिन में दिनमान से जाज्वल्यमान तपःश्त
पल भर भी शांति की न नींद कभी सोते थे ।
दीन हीन दशा देखि स्वजन की स्वदेश की
सारी सारी रात देव दयानन्द रोते थे ।

[६]

ऋषि थे, राजर्षि थे महर्षि थे वे भारत के
फख्र थे अवाम के इस सरजमीं के नाज थे ।
जन जन के प्राणों में पांचजन्य फूक दें
उर को आन्दोलित करने वाले एक साज थे ।
राजगुरु, बिस्मिल, आजाद के आदर्श पुरुष
बड़े बड़े राजों महाराजों के सरताज थे ।
विश्व के विद्वान एक स्वर से यही कहते हैं
महर्षि सारे मनुज समाज के जहाज थे ।

[७]

स्वतंत्रता संग्राम के वे सर्वप्रथम योद्धा थे
काल आंग्ल सत्ता के निमित्त महाकाल थे ।
अभिनव इतिहास पुरुष राष्ट्र की धरोहर और
भारती की ग्रीवा के मंजु मुक्तामाल थे ।
ढाल थे दयानन्द दीनों और दलितों के
घोर अंधकार में वे प्रज्वलित मशाल थे ।
उनके प्रगति पथ के ही पथिक थे गांधी जी'
उनके ही मानस पुत्र लाल, बाल, पाल थे ।

[८]

जहां भी विष वल्ली अमृत विटप वहीं फलते हैं
कूट काल गति से वे छूट नहीं पाएंगे।
देव दयानन्द के दमामे के वज्र बोल
झींगुर झन्कार में यों डूब नहीं जाएंगे।
जब भी आर्यावर्त को तुलनात्मक समीक्षा होगी
निश्चय 'विषपायी' के ये ढंग रंग लाएंमे।
जिस दिन नव्य भारत का इतिहास लिखा जाएगा
महर्षि मानवता के मसीहा कहे जाएंगे।

[६]

नीरज को सूरज से मिलता सुहास सदा
पाये हैं मस्ती मधुप पुष्प के मकरन्द से।
स्वाति बिन्दु पाकर दुख भूल जाता चातक और
पाती चकोरी सुख पूनम के चन्द से।
खिलती है चन्द्रिका से काली उजियाली रात
कवियों का भाव जगत खिलता मृदुछन्द से।
असमय में त्राण मिलेमहा महिम प्राण मिले
रोगी राष्ट्र काया को योगी दयानन्द से।

[१०]

वज्र सा शरीर ब्रह्मचर्य का अखंड व्रत
वेष वीतराग आग उर में छिपाए थे।
संस्कृति के त्राता उद्गाता आर्य गरिमा के
अन्त में स्वप्नमयी संससृति बसाये थे।
अद्भुत अवधूत पूत पावन चरित्र और
लोकोद्धार के हित ऋषि जीवन धन पाए थे।
आये थे वरदानी औढरदानी देव दयानन्द
अखिल मनुष्यत्व को देवत्व देने आए थे।

[११]

समय को बदल दें और मल दें कान काठहु के
दुष्टों को दल दें देव दयानन्द उनमें थे।
सन्त थे, सुधारक थे, आर्य कुल कमल और
साक्षात् सिंह सदृश बसते 'ब्रह्म वन' में थे।
महाप्राण, महामहिम, महाशक्ति धारी ऋषि,
सबसे अमूल्य बहुमूल्य जीवन धन में थे।
समझ में न आता न बताता कभी कोई 'सरल'
कैसी थी यह माता जिससे दयानन्द जन्मे थे॥

—ऋषिराम तिवारी 'सरल'

चरित्र बल और समाज

—रा० सिं० कुशवाहा

चरित्र ही समाजरूपी वृक्ष का मूलय है। जिस भांति सुदृढ़ मूल पर ही वृक्ष का खड़ा रहना अवलम्बिक है, उसी भांति समाज रूपी वृक्ष की सुदृढ़ता के लिए चरित्र रूपी मूल का सुदृढ़ होना नितान्त आवश्यक है।

वृद्धजन इस समाज वृक्ष का तना है, युवक है डालियां और दुध मुंहे बालक बालिकाएं हैं कोंपल फूल और फल। जिस प्रकार मूल पर वज्र प्रहार होने से वृक्ष सूखकर धराशायी हो जाता है, फल.फूल कोंपलें और पत्ते सभी मुरझा जाते हैं, उसी भांति चरित्र रूपी मूल के पराभव की स्थिति में समाज वृक्ष भी बहुत समय तक खड़ा नही रह सकता। अतएव स्वस्थ, सबल और प्रभावी समाज रचना हेतु चरित्र बल रूपी मूल की संवर्धन अनिवार्य है। समाज शरीर को बलवान व स्वस्थ बनाए रखने के साथ यह भी आवश्यक है कि मनुष्य का चरित्र पवित्र हो। चरित्रहीन बलवान, पशु से भी बुरा है। वह तो समाज और परिवार का शत्रु है। और मनुष्य कहलाने के योग्य नहीं।

यजुर्वेद ४/२८ में भगवान से यह प्रार्थना की गई है कि:--

परिमाग्ने दुश्चरिताद बाधस्वा मा सुचरिते भज।
उदायुषा स्वायुषोदस्थाम मृतांऽअनु ।।

"हे अग्ने ! मुझे दुश्चरित से सदा बचाते रहो और सुचरित में सदा चलाते में रहो, जिससे उच्च जीवन और पवित्र जीवन के साथ देवत्व की ओर बढ़ूं।"

आप निश्चय करें कि किसके साथी बनना चाहते हैं ? देवताओं के या असुरों के। इस निश्चय के पश्चात् यदि देवों का साथी बनना पसन्द किया है तो चरित्र पवित्र बनाना ही होगा। चरित्र का नाश करने वाली जो बातें हैं। वेद ने उनका निषेद किया है हमें भी उनका निषेद करना चाहिए।

(१) सुरापान तथा बुद्धि विनाशक अन्य मादक द्रव्यों का सेवन न करें (ऋगवेद ७/८६/६२)

(२) मांस,अंडा आदि अभक्ष्य पदार्थ न खायें। (अथर्ववेद ८/६/२३)

(३) द्यूत (जुआ) न खेलें। (ऋगवेद १०/३४/१२)

(४) व्यभिचार न करें। (ऋगवेद ४/५/५)

(५) दुसरे का अधिकार अन्न. धन न छीनें।

सब से सदव्यवहार करें और सब से बढ़कर यह कि किसी से द्रोह न करें। पवित्र चरित्र वाला ही शीलवान कहलाता है। शील के सम्बन्ध में कहा गया है।

अद्रोही: सर्वभूतेषु कर्मणा मनसा गिरा।
अनुग्रहश्च, ज्ञानं च शीलमेतद विदुर्बुधाः।

"मन' वाणी और कर्म के द्वारा प्राणधारियों के विषय में द्रोह रहित रहना और सब के मेल में रहना, व ज्ञान को बढ़ाते रहना बुद्धिमान लोग इसको शील (चरित्र आचार) कहते है।

येषां न विद्या न तपो न दानम्।
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः॥
ते मर्त्य लोके भुविभार भूतः।
मनुष्य रूपेड मृगाश्चरन्ति॥

जिस पुरुष के पास विद्या,तप,दान,ज्ञान,शील (जिसको चरित्र कहा गया है) नहीं है, वे पृथ्वी के भार होकर पशु की भाँति जीवन यापन करते हैं।

आचारहीन के लिए कहीं कोई ठिकाना नहीं है। क्यों कि –

आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः
"जो आचार से हीन हैं उसे वेद भी पवित्र नहीं कहते

आचारः प्रथमो धर्मः आचारः परमं तपः।
आचारः परमं ज्ञानम् आचारात किम न साध्यते।

"आचार पहला धर्म है। और सब से बढ कर तप, अच्छा ज्ञान है। आचार से क्या नहीं सिद्ध हो सकता है? इस लिए पूरी सावधानी से चरित्र की रक्षा करो क्यों कि अन्यथा परिणाम बहुत ही भयंकर होते हैं। किसी विद्वान ने कहा है कि—

दुराचारो हि पुरुषो लोके भवति निन्दितः।
दुःख भागी च सततं व्याधितोऽल्पायुरेव च।

जो दुष्टाचारी पुरुष होता है। उसकीस वंत्र निन्दा होती है। वह निन्दा होने से बहुत से दुखों को भोगता है। रोगग्रस्त हो जाता है। अल्पायु को भी प्राप्त करता है। यदि इन सब दुष्टपरिणामों से बचना चाहते हो चरित्र की रक्षा यत्नपूर्वक करो

क्यों कि महाभारत में यह आदेश है कि—

वृत्तं यत्नेन संरक्षेद वित्तमेति च याति च।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः।

"वृत (चरित्र) की यत्नपूर्वक रक्षा करो। वित्त (धन) तो आता है और जाता है। वित्त (धन) से क्षीण हुआ क्षीण नहीं, परन्तु वृत्त (चरित्र) से क्षीण हुआ मरे के तुल्य है।

आधुनिक काल में तो सब कुछ वित्त (धन) को ही समझ लिया गया है। परन्तु पुराने समय में ऐसा नहीं था। अब तो वृत्त (चरित्र) का स्थान वित्त (धन) ने ले लिया है। चक्की उलटी चलने लगी है।

आधुनिक सभ्यता के प्रेमी बड़े गर्व से कहते हैं कि हम जनता का जीवन स्तर ऊंचा उठाना चाहते हैं। परन्तु इसका "जीवन स्तर' केवल भौतिक शरीर तक ही सीमित है। इससे आगे नहीं। सुन्दर वस्त्र पहनना, योग के आसनों तथा व्यायाम के स्थान पर बेडमिन्टन इत्यादि खेलना, भोजनशाला में बैठकर भोजन करने के बजाय हाल में मेज लगाकर भोजन करना, सत्संग में जाकर प्रभुकीर्तन करने के बजाय क्लब घर में जाकर जुआ खेलना मादक द्रव्यों का सेवन करना, मांस अन्डों का प्रयोग करना, फिल्मी अश्लील गीतों का गाना आदि को 'जीवन स्तर' ऊचा उठाने का साधन समझ लिया गया है। ऐसे साधनों से 'जीवन स्तर ऊंचा हो रहा है'। या नीचा? हाँ थालियाँ तथा प्लेटें निसन्देह ही ऊंची हो गयी हैं। वे चौके से उठकर मेज पर आ चुकी हैं। परन्तु जीवन गिरा ही है। जीवन स्तर ऊंचा होने का अर्थ

शील हीन पुरुष को किस प्रकार निकृष्ट ठहराया गया हैं वह देखिए।

तो यह है कि सदैव सादगी से रहें। दूर तक सोचें, जीवन में नम्रता हो, सत्य, सेवा स्वाध्याय तथा सद- व्यवहार की ज्योति चमकने लगे।

आज तो जीवन स्तर धन से मापा जाता है। धन एकत्र करने के लिए हर प्रकार का छल कपट अन्याय होने लगा है। इसने चरित्र का सर्वनाश कर दिया। इसे पूर्ण प्रयत्न से बदलना होगा। जहां आपने आप को पवित्र चरित्र वाला बनाना होगा जहां मनुष्य समाज पर भी यही रंग चढ़ाना होगा, दानवता को हटा कर मनुष्यता को लाना होगा। वेद भगवान का यह आदेश है।

ओ३म् प्रत्नान्मानादध्या ये समस्वरन्।
श्लोकयन्त्रासो रमसस्य मन्तवः।
आपानक्षासो बधिरा अहासत।
ऋतस्य पन्था न तरन्ति दुष्कृतः।

"परमदेव परमात्मा की ओर से विचित्र शक्तियां उठती रहती हैं। भक्ति भाव और प्रेरणा वाले उन्हें पहचानते हैं। अन्धों और बहरों की यहां पहुंच नहीं दुष्कर्मी सत्य मार्ग को पार नहीं कर सकते।"

ओ३म ऋतस्य गोपा न दभाय।
सुक्रतु स्त्री पवित्रता हृदयन्तरा दधे।
विद्वान्त्स विश्या भुवनाभि पश्य -
त्यवाजुष्ठान् विध्यति कर्ते अव्रतान॥ ऋगवेद ९-७३-८

'सत्य के पालक प्रभु का बल अदभुत है। उसे कौन ठग सकता है? वह अत्यन्त शुद्ध बारीक शोध वाला है उससे कुछ छिपा नही। आचरण हीन लोगों से उसका प्रेम नहीं होता, इस लिए उनका विकास रुका रहता है।'

ओइम् ऋतस्य तन्तुर्विततः पवित्रआ।
आ जिह्वाया अग्रे वरुणस्य मायया॥
धीराश्चित् तत् समिनक्षन्त आशताऽत्रा।
कर्तमव पदात्य प्रभुः॥ ऋग्वेद ९-७३-९

जहां पर शुद्ध व्यवहार है, वहां सत्य का सूत्र विद्यमान है। पापनाशक भगवान की विचित्र शक्ति से (यह सूत्र हृदय में पैदा होकर) जिह्वा के सिरों तक पहुंचाता है। सुकर्मी लोग इसे भली प्रकार पा सकते हैं। कुकर्मी, कर्महीन का मार्ग नीचे की ओर जा रहा है।

'आचार पहला धर्म है' इस लिए सब को इसकी यत्न पूर्वक रक्षा करनी चाहिए। यह संसार फिसलनी घाटी है। यदि जीवन यात्रा में पांव फिसल जाए और न चाहते हुए भी चरित्र में कमजोरी आने लगे, तो प्रभु के चरणों में अपना शीश झुका कर उससे प्रार्थना करो।—

ओ३म यन्मे छिद्रं चक्षुतुषो हृदयस्य मनसो वाति तृण्णभ।
बृहस्पतिर्मे तद दधातु शन्नो भवतु भुवनस्य यस्यपति॥(यजुर्वेद ३६-२)

'जो मेरी आंखों का छिद्र (दोष) है अथवा मेरे हृदय का तथा मन को जो गहरा गड्ड़ा है, हे बृहस्पति भगवान वह भर दो। हमारे लिए कल्याणकारी बनो।, आप सब के स्वामी हैं। हे भगवान मुझे आवश्यक पदार्थ को प्रदान करके व्यभिचार से बचाकर उन्नति के मार्ग की ओर अग्रसर करो। मैं चिरऋणी रहूँगा।

वेद-प्रचार यज्ञ में प्राप्त आहुतियां

१००१) की आहुति देने वाले महानुभाव

१ श्रीमती माता आज्ञावती जी, अमृतसर
१ वेदप्रचार सभा, अफ्रीका

५०१) देने वाले महानुभाव

१ स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती, इलाहाबाद
२ श्रीमती गायत्री देवी भदोला,
३ श्री मूलचन्द गर्ग बम्बई (स्व० कु० मधुलता गर्ग की याद में)
४ श्रीमती डा० गायत्री त्यागी, सहारनपुर (पूज्या माता श्री मती जावित्री देवी की पुण्य स्मृति में)
५ श्री घनश्यामदास भट्टे वाले, सरधना
६ श्री जगदीश चौधरी, मुजफ्फरपुर (स्वर्गीय पिता श्री फुदेनी चौधरी की स्मृति में)

फुटकर दान देने वाले महानुभाव

१	श्री जगदीश विद्यार्थी जी के सन्यास ग्रहण के अवसर पर प्राप्त दान	१२१६-०५
२	आर्य समाज नारायणगढ़,	२०१)
3	Shri Shiwtahall, Guyana—	१६६.६६
४	श्री सत्यदेव गुप्त, इटावा,	१५१)
५	श्री मती शंशाक मंजरी देवी, हजारी बाग	१५०)
६	श्री सच्चिदानन्द सिन्हा, कुजू	१५०)
७	श्री बलदेव वानप्रस्थी चाँदपुर	१५०)
८	श्री बीरबल सिंह, ग्याना	७२.८१
९	श्री त्रिलोक चन्द्र, मुरादाबाद	६२)
१०	श्री अष्टभुजा प्रसाद गुप्त, कछवाँ	६२)
११	श्री रुद्रदत्त शुक्ल कानपुर,	४४)
१२	श्री राधा कृष्ण, बीकानेर	४२)
१३	श्री टी० डी० आर्य, रामपुर कलाँ	३९)
१४	श्री विद्यारत्न गुड़गाँव	३६)
१५	श्री रमेशचन्द्र, शिमला	२७)
१६	श्री बलबीरसिंह आर्य, इस्मायला	२६)

१७	श्री केदारनाथ शर्मा, खण्डवा	२२)
१८	श्री बनवारी लाल गुप्त, दिल्ली	२२)
१९	श्री हरीशचन्द्र एडवोकेट, मुजफ्फर नगर	५५)
२०	श्री सत्यपाल तपोध्याय, अमृतसर	२२)
२१	श्री मेहर चन्द, मुजफ्फर नगर	१४.६०
२२	श्री टी० डी० आर्य, रामपुर कलाँ द्वारा संग्रहीत	१३)
२३	श्री गनपत सिंह, दुर्गापुर	१७)
२४	श्री जीवबाज धर्मचन्द, डूंगरनगर	१२)
२५	श्री रामसिंह लीलाधर, रिवाड़ी	१२)
२६	श्री ओमप्रकाश जी, उन्नाव	२६)
२७	चौ० हरफूल सिंह साधू, हिसार	१०.५०
२८	डा० एस० पी० आर्य, रायपुर	९.९९
२९	श्री ओमप्रकाश, मन्त्री आ० स० ब्यावर	९)
३०	श्री ओमप्रकाश कपूर, डोराण्डा	३०)
३१	श्री यू० एस० सन्तोषी, रावतपुर	६०)
३२	श्री राम लखन आर्य, रीवाँ	५.२५
३३	श्री राम शरणत्यागी, मुजफ्फरनगर	४.६०
३४	श्री हरिनारायण शर्मा, मंगापुर	४)
३५	श्री मणि भूषण श्रेष्ठ, शीतलमाभा	३)
३६	श्री शिवराम बहल, मण्डी	३)
३७	डा० कन्हैयालाल आर्य, बहराइच	३)
३८	श्री जे० पी० पगारे, रतलाम	३)

१००) देने वाले महानुभाव

१ श्री राजकुमार आर्य, हिसार, २ डा० अरुणा भगोत्रा, जम्मू ३ श्री हरीनगर डूंगर मिल्स बम्बई ४ श्री जे०आर० सचदेव, अमृतसर ५ श्री रोशनलाल, नीलीखेड़ी ६ श्री पेस्ताव प्रधान, नवादा ७ श्री बीड़ीपुरी, तरनतारन ८ श्री चनिदयाल तिवारी, फतेहगढ़ ९ श्री गजेन्द्र आर्य, कलकत्ता।

१०१) देने वाले महानुभाव

१ श्री स्वामी योगेश्वरानन्दजी महाराज, ऋषिकेश २ श्री वी०एस० शर्मा, बम्बई ३ श्री आर्य भिक्षु जी, ज्वालापुर ४ श्रीमति चंपारानी ओमप्रकाश द्वारा आर्य सतसंग, उस्मान नगर से संग्रहीत ५ श्री तुलसी राम हिसार, ६ श्री सागरमल गोयल गाजियाबाद ७ श्री बूटाशाह रामलाल जम्मू ८ श्री भंवरसिंह, मुजफ्फरनगर।

५०) देने वाले महानुभाव

१ श्री चन्द्रोदय नारायण, बाढ़ २ श्री मोतीलाल भाटिया, जैसलमेर, ३ श्री पी० आर० टण्डन महेपाना ४ श्री मती शांतिदेवी खोसला, कोटा ५ श्री ईश्वर प्रसाद शर्मा, ओंकारपुर ६ श्री लल्लूसिंह, पीलीभीत ७ श्री जगदीशवरानन्द, मेरठ ८ श्री प्रहलादप्रसाद, गर्ग भरतपुर ९ श्री वीर सिंह व्यूकरवी, शाहजहांपुर १० श्री रामप्रकाश, रोहतक।

५१) देने वाले महानुभाव

१ श्री बाबू राम शर्मा, लखनऊ २ श्रीमती चम्पादेवी आर्य, कलकत्ता ३ श्री जी० आर० आहूजा, पूना ४ श्रीब्रह्म सेवक अवस्थी, कानपुर ५ श्री बारूसिंह, मुजफ्फरनगर ६ श्री ए० एल० वर्मा, भोपाल ७ श्री रामप्रताप ब्रजमोहन, कलकत्ता ८ श्री नन्दकुमार इन्दौर ९ श्री के० बी० पंडित, सूरतकल १० श्रीमती स्वराज्य सेठी, बम्बई (पुत्री के विवाह पर) ११ श्री जगमोहन लाल खन्ना, राजौरीगार्डन १२ श्री ओमप्रकाश श्रीवास्तव विदिशा १३ श्रीके०डी० सेठी भोपाल १४ श्री विन्देश्वरीप्रसाद, डालटनगंज १५ श्री बाँकेलाल आर्य आजमगढ़ १६ श्री हैडमास्टर एस० एच० स्कूल अम्बाला, १७ श्री बालकृष्ण गुना १८ श्री द्वारका प्रसाद मिश्र ग्वालियर १९ श्री ठा० देवेन्द्रसिंह भरोलीकंला २० श्री बलरामसिंह, भीलमपुरा २१ श्री मेजर एच० एस० गुरु ंग धर्मशाला २२ श्री मती सरोज आर्य, साकेत २३ उच्च विद्यालय, बढ़ौना ।

३१) देने वाले महानुभाव

१ श्री मिट्ठन लाल रामकिशन, किनारी बाजार २ श्री दिव्य ज्योति कपिल, दिल्ली ३ श्री सुधांशु कपिल, दिल्ली ४ श्री छोटेलाल, सीतापुर ५ श्री जयन्तवी कोटेचा पोरबन्दर ६ श्री सत्यप्रकाश आर्य लखनऊ ।

३०) देने वाले महानुभाव

१ श्री महेन्द्रपाल रस्तोगी, कांकेर २ डा० स्वामी दयाल वर्मा, लखनऊ ३ श्रीनागेश दत्त झा, जगदलपुर ४ श्री आर्ययुवक परिषद, दिल्ली ५ श्री मोहन वस्त्र भन्डार जालना ।

२५) देने वाले महानुभाव

१ श्री गोविन्द दास, सीतापुर २ श्री धनपालसिंह, बरेली ३ श्री कृपाराम आर्य, बहादराबाद ४ श्री हरीशचन्द्र अग्रवाल, टाण्डा ५ श्री लक्ष्मणदास बत्रा ६ श्री जगराम आर्य ५६ए. पी. ओ. ७ श्रीजयकृष्ण तिरहूक, ज्वाला ८ श्री अवध किशोर जी मंत्री गोला ९ श्री केशवलाल जी, खेदर १० श्री एन०के०रामदत्त५६।ए पी०ओ० ११ श्रीतेजू कुम्हार, कुँसडा १२ श्री चरणसिंह, रेणुकूट १३ श्री छोटे लाल गुप्त, जौनपुर १४ श्री बसगीतसिंह, गाजीपुर १५ श्री लक्ष्मी चन्द विजय कुमार, मंगलौर टाऊन १६ श्री दयाराम सिंह, नरौरा १७ श्रीमती विद्यावती खन्ना, अमृतसर १८ आशादेवी चण्डीगढ़ १९ श्री एस० एन० सोंधी नई, दिल्ली २० श्री मुन्नालाल सुरेन्द्र प्रताप, विण्ढमगंज २१ श्री भँवर लाल कोटा २२ श्री पुरुषोत्तम लालदास हिलसा २३ श्री लक्ष्मणराव आर्य निजामाबाद २४ श्री बी० एन० चौबे हैदराबाद २५ श्री कालू राममाली देहरादून २६ श्री लक्ष्मण सिंह राठौर दादर २७ श्री सुदामा प्रसाद, खुर्द २८ श्री अम्बालाल जी आर्य, मन्दसौर २९ मैनेजर स्टेटबैंक ऑफ इण्डिया बम्बई ३० श्री दीनानाथ चोपड़ा, राजेन्द्रनगर ३१ श्री जगदीश प्रसाद, रामस्नेही घाट ३२ श्रीसुनहरासिंह, गोहाना, ३३ श्री एच०वी० महत्ता, खड़कवासला ३४ श्री प्रद्युम्न कुमार जिज्ञासु, बड़ौदा ३५ श्री गिरधारीलाल, बराकर ३६ सरोज व स्वर्ण तलवार सम्बलपुर ३७ श्री बनारसी प्रसाद गुप्त, विजनौर ३८ श्री कृष्णराय, आजमगढ़ ।

२१) देने वाले महानुभाव

१ श्री तेजसिंह त्यागी, गाजियाबाद २ श्री कमल नयन सरायगी, कलकत्ता ३ श्री राजेश्वरप्रसाद सिंह, माजेपुर ४ श्री बृजलाल, कारो ५ श्री आर० पी० सिंह, गिरिजापुरी ६ ७ मै० बकंटलाल नहालाल, बीड़ ८ श्री प्रेमचन्द, रामसिंहपुर ९ डा० सत्यदेव, टंकारा १० श्री ए० एल० सोनी, मझोली ११ श्री महेशचन्द्र अग्रवाल, आगरा १२ श्री सत्यप्रकाश, कुलड़ी १३ श्री नन्दकिशोर वैद्य, ज्वालामुखी १४ श्री दिलबाग राय मलिक, रा० प्र० बाग १५ श्री ओमप्रकाश शर्मा, दरियागज १६ श्री यशपाल पेन्टर, झज्जर १७ श्री प्रणपालसिंह राजा, मुजफ्फरनगर १८ श्री सूबेसिंह, चिड़ी १९ श्री राधेश्याम गुप्त, दिल्ली २० मेजर धर्मवीर जी, दिल्ली २१ गुप्त दान, हापुड़ २२ श्री विशम्भरदयाल, गुड़गाँव २३ श्री सूरजप्रकाश, कठआ २४ श्री जगतराम आर्य, सहारनपुर २५ श्री बनवारी लाल गुप्त, दिल्ली २६ डा० एन० के० वासुदेव, दिल्ली २७ श्री ज्वालाप्रसाद अग्रवाल, जलगाँव २८ श्री वंशीलाल, मेरठ २९ श्री महावीरप्रसाद, शाहजहाँपुर ३० श्री नानक चन्द रस्तौगी, पिथोरागढ़ ३१ श्री मदनलाल जुनेजा, खतौली ३२ श्रीमती शकुन्तला, गुड़गांव ३३ श्री त्रिलोकचन्द हुक्मचंद, खास कुटेसरा ३४ श्री मोतीराम, मुजफ्फरनगर ३५ श्री जगदीश प्रसाद, ब्यावर ३६ श्री रामकुमार अग्रवाल, भिण्ड ३७ श्री कान्ति चंद बंसल, कासगंज ३८ श्री बालकृष्णदत्त, गुना ३९ श्रीमती सुशोभित गुप्ता, कलकत्ता ४० मालिक सौप फैक्ट्री, अलीगढ़ ४१ सर्वश्री दुर्गाप्रसाद मगनीराम, सागर ४२ श्री नन्दलाल, मण्डी ४३ श्री भगवान एण्ड कं०, आगरा ४४ श्री रामधन दास, फीरोजपुर ४५ श्री आर० सी० पतरी, भुवनेश्वर

२० रुपये देने वाले महानुभाव

१ श्री महादेव प्रसाद आर्य, कटैया २ श्री ओमप्रकाश कपूर, राँची ४ श्री राधेश्याम आर्य, फतुहा ४ श्री यशवन्तराव गंगाराम, अकोला ५ श्री कृष्णलाल, नय्यनांगल ६ श्री बी० देवेन्द्र मलया, बेलूर ७ श्री टी० आर० तनया, मौरिसनगर ८ श्री रामचन्द्र महाजन, चंडीगढ़ ९ श्री रामचन्द्रदेवी भीलवाड़ा १० श्री केशव जैन, टोगी। ११ श्री न्यादरमल वेदप्रकाश, गुलावठी १२ लेफ्टिनेंट कर्नल के. वी., पूना १३ श्री राधाकृष्ण आर्य, पटियाला १४ श्री कपिलदेव द्विवेदी, वाराणसी १५ श्री भोलाराम आर्य, सहारनपुर

१५ रुपये देने वाले महानुभाव

१ श्री मुरारीलाल जी, जालन्धर २ श्री खेमचन्द ग्रन्दल, कोटा ३ श्री मिश्री लाल, बाराबकी ४ श्री शिवनारायण शर्मा, इलाहाबाद ५ श्री रामपाल आर्य, खमूआरा ६ श्री रामलखन, खमूआरा ७ श्री राम प्रकाश वर्मा, फर्रुखाबाद ८ श्री बिराक हौर, कटक ९ श्री कै० निरंजन सिंह, मेरठ १० आर्य समाज, कालका ११ श्री प्रेम चन्द, गंगानगर १२ श्री अहिवरण सिंह, मंदसौर १३ श्री किशनलालजी गुप्त, थाना १४ कु० तारावती कोहली, नई दिल्ली १५ श्री डा० स्वामीनाथ शर्मा, बम्बई १६ श्री भीखाना पहाड़ी, पटना १७ श्री वेदप्रकाश गर्ग, संगरूर १८ श्री

निवासजी, मोदीनगर १९ श्री छगनलाल, ब्यावर २० श्री प्रेमचन्द, गंगानगर २० श्री बीरसिंह, शाहजहाँपुर २२ श्री राधाकृष्ण ब्रह्म, पथरगामा २३ श्री हरिशचन्द्र वर्मा, मुरारई २४ सर्वश्री सुरेशपाल सत्यपाल, रन्देढ़ा २५ श्री अचपल सिंह त्यागी, मुजफ्फर-नगर २६ श्री नत्थूराम, जालंधर २७ श्री बाबूराम अन्तार, धौलपुर २८ श्री रत्नाकर वर्मा, मेरठ २९ श्री देव नन्दन सिंह, भोजपुर ३० श्री राजेश्वर तीवारी, पलामू ।

२१ रुपये देने वाले महानुभाव

१ श्री प्रेम सिंह, दिल्ली २ श्री बद्रीप्रसाद किशोरीलाल, खैरथल मण्डी ३ डा० लक्ष्मी चन्द्र पांडे, मेरठ ४ वैद्य भूमा सिंह आर्य, कुरली ५ श्री मोहनसिंह जी, दिल्ली ६ श्री मिश्री लाल शर्मा, मेदनीपुर ७ श्री बिहारीलाल गनेश प्रसाद, भोपाल ८ सर्वश्री लच्छूराम विनोद कुमार, सहारनपुर ९ श्री दिलबाग राय, दिल्ली १० श्री गोविन्द लाल, हाथरस ११ श्री ब्रह्मस्वरूप सक्सेना, इलाहाबाद १२ श्री रमाकान्त गुप्त, भाटपार १३ श्री एस० सी० पैलिडोन, कुक्षी १४ श्री के० श्रीनिवास, बाँसवाड़ा १५ श्री विष्णुप्रसाद अग्रवाल, खरोरा १६ श्री वी. के. राहोलकर शाहबाद १७ आर्य स्त्री समाज, दिल्ली १८ श्रीमती सरोज दुआ, नई दिल्ली १९ श्री शरदचन्द्र पालिया, उमरेड २० श्री हरपालसिंह, सिसौली २१ श्री अप्पाराव ज्ञानोबाआर्य, धौड़वाड़ो २२ श्री हरिनारायण लाल, कुकटा २३ श्री जगदीश प्रसाद शर्मा, रायगंज २४ श्री परमेश्वर दास, टुंडला २५ श्री गोविन्दलाल कोली भीलवाड़ा २६ श्री सत्यव्रत शास्त्री, बहराइच २७ श्री रंलराज धालप, सेवाड़ी २८ श्री विश्णु कुमार मित्तल, आगरा २९ श्री इंद्रदत्त, अमृतसर ३० श्रीमती आज्ञावती, अमृतसर ३१ श्री वैद्य मेवाराम जी, श्योपुर कलां ३२ श्री सुन्दरलाल शर्मा, श्योपुर कलां ३३ श्री श्याम लालसिंह, ओबरा ३४ श्री शम्भुनाथ प्रसाद, बेतिया ३५ श्री सीताराम आर्य, करैया ३६ श्री गोपाल प्रसाद बद्री प्र अग्रवाल, जबलपुर ३७ श्री शीतल प्रसाद, कलकत्ता ३८ श्री रामस्वरूप शर्मा, सिरोज ३९ पं० बाँकेलाल मिश्र, खरपरी ४० श्री डा० आर० सी० शर्मा, सहारनपुर ४१ श्री श्यामसुन्दर मौर्य, इलाहाबाद ४२ श्री कृष्णचन्द्र अभागा, कांगड़ी ४३ श्री सी० आर० मास्टर, निजामाबाद ४४ श्री देसराज गुलाटी, हौजखास ४५ श्री अन्तराम राघव, अलीगढ़ ४६ श्री आर० सी० गुप्त, आर० के० पुरम, ४७ श्री जगदीश प्रसाद, ब्यावर ४८ डा० सर्वदानन्द शर्मा, झुनझुनु ४९ श्री प्रेमचन्द भण्डारी, लक्ष्मीबाई नगर ५० श्री दीनानाथ शर्मा, सराय रुहेला ५१ श्री रामकरण उवास, चाँदपुर ५२ श्री प्रेमचन्द, सिविल लाइन्स दिल्ली ५३ श्री एस० के० कक्कड़, दिल्ली ५४ श्री आर० के० शर्मा, आर० के० पुरम ५ श्री छोटेलाल, सिकन्दराबाद ५६ श्री जस्साराम बर्मा आर्य, छतरी ५७ श्री स्वामी शिवाचार्य, शाहदरा ५८ श्री उमराव सिंह, मेरठ ५९ श्री वासुदेव वर्मा, वैस्ट पटेल नगर ६० श्री रामचन्द्र देवराज, साहिन्यपड़ी ६१ श्री दरबार सिंह सैनी, गाजियाबाद ६२ श्री आर० एन० रायी, सरोजिनी नगर ६३ श्री मनजीतसिंह, दिल्ली ६४ श्री हरिश्चन्द्र, जनकपुरी ६५ श्री पूरनचन्द, नई दिल्ली ६६ श्री इन्द्र नाथ, नई दिल्ली ६७ श्री अतर सिंह, लखीमपुर ६८ श्रीमती रामप्यारी, दिल्ली ६९ श्री देवी प्रसाद, नई दिल्ली ७० श्री भूमित्रगुप्त, बिजनौर ७१ श्री दयावन्ती, इन्द्रपुरी ७२ श्री राजेन्द्र कुमार, मुरादाबाद ७३ श्री मथुरादास, अमृतसर ७४ श्री विद्यारतन जी, साहिबाबाद ७५ श्री टी० एम०

कक्कड़, मलकागंज ७६ मन्त्री आ० स०, धुरी ७७ श्री जगदीश चन्द्र गुप्त, दिल्ली ७८ श्रीमती विद्यावती चोपड़ा, ज्वालापुर ७९ श्रीमती लीलावती मोगा, ज्वालापुर ८० श्रीमती शकुन्तला सोढी, ज्वालापुर ८१ श्री जयप्रकाश भारद्वाज, बुलन्दशहर ८२ श्री फकीर चन्द शर्मा, गुलावठी ८३ श्री विद्यासागर दीक्षित, मेरठ ८४ श्री बहोरी, दत्त शर्मा अलीगढ़ ८५ श्री टी० एन० श्रीवास्तव, अशोक विहार ८६ श्री आशुराम आर्य, चण्डीगढ़ ८७ श्री डी० रामचन्द्र गुप्ता, विजनौर ८८ श्री रामसिंह, मेरठ ८९ श्री घनानन्द पांडे, लखनऊ ९० श्री साँचीलाल गुप्त, मोतीबाग ९१ श्री सोहनलाल गुप्त, दादरी ९२ श्री निर्मल कुमार जैन, दिल्ली ९३ श्री मिश्री लाल, बुढ़ाना ९४ श्री सीताराम शिवचरन, जयपुर ९५ श्री भगवती प्रसाद, कानपुर ९६ श्रीमती कमला देवी वर्मा, सरोजिनी नगर ९७ श्री विशम्भरसहाय, अलीगढ़ ९८ डा० मंगलसेन, नई दिल्ली ९९ श्री रामप्रसाद, चाण्क्यपुरी १०० श्री पुरुषोत्तमदास दरियागंज १०१ श्री सोहनलाल, चण्डीगढ़ १०२ श्री दुलीचन्द, दिल्ली १०३ सिने-साउन्ड सप्लाई, दिल्ली १०४ श्री प्रकाश चन्द्र, पहाड़ी धीरज १०५ श्री रतो राम शर्मा, मेरठ १०६ श्रीमती रामप्यारी, जवाहरनगर १०७ श्री के० ब्रह्मा, नजीबाबाद १०८ श्री शोभाराम गर्ग, झिझाना १०९ श्रीमती कमला देवी ११० श्री विजयपाल सिंह, मेरठ १११ श्री दिनेश कुमार, शामली ११२ श्री रघुवीर सिंह तोमर, मुजफ्फर-नगर ११३ श्रीमती लीलावती टण्डन, पटेलनगर ११४ श्री सोमनाथ कपिल, हिसार ११५ श्री लाल चंद अग्रवाल, किशनगंज ११६ स्री रविदत्त त्यागी, गाजियाबाद ११७ श्री कृष्णदत्ता, मेरठ ११८ श्री लेखराज, गुड़गाँव ११९ श्री गोपालदास यादव, राजौरी गार्डन १२० श्री रामपाल सिंह तोमर, मुजफ्फरनगर १२१ श्री सत्य प्रकाश आर्य, आर० के० पूरम् १२२ श्री वेदप्रकाश वेदी, चांदनी चौक १२३ श्री देवदत्त शर्मा, बुलन्दशहर १२४ श्री कृष्ण चन्द्र महाजन, जयपुर १२५ श्री प्रभुदयाल गुप्त, अलीगढ़ १२६ श्री जगदम्बा गुप्ता, चण्डीगढ़ १२७ यादव भट्टा कम्पनी, आजादपुर १२८ श्री गंगाराम, बम्बई १२९ श्री बालकिशन मुन्शी, पालमगाँव १३० डा० श्याम-सुन्दर आहुजा, आगरा १३१ श्री पिण्डी दास ज्ञानी, अमृतसर १३२ श्री सी० एस० विशी, नई दिल्ली १३३ श्री रामजी लाल, खोड़ी १३४ श्री मती रमिन्द्रा साहनी, माडल टाउन १३५ श्री एस० सी० वशिष्ठ, दिल्ली १३६ श्री जे० एस० साहनी, दिल्ली १३७ श्री फकीर चन्द सतीजा, दिल्ली १३८ श्री शिव कुमार आर्य, विशनगढ़ १३९ श्रीमती शान्ति मोहन, दिल्ली १४० श्रीमती दया बनाती, दिल्ली १४१ श्रीमति चंचल मेहता, दिल्ली १४२ श्री रामकुमार अग्रवाल, हिसार १४३ श्री सूर्यदेव, रतलाम १४४ श्री रामकिशोर, करनावर १४५ श्रीमती रामदेवी, रतनगढ १४६ श्री विशन नारायण, कीर्तिनगर १४७ लिपिंटग इक्विपमैंट, शाहदरा १४८ श्री आर० गंगाधर बंगलौर १४९ श्रीमती शान्ति देवी, पालनपुर १५० श्री धर्मवीर जी, दिल्ली १५१ श्री सत्यनारायण शर्मा, दुर्ग १५२ श्री हरिसिंह, मुजफ्फरनगर

११) देने वाले महानुभाव
(द्वितीय सूची)

१ श्री रामकिशन यादव, नया बाजार २ श्री बनारसीदास, मवाना कलाँ ३ श्री नकुलसेन सोंधी, कश्मीरी गेट ४ श्री महाशय गंगूसिंह, बुलन्दशहर ५ श्री मंत्री गांधी आदर्शमण्डल, सुकाली ६ श्री जनर्दनसिंह, जगीराहा ७ श्रीमती प्रेमलता

कपूर, गाजियाबाद ८ श्री बी. एस. गुप्ता, कोतगुडा ९ श्री अमरसिंह आर्य, मेरठ १० पं० किशनचन्द्र, नई दिल्ली ११ श्रीमती पुष्पा, गाजियाबाद १२ श्री चोखेलाल गुप्त, अलीगढ़ १३ श्री कैलाश चन्द्र रस्तोगी, अलीगढ़ १४ श्री जयनारायण अरुण, चाँदपुर १५ श्री हुक्मसिंह आर्य, दौराला १६ श्री बलवीर सिंह आर्य, रोहतक १७ श्री यादवसिंह जाट, रोहतक १८ श्री भागमल महाजन, अमृतसर १९ श्री रामसिंह आर्य, पौडंरी २० श्रीमती यशोधरा देवी दीवान, बम्बई २१ श्री पद्मारानी, बुढ़ाना २२ श्री ए. एस. भाटिया, राजौरी गार्डन २३ श्री राजेन्द्र प्रसाद शर्मा, कुचेसर २४ श्री ज्ञानचन्द्र सैनी, कुरुक्षेत्र २५ श्री नरेन्द्र नाथ सिंह, हरिद्वार २६ श्री ज्योतिप्रसाद एटा २७ डॉ० ईश्वरसरन, रामपुर २८ श्री पन्ना लाल, बहु २९ श्री ओ. पी. चतुर्वेदी, कालियामारी ३० श्री शिताब सिंह, कपोटा ३१ श्री राधाकृष्ण राठी, डेगाना ३२ श्री हरवंश लाल शर्मा, चंडीगढ़ ३३ श्री तेजनारायण पाँडे, हुगली ३४ श्री. बी. ए. दगावर, दरियागंज ३५ श्री हंसाराज आर्य, हाँसी ३६ मंत्री, आर्य समाज, निरुपड़ा ३८ डॉ० सत्यवती विनोद, बुलन्दशहर ३९ श्री रजईराम आर्य ४० श्री सोनपाल सिंह वर्मा, अलीगढ़ ४१ श्रीमती शारदा राय, देहरादून ४२ श्री सिंह सहारनपुर ४३ श्रीमती सुमन अग्रवाल, मुजफ्फरनगर ४४ श्री वेदराम सिंह, मेरठ ४५ श्री ईश्वरदास, कानपुर ४६ श्री चरणदास शर्मा सहारनपुर ४७ श्री बी. एल. सूद, अम्बाला कैन्ट ४८ श्री आर. के. गुप्ता, देहरादून ४९ श्री दिनेश कुमार चौहान, शामली ५० श्री हरबन्सनन्दा, मुजफ्फरनगर ५१ श्री रादू लाल ५२ श्री देशराज ५३ श्री मुन्ना लाल ५४ श्री ओमप्रकाश दुली चन्द एडवोकेट, आगरा ५५ राज मल्होत्रा, हिसार ५६ श्री यज्ञदत्त शर्मा, बिजनौर ५७. श्री विश्व नाथ सर्राफ, बम्बई ५८ श्री लाला बद्रीप्रसाद, बहेड़ा कलां ५९ श्री शशि भूषण श्रेष्ठ, देवरिया ६० श्री हरिनारायण शर्मा, सादड़ी ६१ श्री रोशन लाल, नई दिल्ली ६२ श्री हीरालाल, मुरादाबाद ६३ श्री गिरधर लाल गुप्त, बड़ौदा ६४ श्री हरप्रसाद गुड़गाँव ६५ श्री विनोद कुमार अग्रवास, दिल्ली ६६ श्री ठा० हरिलाल, उदयपुर ६७ श्री कृष्ण स्वरूप वैद्य, इटावा ६८ श्री रामगुलाम भिण्ड, शाहजहांपुर, ६९ श्री लीलाधर, नैनीताल ७० श्री बाबूलाल फकीरचंद-औरंगाबाद, ७१ श्री नानकचंद-मेरठ ७२ श्रीमती दयाल ग्रोवर नई दिल्ली, ७३ श्रीमती शांता ग्रोवर नई दिल्ली ७४ श्री भीमसैन दीवान गुड़गाँव, ७५ श्री बिशनदास आर्य, जालन्धर ७६ श्री रतनलाल भाटिया डीडवाना, ७७ सुश्री उमा रस्तोगी, मवानाकलां, ७८ श्री गंगाराम रामलाल खारीबावली, ७९ श्री राजेन्द्रकुमार अशोक, पार्क ८० श्री एम. एल. गोयल श्रद्धानन्द मार्ग ८१ श्री मनमोहन लाल गोयल, गाजियाबाद, ८२ श्री श्यामलाल, मुजफ्फरनगर ८३ श्री अजीतसिंह ध्रुव, गिधपुरी, ८४ श्री बलवीर प्रसाद, हसनपुर ८५ श्री भोलानाथ परदेशी, देवपुर ८६ श्री गोपालजी चौहान उदयपुर, ८७ श्री वैद्य श्यामलाल, बिजनौर. ८८ श्री चक्रपाणिशर्मा, रामपुर कलाँ ८९ श्री आनन्दकुमार आर्य, अलीगढ़ ९० श्री रघुवीरदत्तशर्मा, मेरठ, ९१ श्री रामरिछपाल, बुलन्दशहर ९१ श्री प्रसाद हलवाई हसनपुर, ९२ श्री मंत्री जी दिल्ली-५१ ९३ श्री रामचन्द्र यादवार्य नागौर ९४ श्री जयप्रकाश, भोपाल, ९५ श्रीमती सत्या चौधरी, गुड़गाँव ९६ श्री कृपारामआर्य, बहादराबाद ९७ श्री मोहनलाल आर्य, मथुरा ९८ श्री पूर्णचन्द अरोड़ा, खारी बावली ९९ श्रीप्रधानाचार्य, नयाबाँस, १०० श्री वीरेन्द्रदेव, अलवर १०१ श्री भजनलाल शुक्ल, कन्नौज १०२ श्री लक्ष्मीनारायण, गिलौला १०३ श्री ठा० उलफतसिंह आगरा

१०४ श्री समरसिंह अध्यापक शेरपुर १०५ श्री बंसल ब्रदर्स, दिल्ली १०६ श्री हनुमान मिश्र, कानपुर १०७ श्री वेदरानी भाटिया, सहारनपुर १०८ श्री आर. क्यू. एम. एच. के. पवार, ५६ ए. पी. ओ. १०९ श्री नरेन्द्रनाथ गुप्ता, सीताराम बाजार ११० श्री मानसिंह टाक जोधपुर १११ श्री मंत्री आर्यसमाज अम्बाला ११२ श्री ओमप्रकाश पारीक, अहमदाबाद २१३ श्री ब्रह्मानन्द पटवारी, सहारनपुर ११४ श्री आर्यरामरख पुरोहित, पीपाड़ ११५ श्री लज्जाराम पराशर, राजाखेड़ा ११६ श्री मंत्री आर्य समाज, आगरा ११७ डा० स्वामी नाथ शर्मा, बम्बई ११८ श्री योगिन्द्र लाल नन्दा, अमृतसर ११९ श्री हरीशचन्द्र नैठा, श्री गंगानगर १२० श्री वंशीसिंह हसनपुर १२१ श्रीहरिओमअग्रवाल मुरादाबाद १२२ श्री रामस्वरूपसिंह मेरठ १२३ श्री कर्णसिंह डवास चाँदपुन २२४ रामगोपाल मुरादाबाद १२५ श्री अमरचन्द्र खण्डेलवाल कोसीकलाँ १२६ श्री वासुदेव सिंह जौनपुर गुप्ता १२७ दादा बेनी प्रसाद विजयकुमार जबलपुर १२८ श्री गनपतसिंह आर्य भिवानी १२९ श्रीमती सरला मेहरा नई दिल्ली १३० डो. डी. जोशी सिकन्दराबाद १३१ श्री गोस्वामी नागौर १३२ श्री प्रेमनारायण गुप्त कानपुर १३३ श्री हरेशचन्द्र आगरा १३४ श्री के. वेलायुधम् मद्रास १३५ श्री एम. रामय्यर हैदराबाद १३६ श्री स्वामी अर्जुन दास महन्त मुंबई १३७ श्री बाबू रामवलेड़ा १३८ श्री मुन्शीसिंह सचिव पटना १३९ मैं० कृष्णकेडिट कारपोरेशन, कलकत्ता १४० सुश्री नीना, दिल्ली १४१ श्री भल्ला ब्रदर्स रांची १४२ वैद्य मानसिंह आर्य सन्तूधार १४३ श्री गोविन्ददास सोनगीर १४४श्री ए०सी०गंगाराम, अशोका रोड १४५ प्रबन्धक चोटी वाला होटल स्वर्ग आश्रम १४६ श्री इन्दु भूषण झा बंगलौर १४७ श्री ठाकुर किरोड़ीमल शाहजहाँपुर १४८ श्री जानकी प्रसाद दूबे विदिशा १४९ श्री शिवनाथसिंह नगीना १५० श्री योगेशचन्द्र गुप्त, छिबरामऊ १५१ श्रीमती लाजवन्ती गुड़गाँव १५२ श्री अमृतराम हरिराम अग्रवाल दिल्ली १५३ श्री हरिदेवदत्त खन्ना १५४ श्री दरयावसिंह नरेला १५५ श्री ओमप्रकाश कोसी कंला १५६ श्री बलदेव प्रसाद डालटन गंज १५६ श्री जगदीशसिंह हसनपुर १५८ श्री भवानीसहाय शर्मा साथुलपुर १५९ श्री खरैतीराम मलहोत्रा यमुना नगर १६० श्री ठाकुर देवेन्द्रसिंह पठानकोट १६१ श्री रामप्रताप वृजमोहन कलकत्ता १६२ श्री राजेन्द्रप्रसाद अम्बाला १६३ श्री जगतप्रसाद अग्रवाल बाँदा १६४ श्री मती डा० अरुणा भगोत्रा जम्मू १६५ श्री परशुराम प्रसाद वर्मा डिब्रूगढ़ २६६ श्री बाबूराम झा बेवर १६७ श्री सत्यजीत सिहमार खानापारा १६८ श्री मुरलीधर पितुमल धुलिया १६९ श्री अयोध्या प्रसाद शास्त्री मुरादाबाद १७० श्री प्रभुदयाल केशवजी जलगांव १७१ श्री रामजीदास हलवाई शिमला १७२ श्री दीपनारायणसिंह मुंगेर १७३ श्री हरिहर प्रसाद सिंह इलाहाबाद १७४ श्री लोकमन पटियाला १७५ श्री जयशंकर पाण्डेय कानपुर १७६ श्री माधवविश्ना थमिरी उज्जैन १७७ श्री विजय मोहन सिंधा सोलन १७८ श्री मूलवर्द्धमं राज वंशी रतनगढ़ १७९ श्री दीनानाथ गोस्वामी अलीगढ़ १८० डा० जगदीश कुमारशर्मा अमृतसर १८१ श्री रामस्वरूप धाकड़ छतरपुर १८२ श्री. वी. दयाल शर्मा, बंगलौर १८३ श्री जुगलकिशोर कानपुर १८४ श्री गंगाप्रसाद दूबे रायसेन १८५ श्री सोने लालसिंह कांचा १८६ श्री जगदीश चौधरी मुजफ्फरपुर १८७ श्री मंत्री जी आ. स. गुड़गाँव १८८ श्री जमुनाप्रसाद, छपरा १८९ श्री बलवन्तसिंह सब्जी मण्डी १९० श्री मग्न लाल हरिश्चन्द भरुच १९१ श्री एम. पी. मुनद्रा तेजपुर १९२ श्री बी. देवेन्द्र मल्लटया बिलरी १९३ श्री केशरीसिंह

देवरिया १६४ विलखनारायण जगदलपुर १६५ श्री चौधरी गिरवरसिंह आर्य मेरठ १६६ श्री टिक्काराम लक्ष्मण धर्माबाद १६७ श्री रविशंकर, हैदराबाद १६८ श्री अनिल कुमार हैदराबाद १६६ श्री मोहनलाल उपाध्याय आर्य प्रतापगढ़ २०० श्री चन्द्रशेखर सनवाल, रुद्रप्रयाग २०१ श्री रिसालदार मेजर बब्लूसिंह, बापोड़ा २०२ श्री एस पी वासुदेव, लुधियाना २०३ श्री मनीराम बाराबंकी २०४ श्री दगडूतापीदास बामखेड़े २५५ श्री गोरखनाथ सिंह कानपुर २०६ श्री सावल राम कौडिया छावड़ा २०७ श्री बस्तीराम शक जोधपुर २०८ श्री ला० प्राण सुखदास वैद्य आगरा २०६ श्री केशोदास एण्ड संस मुजफ्फरनगर २१० खी जस्साराम आर्य वर्मा बगस्याड़ २११ श्री धर्मदास सर्राफ बिलासपुर २१२ श्री कुंजबिहारीलाल वृन्दावन २१३ श्री मदनमोहन उत्तम नारायण रतलाम २१४ श्री लखन गुप्त पनचट डैम २१५ श्री मन्नीलाल मौर्य डौडवल्लापुर २१६ श्री रामाजी मालवीय बीना २१७ श्री गन्धर्वसिंह बीना २१८ श्री द्वारकाप्रसाद सारडा बेलावपल्ली २१६ श्री हरिचन्द्र बत्रा सोनीपत २२० श्री लक्ष्मण दास जयपुर २२१ श्री सुखदेव प्रसाद वर्मा पाटम २२२ प्रबन्धक भारतीय संस्कृत विद्यालय जलालाबाद २२३ श्री एच. रसैया हैदराबाद २२४ अजन्ता खादी भण्डार मेरठ २२५ श्री द्वारका नाथ सम्बलपुर २२६ श्री बी. एल. साहू गोहाटी २२७ श्री विशम्भर दयाल वर्मा इलाहाबाद, २२८ श्री रामचन्द्र यादवार्य नागौर २२६ श्री रामरतनशर्मा, दोहद २३० श्री सियाराम ओमर फतेहपुर, २३१ श्री वेदमित्र त्रिपाठी इलाहाबाद २३२ श्री जियालाल मनोहरलाल फैजाबाद २३३ श्री रूप नारायण प्रसाद ललितपुर २३४ श्री राधेश्याम अग्रवाल सरिया २३५ श्री बी. पी. स्वर्ण रावत भाटा २३६ श्री भोलाप्रसादजाय सवाल, सन्थाल परगना २३७ श्री हजारी लाल पूरा लाल ब्यावरा २३८ श्री बलवन्तसिंह गुरदासपुर २३६ श्री कर्नल बीकानेर २४० श्री शम्भुराम भिवानी २४१ श्री नर्मदा प्रसाद सेन भोपाल २४२ श्री वैद्य मोरधरजी गोंडल २४३ श्री ईश्वरसिंह तालिपान नांगल २४४ श्री गजरामसिंह बदायूं २४५ श्री शंकर आर्य बानप्रस्थी मुंगेर २४६ श्रीधन प्रकाश मुजफ्फरनगर २४७ श्री प्रधानाचार्य जी पिसावा २४८ श्री तुलसीदास सी. लठवानी बम्बई २४६ श्री ना० स० जुमवे, पथ्रोट २५० श्री रामगंगाराम आर्य निजामाबाद २५१ श्री शोभाराम आर्य राउड़केला २५२ श्री परसराम उत्तमचन्द आगरा २५३ श्री हनुमान चौधरी सवाई माधोपुर २५४ श्री नरेन्द्रदत्त वैद्य गढ़वाल २५५ श्री महन्तराम नाथ जैसलमेर २५६ श्री सूरजमल कोठारी बीकानेर २५७ श्री सूरजमल कोठारी बीकानेर २५८ श्री जे. एस. बिसारी खुदागज २५६ श्री चौ० बारुसिंह मुजफ्फरनगर २६० श्री रमाकान्त शुक्ल भोपाल २६१ श्री अशोक कुमार गुप्त जम्मू २६२ श्री प्रेम शँकर मंत्री बदायूं २६३ श्री भृगूनाथ त्रिपाठी शाहजहाँपुर २६४ श्री उमेशचन्द्र त्रिपाठी पटना २६५ श्री प० रघुवीर सहाय चौरसिया बिशनगढ़ २६६ श्री हरिनारायण अग्रवाल, औरैया २६७ श्री सत्य प्रकाश मित्तल आगरा २६८ श्री पञ्चानन उपेक्षित २६६ श्री मोहन लाल जगवानी वृन्दावन २७० नत्थनसिंह मुरादाबाद २७१ नुनूसाव नोखेला, बाढ़ २७२ श्री बैजू मेहतो, पटना २७३ दिल्ली स्वीट हाउस महबूब नगर २७४ श्री नरेशचन्द्र कोटा २७५ श्री गंगाप्रसाद वाराणसी २७६ श्रीमती मायावती सोनी जयपुर २७७ श्री शिवनारायण शर्मा इलाहाबाद २७८ श्री धीरसिंह सहारनपुर २७६ श्री रणछोड़लाल वाराणसी

२८० श्री आर. एस. आहूजा मैसूर २८१ श्री यशपाल चुरु २८२ श्री चन्दराम आर्य इलाहाबाद २८३ श्री रामसेवक मझोली २८४ श्री अशोक कुमार विश्नोई उदयपुरा २८५ श्री दुल्लूराम आर्य इलाहाबाद २८६ श्री रामनारायण स्वामी बीकानेर २८७ डा० वा० मो० आठले सागर २८८ श्री सूर्य नाथ सहाय रोहतास २८९ डा० श्याम मोहन कपूर मैनपुरी ।

१०) देने वाले महानुभाव

१ श्री तारी राम आर्य, चनौदा २ श्री मन्त्री आर्य समाज, रावतभाटा ३ श्री महावीर सिंह आर्य. मेरठ ४ श्री नारायण भटनागर, उन्नाव ५ श्री राधे रमन गुप्त, रुड़की ६ श्री नन्दलाल आर्य प्र०, गया ७ डा० गजेन्द्र सिंह, सीमापुर ८ श्री गन्धर्व सिंह, बीना ९ श्रीचन्द सन्स, देवबन्द १० श्री नारायण बाई, बावला ११ श्री रमाकान्त विश्वकर्मा, गोरखपुर १२ स्वा० आत्मानन्द, बिजनौर १३ श्री महेन्द्र सिंह, कालागढ़ १४ श्री रामस्वरूप गुप्त, इन्दौर १५ श्री हरीदेव प्रसाद, बाढ़ १६ श्री दीनानाथ साह, पेदोंग १७ श्री किशन सिंह, जंगपुरा १८ श्री तपस्वी राम आर्य, चम्पारण १९ श्री मोलई प्रसाद, तुर्रा २० श्री उमराव सिंह यादव, अलबर २१ श्री सुरेन्द्र पाल गुलाटी नवाशहर २२ डा० पुरुषोत्तमदास जलगाँव २३ श्री घुरहूराम लोहिया बस्ती २४ श्री सियासरन आर्य गौहाटी २५ श्री सीताराम शिवचरण जयपुर २६ श्री के० एस० घरल रायपुर २७ श्री राधेश्याम गुप्ता बुलन्दशहर २८ श्री भगवानदास गुप्त कानपुर २९ श्री चन्द्रभान विण्डमगंज ३० रविचन्द्र भाणजी भाई जामनगर ३१ श्री फूलनसिंह शिकोहाबाद ३२ श्री ज्ञान चन्द्र गंजडण्डवारा ३३ डा० एस० बी० प्रसाद प्रतापपुर ३४ श्री हरिशंकर निगम कानपुर ३५ श्री ईश्वर लाल गढहरा ३६ श्री एन. वी. किरकी बिजनवारी ३७ श्री रघुवीर सिंह प्रधान जयतपुर ३८ श्री गणपतराय गुप्ता जालन्धर ३९ श्री भगवान सिंह आर्य औरंगाबाद ४० श्री आर. एस. आहूजा ४१ श्री मोती लाल आर्य अलीगंज ४२ डा० समिलू रागारेड्डी ४३ श्री रंजन प्रसाद आर्य धमनी ४४ श्री प्रेमनारायण मिश्र हरदोई ४५ श्री गजराज सिंह आर्य चपरा ४६ श्री जगेश्वरसिंह गजनेर ४७ श्री सीतारत्नम् कूचियाड़ ४८ श्री योगेन्द्रकुमार एडवोकेट अहमदाबाद ४९ श्री के मोहन राजेश्वर मोड़नाड ५० श्री वेदकुमार वेदालंकार पुलजापुर ५१ डा० पवन कुमार बंसल कांताबंजी ५२ श्री काँतिलाल पाटण ५३ श्री आत्मप्रकाल सिंह हाजीपुर ५४ श्री. टी आर गुप्ता हिसार ५५ श्री ला मौहलड़ मल ईश्वरचन्द ठिकाना ५६ डा० तुलसीदास चण्डीगढ ५७ श्री सर्वहितकारी चिन्तक ५८ श्री देवी दास आर्य सोनीपत ५९ श्री तेजसिंह रविदत्त त्यागी गाजियाबाद ६० श्री हरिकृष्ण शर्मा तिलक नगर ६१ श्री ओमप्रकाश जखौली ६२ श्री नन्दलाल आर्य गया ६३ श्री जेभएस० सभरवाल कलकत्ता ६४ श्री लक्ष्मीचन्द छीपावड़ौद ६५ श्री हरिहर सिंह शवानी ६६ ठाकुर मूलचन्द आगरा ६७ श्री राजाराम हीरालाल वाराणसी ६८ श्री रामसेठ एटा ६९ श्री उत्तम मुनि वानप्रस्थी लातूर ७० श्री तान्हु भाई लातूर ७१ ग्लासट्रेडर्स बम्बई ७२ श्री गुरमीतसिंह चिरवापाडा ७३ श्री केसाराम जावुदा ७४ आर० एस० दास सम्बलपुर ७५ श्री ओमप्रकाश जखौली ।

७) मासिक किश्त के रूप में

१ श्री शशि भूषण श्रेष्ठ शीतलमाँझा २ श्री शशि भूषण श्रेष्ठ शीतलमाँझा ३ श्री सत्यपाल नवांशहर दोआवा ४ श्री मूलचन्द वर्मा मेरठ ५ श्री शशि भूषण श्रेष्ठ शीतलमाँझा ६ श्री जमनादास बलसाड़ ७ श्री अखिलेश कुमार मेरठ ८ श्री शशि भूषण श्रेष्ठ शीतलमाझा ९ श्री शान्ति स्वरूप हसनपुर १० श्री शशि भूषण श्रेष्ठ, शीतलमाझा।

६) मासिक किश्त के रूप में

१ श्री शशि भूषण श्रेष्ठ शीतलमाझा २ श्री धर्मपाल धवन दिल्ली ३ श्री कृष्ण चन्द्र अभागा राजौली ४ श्री कृष्ण चन्द्र आर्य पठानकोट ५ श्री शशि भूषण श्रेष्ठ शीतलमाझा।

५) देने वाले महानुभाव

१. श्री नरेन्द्र गिरि गोस्वामी, नासिक २. राजकुमार, नासिक ३. रवीन्द्रनाथ दुबे, नासिक ४. सुदर्शन लाल नागपाल, नासिक ५. जगन्नाथ प्रसाद, रीवाँ ६. पशुपतिनाथ, पयागपुर ७. नाथूराम आर्य, कुरुद ८. लाल चन्द आर्य, काजीपुरा ९. भृगुनाथ त्रिपाठी, शाहजहाँपुर १०. हरी राम. बुलन्दशहर ११. प्रेमरत्न सूद, जालन्धर १२. श्री तापीदास चौधरी, कानखेड़ा १३. उत्तम मुनि, लातूर १४. कृष्ण चन्द्र, अशोक नगर १५ बी० हनमाण्डलू, बाँसवाड़ा १६ जगरूप राम लक्ष्मीचन्द्र, फैजाबाद १७ राम किशन कपाही, मुगलसराय १८ जमना दास ईश्वर भाई, बलसाड़ १९ रतीलाल दूभा भाई पटेल, बलसाड़ २० ईश्वर भाई डाह्या भाई, बलसाड़ २१ मोहन लाल भोणा भाई, बलसाड़ २२ परागजी लाल भाई पटेल, बलसाड़ २३ रूपसिंह साहू गिधपुरी २४ काली प्रसाद कृष्ण दास, बाढ़ २५ सोहनलाल, प्रतापगढ़ २६ लाल शर्मा ९९ ए. पी. ओ. २७ अनिल कुमार, हैदराबाद २८ खोड़ा भाई आर्य २९ प्रेम प्रकाश, बतिया ३० हरिश्चन्द्र, मुरारई ३१ ओम प्रकाश गिरि, भरौर ३२ शिवरामपत जी, मुलज ३३ मुन्नू लाल, बाराबंकी ३४ कुन्दन सिंह आर्य, भिवानी ३५ रामलाल शर्मा, बीकानेर ३६ एल० एस० शाक्य, मैनपुरी ३७ रवीन्द्र आ० स०, बुढ़ानाद्वार ३८ जगदीश पु० वार्ष्णेय, हापुड़ ३९ रूपनारायण, दिल्ली ४० टी० जी० आर्य रामपुर कलाँ ४१ सत्य प्रकाश गुप्ता, श्योपुर कलां ४२ श्याम सिंह परिहार, श्योपुर कलां ४३ हीरा सिंह, शवानी ४४ राजेन्द्र कुमार, ट्रामपुर ४५ परमेश्वर शर्मा, दोगड़ ४६ परमेश्वर यादव, गढ़हरा ४७ रामऔतार पाण्डे गढ़हरा ४८ जयप्रकाश, गढ़हरा ४९ शिवरोक सिंह, गढ़हरा ५० राम चन्द्र साव, गढ़हरा ५१ सुरेन्द्र प्रताप सिंह, गढ़हरा ५२ गंगासरण शर्मा, लाडनूँ ५३ बी० एल० शर्मा, ईसानगर ५४ भुवनेश्वर प्रसाद यादव, पतरधर ५५ प्रेम प्रकाश, शिमला ५६ दयालाल हरिलाल, जोरावड़ ५७ चन्द्रपाल साइदास, चापी जरियो ५८ बलवन्त सिंह, राजमऊ ५९ हरिब्रगम सत्यनारायण, सुजानगढ़ ६० धर्मपाल आर्य, बल्लारपुर ६१ वैद्यनाथ सहाय, अजमेर

६२ शशिभूषण श्रेष्ठ, शीतलमाझा ६३ प्रेम राम आर्य बन्धु, खड़क वांसना ६४ रामस्वरूप लाल, गढ़हरा ६५ कपूर सिंह डूँगरपुर ६६ कपिल देव सिंह आर्य, ओबरा ६७ हूबलाल, ओवरा ६८ इन्द्र सिंह सोलंकी, गुना ६९ राम लगन आर्य, नगर उंटारी ७० शिवकोमल, ओबरा ७१ बन्शी लाल सोनी, पीपाड़ शहर ७२ रामचन्द्र शास्त्र, जगदलपुर ७३ इन्द्रसेन मलिक, जालन्धर ७४ केशवचन्द्र, लक्सर ७५ हरीशचन्द्र, उझानी ७६ सुश्री मधुर वाणी, जगाधरी ७७ जोधराज, सीरौं ७८ जगदीश प्रसाद यादव, महेसाना ७९ के० बैलयाधम, मद्रास ८० राधेश्याम सक्सेना, बीना ८१ के० श्री निवास, बाँसवाड़ा ८२ अमरचन्द खण्डेलवाल, कोसी कलाँ ८३ इन्द्र सैन गुप्त, गोन्डा ८४ चन्द्रभान, मिर्जापुर ८५ डोमार सिंह आर्य, रामपुर ८६ बालस्वरूप शर्मा, गुलावठी ८७ के० बल: सुधम, मद्रास ८८ गम्भीर राई आर्य, ८९ देवप्रसाद धुरंधर, रायपुर ९० प्रेम राय आर्य, खड़कलवासा ९१ बी० आर० नरुला, अबोहर ९२ शिवराम बहल, मण्डी ९३ गणपत रामजी, दिल्ली ९४ जयकृष्ण भारद्वाज, विदिशा ९५ अमर चन्द्र खण्डेलवाल, कोसी कलाँ ९६ रामभज आर्य, रिवाड़ी खेड़ा ९७ उंकार दास, पगनेश्वर ९८ एस. जी. टी. भीम सिंह, कोयंबटूर।

२) देने वाले महानुभाव

१ श्री बृज किशोरी अस्तेय शाजापुर २ श्री यमुनेश्वर प्रसाद माडर ३ श्री भेरुलाल आर्य उज्जैन ४ श्री विद्या भूषण किसनजी आर्य अकोला ५ श्री भुवनेश प्रसाद शर्मा नासिक ६ श्री के. एल. लौदी नासिक ७ श्रीअम्बेकर गंगाधर बांसवाड़ा ८ श्री सूरज नाथ सहाय रोहतास ९ सुखदयो मैडिकल हाल बीरपुर १० श्री जगवीर सिंह गुड़गांवा ११ श्री जगतराम सिरमौर पालानी १२ श्री घनाराम वर्मा रायपुर १३ श्री रामचन्द पैटल जरवे १४ श्री ज्ञानसिंह जी श्योपुर कलाँ १५ श्री नरेन्द्रकुमार श्योरपुर कलाँ १६ श्री फतेह लाल शिक्षक रामपुर १७ श्री एच. एच. त्रिवेदी १८ श्री गोपाल दत्त गौड़ अलीगढ़ १९ श्री नारायण प्रसाद आर्य ग्वालियर २० श्री आनन्द प्रकाश वर्मा खण्डवा २१ श्री जगवीर सिंह गुड़गाँव २२ श्री अम्बेकर गंगाधर जी बांसवाडा २३ श्री वि. हन्माड्लू बाँसवाडा २४ के. श्रीनिवास बांसवाडा २५ श्री मनोहरसिंह गौड़ सिरसा २६ अध्यापक जगवीर सिंह गुड़गांव २७ श्री पुनीतराम कन्नौजे गिधपुरी २८ श्री जगवीरसिंह गुडगाँव २९ श्री जगवीर सिंह गुड़गाँव ३० श्री जगवीरसिंह सोहनावाल। —सभी का धन्यवाद

१५०) सैकड़ा सत्यार्थ-प्रकाश : ५ नवम्बर तक मंगाइए।

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी हरिद्वार का
औषधियाँ प्रयोग करें

गुरुकुल कासारि

खाँसी की अपूर्व गुणकारी औषधि

उपयोगकिसी भी कारण से हुई खांसी, नजला, जुकाम आदि में लाभदायक है।

सेवन विधिदिन में तीन बार छोटी चम्मच लेकर उंगली से चाटें।

आँखों के अनेक रोगों के लिए

संसार प्रसिद्ध

भीमसेनी सुरमा

च्यवनप्राश

उत्तम स्वादिष्ट रसायन

शरीर को बलिष्ठ और कान्तिमय बनाता है।

शारीरिक क्षीणता एवं फेफड़ों के लए प्रसिद्ध

आयुर्वेद रसायन

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

पो० गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी [सहारनपुर]

शाखा कार्यालय – चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

सुन्दर फरनीचर का प्रगतिशील नाम

डिलाईट

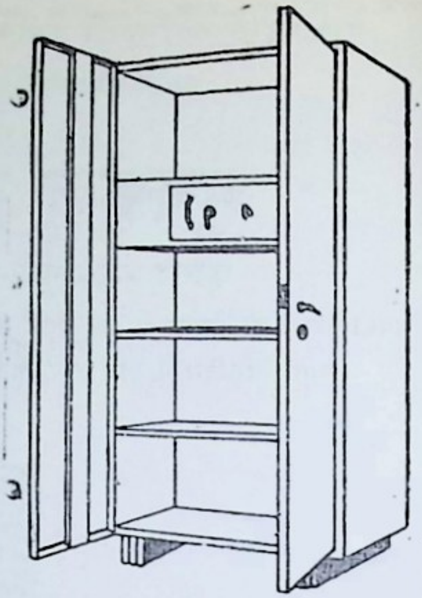

क्यों • ड्सम्भ व और कार्यकुशलता के कारण आज डिलाईट की अलमारियां और फरनीचर सारे भारत में प्रसिद्ध हैं क्योंकि यह देखने में सुन्दर, मजबूत, टिकाऊ और पक्के रंगों में उपलब्ध हैं। दुकान हो या घर, विवाह हो या कोई शुभ अवसर, यह सब का शाभा बढ़ाता है।

आप भी आज डिलाईट फरनीचर खरीद कर अपने घर, आफि। व दुकान की शोभा बढ़ावें औरआनन्द पावें।

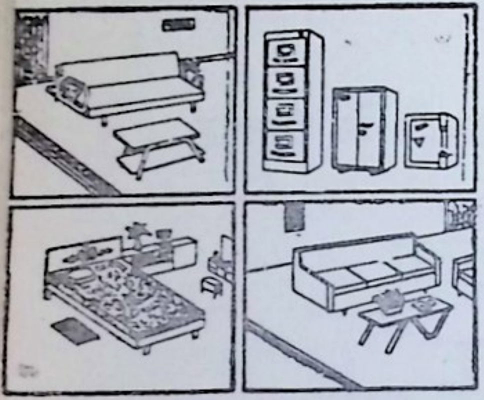

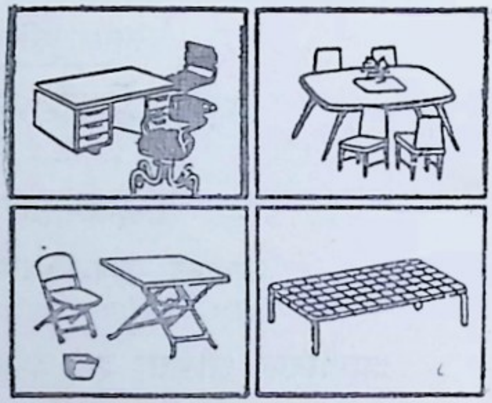

डिलाईट सेफ वर्क्स
कुतुब रोड, दिल्ली-६. फोन 511380

विक्रेता

१. काटेज स्टोर, २० विनय नगर मार्कीट, नई दिल्ली।
२. काश्मीर क्राकरी हाऊस, लक्कड़ बाजार, लुधियाना।
३. मित्तल ब्रादर्स, सिरकी बाजार, भटिण्डा। ४. निहालचन्द गोपालदास अबोहर।
५. महेन्द्रा ब्रादर्स, कोर्ट रोड, मोगा।
६. जैम सेल्स कार्पोरेशन, सेक्टर ७-सी दु० नं० ३० मध्य मार्ग, चण्डीगढ़।
७. हरयाणा आयरन एण्ड स्टील इण्डस्ट्रीज, बाजार हिसारिया, सिरसा।
८. लीला इलैक्ट्रिक कं०, ७० कोतवाली रोड, श्री गंगानगर (राज०)।
९. राणा इण्डस्ट्रीज, लाडपुरा बाजार, कोटा (राज०)
१०. आदर्श इलैक्ट्रिक एण्ड जनरल सप्लायर्ज, नैकाओली, नीमच (म० प्र०)।
११. ओवरसीज ट्रेड एजेन्सीज, केसरगंज, अजमेर।

शताब्दी वर्ष में

अपने घरों पर "ओ३म" के झंडे लगाएं

अगले एक वर्ष तक अपने घर पर

शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में

ओ३म् पताका लहराएँ

लागत से कम मूल्य पर झंडे देने का प्रबन्ध संस्थान ने किया है। जिसकी व्यवस्था श्री सत्यपाल जी आर्य गांधी नगर कर रहे हैं। यह झंडे बढ़िया कपड़े पर हैं। सुन्दर

आकर्षक छपाई। मूल्य अत्यन्त कम।

१० लेने पर भी सैकड़े का रेट देंगे।

और स्थानों से आधा

१२ × १८ इंच का झण्डा = १२५) सैकड़ा
१८ × २७ इंच का झण्डा = २२५) सैकड़ा
२४ × ३६ इंच का झण्डा = ५००) सैकड़ा

शताब्दी के सबसे बड़े

आकर्षक और सुन्दर बैज

बड़ा साइज :	२०) सैकड़ा
साधारण साइज :	१५) सैकड़ा

स्वामी जी का आकर्षक स्टैच्यू

—मूल्य ६)

दयानन्द संस्थान. नई दिल्ली-५

१२ अप्रैल १९७५ से अप्रल १९७६ तक आर्यसमाज स्थापना।

शताब्दी महोत्सव सर्वत्र मनाया जाए

अपने परिवारों पर निरंतर एक वर्ष तक "ओ३म" का झण्डा फहराएं

अगले वर्ष किसी भी सप्ताह सुविधानुसार प्रत्येक आर्यसमाज अपने नगर में अवश्य आर्यसमाज स्थापना शताब्दी महोत्सव मनाएं

अपने धन का प्रयोग अपने ही क्षेत्र में करें

धन का दुरुपयोग न हो इसके लिए यह आवश्यक है कि आप अपने नगर-जिले और प्रान्त को सुदृढ़ करें। अपनी प्रतिनिधि सभाओं को शक्तिशाली बनाएँ और अपने स्थान के कोने कोने में वैदिक धर्म की जय का स्वर गुंजाएं

पूरी शक्ति से अपने क्षेत्र को वेद-दयानन्दमय करने का व्रत लीजिए

भारतेन्द्र नाथ
मंत्री सार्वभौम आर्यसमाज शताब्दी परिषद नई दिल्ली-५

वेदों का सार : महान् ग्रन्थ

वेदामृत

स्व० स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ व
पं० दामोदर जी सातवलेकर द्वारा सम्पादित

४१६ पृष्ठ :

बढ़िया कागज=मूल्य ६)
सजिल्द ८)

किन्तु १५ अक्तूबर तक

३००) सैकड़ा : अजिल्द
४००) सैकड़ा : सजिल्द

सुविधा का लाभ उठाएं शीघ्र मंगाएं

दयानन्द संस्थान नई दिल्ली-५

पूज्यवर भारतेन्द्र नाथ जी ! सादर चरण स्पर्श ।

सितम्बर अंक में आपको अचानक लकवे की शिकायत और कार दुर्घटना का समाचार जानकर बड़ी चिन्ता हुई । परमपिता परमात्मा आपको स्वस्थ-सबल एवम् सफल जीवन प्रदान करें - यही कामना है ।

प्रत्येक अंक में आपकी हृदयस्पर्शी "पुकार" पढ़कर भी मन तो बहुत मचलता है परन्तु हृदय ही जब पत्थर हो चुका हो तो पुकार का क्या दोष है । आज के मनुष्य का मन-बुद्धि और शरीर "धर्मनिर्पेक्ष" भारतीय राजनीति के कठोर हथोड़ों से घड़ा हुआ है - इसे भूलना नहीं चाहिये । धर्म - अर्थ - काम और मोक्ष प्राप्ति के साधन अब धार्मिक नहीं राजनैतिक विषय बन गये हैं । अतः आपकी पुकार होली के उत्सव में दीपावली के गीत गाने के समान है । किसी पर क्या और कैसे असर हो? हिरण्यकष्यप के राज्य में प्रह्लाद का क्या हाल हुआ था सो तो आप जानते ही हैं । आज भारत में लाखों प्रह्लाद पीड़ित हैं । मनुष्य से मनुष्य का नाता केवल स्वार्थ है । धनीमानी उसी राजनैतिक मदारियों के दंगल में खेल रहे हैं ।

१९वीं शताब्दी में लाखों शहीद हुए - अब भी बहुत हैं पर क्यों और किस के लिये मरें? उनका - न देश है - न धर्म - न समाज है - न साथी । सभी तो "नैशनालाइजेशन" (Nationalization) का नारा लगाकर लोगों को रोटी-रोजी-रहनुमाइ का भिखारी बनाने की चेष्टा में हैं । अतः मैं तो यही कहूंगा कि :—

भूल जा अधिकार लीला, कर्तव्य पथ पर लौट जा ।
छोड़ा जहां से रास्ता तूने, वापिस वहीं पर लौट जा ।।

आपका

—एच० पी० आर्य

प्रो० रत्नसिंह जी, एम०ए० प्रधान मंत्री
भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली -५

आदरणीय महोदय नमस्ते,

'आर्य मार्तण्ड' चालू वर्ष के २४ वे अंक में भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना घोषणा का समाचार पढ़ा, चूंकि आप इसके सूत्रधार हैं और उद्देश्यों में आर्य समाजों से सहयोग लेने देने की भावना व्यक्त की गई है, कतिपय प्रश्न उभरने स्वाभाविक हैं जिनमें मुख्य निम्नलिखित हैं :—

१) नवोदित संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की भारतीय उप-

महाद्विपीय शाखा के रूप में काम करेगा या स्वतन्त्र संस्था होगी ?

२) यदि पृथक स्वतंत्ररुपेण सचालन होगा तो वर्तमान समाजों के साथ सहयोग का आदान प्रदान किस आधार पर रहेगा ?

३) समानान्तर संगठन समान उद्देश्व के लिए एक ही क्षेत्र में प्रतिद्वंद्विता के साथ काम करें तो भी बुरा नहीं किन्तु अधर्म अनुशासनहीनता व फूट मिटाने के संकल्पों की पूर्ति हो जाएगी, इसमें संशय है आप इन लक्ष्यों की पूर्ति हेतु क्या साधन अपनायेंगें जिससे सर्व प्रथम आर्य समाजियों की ये बुराईयां दूर हो, घर स्वच्छ होने के बाद देश का त्राण करना सहज हो जायेगा ।

उक्त प्रश्नों के सन्तोषजनक उत्तरों की बड़ी उत्कंठापूर्वक प्रतीक्षा रहेगी, आर्य संस्कृति के प्रचार प्रसार में विरोध का प्रश्न ही पैदा नही होता, तदर्थ आपकी योजनाओं एव सुझावों का स्वागत होगा और यथा-शक्य आचरण करने का प्रयास किया जायगा ।

अंत में यही आशा है जिस भांति दो नाले मिलकर गतिमान नदी का रूप धारण करते हैं और समग्र कूड़ा कचरा प्रवाह के साथ बहा ले जाते हैं, वही स्थिति उपलब्ध की जायेगी ।

सधन्यवाद

आर्य समाज, बीकानेर —रणजीत सिंह

उत्तर :

हम सार्वदेशिक सभा को आर्यसमाज का सर्वोच्च संगठन मानते हैं । वह आर्य समाज की सामुहिक शक्ति का प्रतीक है ।

"भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा" अपने को सार्वदेशिक सभा का सहयोगी मानती है । और उस की स्थापना भारत महादेश के प्रत्येक नागरिक तक वेद-धर्म महर्षि दयानन्द का संदेश फैलाने के लिए की गयी है । वह एक रजिस्टर्ड संस्था है जैसे कि आर्य समाज के अन्य संगठन । वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार में किसी का भी विरोध करने का प्रश्न ही नहीं उठता ।

२) हमारा उद्देश्य महर्षि दयानन्द के दिव्य स्वप्नों को मूर्त रूप देना है । और सभी आर्य समाजों की स्थापना भी इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए की गई है । यही हमारा और आर्य समाजों के सम्बन्ध का आधार है ।

३) हमारी किसी भी आर्य संगठत से प्रतिद्वन्दिता नहीं, हम केवल वही काम करेंगे, जो और नहीं कर रहा । हमें केवल एक ही वस्तु दीखती है और वह है ऋषि का उद्देश्य । फूट मिटाने का भी एक मात्र उपाय यहीं है कि हम —आप—वे सब केवल एक लक्ष्य बना लें—वैदिक विचारधारा का !

हम सब एक हैं, हमारा लक्ष्य एक है, हमारी मंजिल एक है । जो अनेकता की बात करते हैं वे महर्षि दयानन्द के अनुयायी नहीं ।

हमें विश्वास है कि प्रभु के आशीर्वाद से हम 'भारत' को नया रूप—दयानन्द के सपनों का रूप देने में हम सफल होंगे ।

—मंत्री

हमें प्रेरणा देती रहें।

श्रद्धेय बहिन !

आपके व भाई भारतेन्द्र जी के सफल कार्यकलापों से देश को कितना सुन्दर व अमूल्य साहित्य मिल रहा है, इसको लेखनीबद्ध नहीं किया जा सकता। आशा है इस महत्वपूर्ण कार्य में आपको दिनों-दिन सफलता मिलती रहेगी। व आप समय-समय पर हमें प्रेरणा देती रहेंगी, जिससे कि मैं व मेरा परिवार भी आपके बताए मार्ग प्रदर्शन पर चलकर परम पिता परमात्मा की भक्ति में अग्रसर हो सकेगा।

आपका भ्राता

अजमेर **के० पी० भार्गव**

आर्यसमाज की महान सेवा

आदरणीया बहन !

आपने लहुदा कठिनाइयों तथा संकट के समय भी वेद प्रचार का बहुत ही प्रशंसनीय कार्य किया है। वैदिक साहित्य इतना सस्ता तथा शीघ्र प्रकाशन करने चाहिएं। भगवान् से प्रार्थना है कि आपको तथा श्री भारतेन्द्र जी को अच्छा स्वास्थ्य तथा दीर्घायु प्रदान करे।

...वेदों का भाष्य बहुत सुन्दर ढंग से प्रकाशित है। मैं आपका बहुत ही धन्यवादी हूं। भगवान आपके परिवार को निरोग तथा दीर्घायु प्रदान करे।

आपका भाई

चरखी दादरी **कुन्दन सिंह आर्य**

श्रीयुत्, मंत्री जी, सादर नमस्ते।

भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्माण का समाचार पढ़ कर हमें हार्दिक प्रसन्नता हुई। ईश्वर की कृपा से भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का सितारा भारत के कोने में वैदिक धर्म की जय करता हुआ चमकता रहे यह हमारी शुभ कामना है।

भवदीय

कन्हैया लाल उप मंत्री

आर्य समाज

सिरोही

श्री भारतेन्द्र नाथ जी ! नमस्ते।

आपका परिपत्र डा० विमल का सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित "दयानन्द और सायण के वेद भाष्यों का तुलनात्मक अध्ययन" ग्रन्थ पर प्राप्त हुआ।

इस सम्बन्ध में मैंने प्रधान जी के पास विरोध पत्र भेज दिया है। उस ग्रन्थ में महर्षि स्वामी दयानन्द जी के सम्बन्ध में कुछ भ्रांतियां फैलाकर आर्य समाज को तोड़ने का प्रयास किया गया है, यह बड़े दुर्भाग्य की बात होगी।

कृष्ण मोहन लाल गुप्त

आर्य समाज मन्दिर,

करी सराय

मान्यवर महोदय, सादर नमस्ते !

सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित 'सायण तथा दयानन्द के वेदभाष्यों का तुलनात्मक अध्ययन' नामक ग्रन्थ के आपत्तिजनक अंशों पर आप द्वारा किए गए पत्र व्यवहार सम्बंधी विवरण पत्रिका प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद ।

'इस सम्बंध में मेरा भी संक्षिप्त अभिमत यही है कि सार्वदेशिक सभा जैसी आर्यसमाज की शिरोमणि संस्था को उक्त भ्रामक ग्रन्थ को प्रकाशित नहीं करना चाहिए था' । किन्तु रोना यही है कि अंग्रेजी की गौरव-गरिमा हमारे आर्य समाजी बन्धुओं और नेताओं के हृदयों से कम नहीं हुई और यही कारण है कि चाहे कुछ भी अन्ट-सन्ट विषय लेकर कोई भी 'डाक्टरेट' प्राप्त कर लेवे तो वह इन्हें पूज्य है । दूसरा अन्य कोई आर्य विद्वान चाहे कितना भी उत्तम ग्रन्थ लिखे तो उसे या किसी गुरुकुल के असाधारण प्रतिभा वाले स्नातक को कभी प्रोत्साहन न देंगे ।

भवदीय

काशीनाथ शास्त्री एम० ए०
साहित्यालंकार, विद्या वाचस्पति

गोंदिया (महाराष्ट्र)

श्रेय मार्ग और जन-ज्ञान

अपने आपको सत्य मार्ग पर चलाने के लिए आपके जन-ज्ञान का ग्राहक बन बैठा । पहले एक प्रति किसी मित्र के यहाँ से पढ़ने को मिली थी, जिसका परिणाम इस पत्रिका का ग्राहक बनने की उत्सुकता के रूप में हुआ । कई महीनों से इसका रसास्वादन कर रहा हूं । कई खोजपूर्ण और अच्छे लेख पढ़ने को मिले । जिनके लिए मैं आपको व उन विद्वानों को, सत्य ज्ञान की ज्योति को निरन्तर जलता देखना चाहते हैं, जिनमें पक्ष-पात व गर्व लेश मात्र भी नहीं है किन्तु जिनकी एक ही अभिलाषा है कि वेदों का 'यथार्थ स्वरूप' लोगों के समक्ष आए तथा अपना कल्याण करते हुए प्राणी मात्र का कल्याणकर पाएं ।

—**बलवीर आर्य** जोधपुर

साहसी योजना के लिए साधुवाद

दयानन्द संस्थान द्वारा आधुनिक ढंग पर साहित्य प्रकाशन पर बधाई एवं हार्दिक धन्यवाद । ऐसे साहित्य प्रकाशन का आने वाले समय में बहुत ही सम्मान होगा। यह हमारा सुदृढ़ विश्वास है ।

आपके साहस योजना और नई शैली के लिए साधुवाद । प्रकाशन सामग्री के नए रंग-रूप कार्य और उद्देश्य को बल एवम् प्रेरणा अवश्य मिलेगी । विश्वास रखें । आर्य समाज की विश्व के कोने-कोने में ख्याति और प्रसार का प्रचार आपके द्वारा अच्छा साहित्य प्रकाशित करके दिया जाता है ।

राणा प्रताप बाग, दिल्ली — **रा० स० खरबन्दा**

श्रीमती सम्पादिका महोदया,

जन-ज्ञान में आपकी टिप्पणी पढ़कर मेरे मन में आपके प्रति प्रतिष्ठा और श्रद्धा के अथाह भाव उभरे हैं ।

मैं स्वयं तो उस व्यक्ति को दयानन्द जी का सच्चा अनुयायी मानता हूं जो कि निर्भीकता से अपने विचार प्रकट करने में संकोच न करे चाहे वे कटु सत्य हों।

—राधेलाल जायसवाल

केसरगंज, अजमेर — भूतपूर्व जिला व सत्र न्यायधीश

आर्यसमाज के उत्थान से ही भारतोदय

आदरणीय बहिन ! सादर नमस्ते !

मेरी धारणा व्यक्तिगत तौर से यह है कि आर्यसमाज के उत्थान से ही विश्वोदय सम्भव है। क्योंकि वेद की रक्षा तथा उसका प्रचार ही सब समस्याओं का समाधान है। वेद पिता की आज्ञा है, माता का प्यार है, इसके मार्ग पर चलकर ही संसार सुखी हो सकता है।

वेद प्रचार का बीड़ा आर्यसमाज ने ही उठाया है। दयानन्द संस्थान ने तो इस दिशा में सराहनीय कार्य किया है।

परन्तु बड़े खेद से लिखना पड़ता है कि आर्यसमाज में ऐसे तत्त्व घुस गए हैं जो आर्यसमाज की मान्यताओं और नियमों तक को नहीं जानते। उन्हें सिद्धान्त का ज्ञान बिल्कुल भी नहीं है। उन लोगों ने ही आर्यसमाज के कार्य को धीमा कर रखा है। परम पिता परमात्मा ! आर्यसमाज के नेताओं को सद्बुद्धि दो, ताकि वे समाज के कार्यकर्त्ता बनकर देश तथा धर्म की सेवा करें, न कि मालिक बन बैठें।

अन्त में मैं प्रभु से आपके पूर्ण स्वस्थ जीवन और दीर्घायु की मंगल कामना करता हूं।

जि० हिसार — —चन्द्र प्रकाशार्य

नेता कहां मर गए ?

दिल्ली आर्यसमाज ग्रीन पार्क (अर्जुन नगर) का विशाल मंदिर गिरा दिया गया। क्या आर्यसमाज तेज हीन हो गया, उसका पौरुष मर गया ?

वेदी पर घोषणा करने वाले नेता कहां हैं, धिक्कार है ऐसे कायर नेताओं को—

मेहरौली — —विजय कुमार

आर्यसमाज के ये कर्णधार : ये संस्थाएं

वैदिक किले के मुख्य द्वार पर महर्षि दयानन्द जी के दार्शनिक दृष्टिकोण से टकरा कर चूर-चूर होने के उपरान्त संसार के समस्त मतावलम्बी

शायद अब पिछली खिड़की से घुसने का प्रयास कर रहे हैं। जहां उस महामानव के अनुयायी आर्य समाज का पहरा लगा है। आर्यसमाज की सतर्कता रणनीति एवं आगे बढ़ने की क्षमता को देख अनायास मुझे यह शंका होने लगी है कि कहीं लोभ में आकर इन सैनिकों ने अपने आप को ऐसे लोगों से सन्धि करने के लिए बाध्य तो नहीं कर दिया है।

एक 'गुरुकुल' के अन्तराल में झाँक कर जब मैंने देखा तो एक प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित तथा उसके निम्नकोटि के निकम्मेंपन का साक्षात प्रमाण है। स्वयं को विश्वविद्यालय लिखने वाला गुरुकुल चुल्लु भर पानी के योग्य है ही साथ ही प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा उस सुग्रीव से कम नहीं जो गद्दीधर बनने के बाद अपने कर्त्तव्य को ही भूल गया था।

मेरा सन्देह उस समय और बढ़ गया था जब मैं ५ सितम्बर को अपने सात वर्षीय पुत्र को प्रवेश दिलाने के लिए इस गुरुकुल में लेकर पहुंचा। वहां का वातावरण अपने स्पष्ट चित्र से जितना मुझे समझा सका वहां के निर्जीव-गौरव ने जो अपनी आत्मकथा सुनाई तथा वहाँ के उंगली के पोरों पर गिने जा सकने वाले विद्यार्थियों को देखकर जितना भी मैं अनुभव कर सका, उससे मेरे हृदय को इतनी चोट लगी कि मैं वहां के पूज्य आचार्य जी के पास जाकर सिसक उठा। शायद वे समझ रहे थे कि मैं पुत्र मोह में व्याकुल हूं किन्तु ऐसी बात न थी। मेरी एक नौ वर्षीय सुपुत्री 'कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस में भी पढ़ती है। जहां के देवता तुल्य आचार्य श्री महेन्द्र प्रताप शास्त्री तथा उनकी धर्म पत्नी माता अक्षय कुमारी की गोद में अपनी बच्ची को देकर मैं ही क्या प्रत्येक दम्पति पूर्ण निश्चिन्त हो जाता है। त्याग और कर्म की साक्षात प्रतिमाओं के संरक्षण में वर्षों से आदर्श ब्रह्मचारिणियों का निर्माण वास्तव में गर्व की बात है। किन्तु जिस गुरुकुल विश्व विद्यालय का उल्लेख इससे पहले किया है उसमें गुरुकुल परम्पराओं के गर्भ में मानव के जिस अजेय चरित्र का पोषण होता है सर्वथा अभाव है। अन्ततः मुझे निराश होकर लौटना पड़ा और उस बच्चे काप्रवेश मैंनें एक अन्य "आर्य गुरुकुल महाविद्यालय" में कराया वहां से भी मैं पूर्ण सन्तुष्ट न था।

गुरुकुल प्रणाली की शिक्षा को आर्यसमाज अपनी बपौती मानता है। किन्तु इसे सर्वतोमुखी बनाने का प्रयत्न तो दूर रहा, समाज में इसे उपहास का विषय बना दिया गया है। आर्यों को कलंकित करने वाले यह अगुआ न केवल पद लोलुपता के शिकार हैं बल्कि आर्य साहित्य को भी दूषित कर रहे हैं। दान के द्वारा प्राप्त धन, भवनों के द्वारा प्राप्त किराया तथा बैंकों में जमा निधि के द्वारा ब्याज का जो दुरुपयोग यह आर्यसमाज में अधर्म पोषण कर रहे हैं। वह अधिक दिनों तक छिपाया नहीं जा सकता। आश्चर्य की बात तो यह है कि इस पाखण्ड और मिथ्यावाद का पोषण शिरोमणी संस्थाओं द्वारा किया जा रहा है। "सायण तथा दयानन्द के वेद भाष्यों का तुलनात्मक अध्यन" पुस्तक को रद्द करने के लिये जब देश के चोटी के आर्य विद्वान एकमत हैं तो क्या कारण हैं कि नेतागण अपनी हठधर्मी का परिचय दे रहे हैं। भविष्य के गर्भ में आर्यसमाज के जिस इतिहास का जीवन पल रहा है वह इन नेताओं को क्षमा करेगा कि नहीं यह तो समय ही बतलाएगा किन्तु मैं इतना अवश्य बता देना चाहता हूं कि ऐसी बुद्धि से किसी साहसिक कार्य की आशा करना व्यर्थ है।

—रामसिंह 'सर्राफ'

पानी के लिए तरसते गाँव में

आर्य सरोवर

नवधनाढ्य वर्ग ने अपने ऐशो-आराम पर पैसा पानी की तरह बहाकर, धन के बल पर ऐश्वर्य का नग्न प्रदर्शन कर समाज में भारी असमानता को पनपाया है। इस भारी असमानता ने ही समाज में विद्रोह की भावना को जन्म दिया है।

ऐसे समय में कुछ संस्कारित उद्योगपति ऐसे भी हैं जिन्होंने अर्जित धन का दुरुपयोग न कर उसका काफी अंश जन सेवा व दूसरों की भलाई में लगाकर आदर्श उपस्थित किया है। ऐसा ही एक 'आर्य परिवार' है राजस्थान के ग्राम शेरड़ा के श्री भूपाल आर्य एवं श्री लालमन आर्य का जिसने जनसेवी कार्यों के माध्यम से देश के उद्योगपतियों के समक्ष आदर्श उपस्थित किया है।

ऋषि दयानन्द का भक्त 'आर्य परिवार'

श्री लालमन आर्य विगत अनेक वर्षों से प्रेरणा लेकर, वैदिक संस्कारों से अभिभूत होकर जनसेवी कार्यों में रत हैं। वे महान् शिक्षा सेवी, सादगी व विनम्रता की मूर्ति, परोपकारी प्रवृति के व्यक्ति हैं। उन्होंने अनेक शिक्षण संस्थाओं आयुर्वेद औषधालयों तथा पुस्तकालयों की स्थापना कराई है। समाज में फैली शराब, दिखावे, दहेज आदि कुरीतियों के निवारण के लिये ठोस कार्य किया है।

यह परिवार श्री गंगानगर जिला के ग्राम शेरड़ा का निवासी है। विगत वर्ष सितम्बर १९७४ में शेरडा व उसके आस-पास वर्षा बिल्कुल नहीं हुई। अकाल ने ग्रामवासियों के समक्ष एक विकराल समस्या खड़ी कर दी। लगभग ५०० परिवार अनाज व पानी के लिए तरस गए ग्रामवासी गांव छोड़कर भागने तक को विवश हो उठे। अपने पैतृक गांव को उजड़ता देखकर श्री आर्य जी का हृदय रो उठा, दूसरे गांव में पीने के पानी की भीषण समस्या थी। तमाम कुएं खारे हो चुके थे। कई-कई मील चलकर महिलाओं तक को पानी लाना पड़ता था।

गाँव को न उजड़ने देंगे

श्री आर्य जी ने अपने भाई-भतीजों से वार्ता की। तत्पश्चात गांव के लोगों की बैठक की। बोले…गांव न उजड़े, सभी अकाल पीड़ितों को रोजगार मिले तथा कोई स्थाई समस्या हल हो ऐसा कार्यक्रम बनाना चाहिए। अन्त में गांव में एक पक्का तालाब बनाकर रोजगार देने के साथ-साथ पानी की समस्या के स्थायी हल पर विचार किया गया। आर्य परिवार ने एक समिति नियुक्त करसामूहिक सहयोग की भावना से काम शुरू करा दिया।

१६ नवम्बर को सरोवर की खुदाई का कार्य प्रारम्भ हो गया। सबसे पहले जोहड़ की तली को गोबर से लिपवाकर उस पर यज्ञ किया गया। दिल्ली, कलकत्ता, बंगलौर, हिसार तक के अनेक विशिष्ट व्यक्तियों की उपस्थिति में इस महान् कार्य का श्रीगणेश हुआ। सभी ने हाथों में फावड़े व टोकरियां लेकर मिट्टी हटाई। ग्रामीणों में बताशे बंटे। गांव में उल्लास का वातावरण छा गया। बेकारी व अकाल से मुरझाये हुए चेहरे खिल उठे। शेरड़ा मेहरिर व बीबापुर गाँवों के लगभग ढ़ाई सौ व्यक्ति सरोवर की खुदायी में जुट गए। मजदूर पुरुष को चार रुपये व स्त्री को तीन रुपये प्रतिदिन की मजदूरी दी गई। मिस्त्रियों को नौ रुपये के हिसाब से दिया गया। छोटे-छोटे बालकों को भी दो रुपया रोज के हिसाब से बिना काम किए ही दिया गया।

श्री लालमन जी ने भारी लू व तपन में स्वयं खड़े होकर कार्य का संचालन किया। गांव के सभी लोगों ने इस पुनीत कार्य में योग दिया। देखते ही देखते सरोवर की खुदाई पूरी हो गयी। खुदाई के बाद उसे पक्का किया जाने लगा। पूरे एक वर्ष में सरोवर बनकर तैयार हो गया। १४२ फुट चौड़ा तथा २१-१/२ फुट गहरा भव्य सरोवर तैयार हो गया। इसमें ६९ लाख लीटर पानी की क्षमता है।

विगत१६ अगस्त १९७५ को इस आर्य सरोवर का उद्घाटन केन्द्रीय उप-मंत्री केदारनाथ के हाथों द्वारा सम्पन्न हुआ तो ग्राम ही नहीं अपितु समस्त क्षेत्र में प्रसन्नता की लहर दौड़ उठी। राजस्थान के सिंचाई मंत्री श्री हीरा लाल देवपुरा ने इसे ग्राम को भेंट किया। उस अवसर पर ग्रामीणों का हर्ष व उल्लास देखते ही बनता था।

श्री लालमन आर्य व उनका परिवार इकानामिक ट्रांसपोर्ट आर्गेनाइजेशन सेन्ट्रल ट्रांसपोर्ट आफ इण्डिया जैसे संस्थानों का संचालन करते हैं। इस परिवार की सबसे बड़ी खूबी यही रही है कि वह सार्वजनिक हित के कार्यों पर हृदय खोलकर धन व्यय करता है, दूसरों के दुःख को अपना दुःख मानकर उसमें सहयोगी होने के लिए तैयार रहता है।

श्री लालमन जी उस दिन अपने भतीजों श्री दयानन्द आर्य, श्री चन्द्रमोहन आर्य तथा श्री संतलाल जी आदि की उपस्थिति में कह रहे थे,……आर्यसमाज स्थापना शताब्दि वर्ष में मेरी कोई स्थायी जनहितकारी कार्य करने की अभिलाषा थी ईश्वर ने 'आर्य सरोवर' के रूप में उसकी पूर्ति की है।

काश! देश का उद्योगपति वर्ग 'आर्य परिवार' से प्रेरणा लेकर छोटे-छोटे गांवों, कस्बों व नगरों की इस प्रकार की समस्याओं के निराकरण में रुचि लेने लगे तो विषमता व अनेक कठिनाइयां स्वतः ही समाप्त होती चली जायेंगी।

—शिव कुमार गोयल

---

१५० सैकड़ा के सत्यार्थ प्रकाश मंगाएं : बांटें

एक

प्रथम प्रकाशः

प्रार्थना विषय

ओं शन्नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।
शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुरुक्रमः ॥१॥

ऋग्वेद अष्टक १, अध्याय ६, वर्ग १८, मन्त्र ९
मण्डल १, अनुवाक १४, सूक्त ९०, मन्त्र ९

पदच्छेद —शम् । नः । मित्रः । शम् । वरुणः । शम् । नः । भवतु । अर्यमा ।
शं । नः । इन्द्रः । बृहस्पतिः । शम् । नः । विष्णुः । उरुऽक्रमः ।

पदार्थ

हे मनुष्यो ! जैसे हमारे लिये

शम्	सुखकारी
नः	हम लोगों के लिये
मित्रः	सबका सुख करने वाला
शम्	शान्ति सुख का देने वाला
वरुणः	सबसे अति उन्नति वाला
शम्	आरोग्य सुख का देने वाला
नः	हम लोगों के लिये
भवतु	हो
अर्यमा	न्याय करने वाला
शम्	ऐश्वर्य सुखकारी
नः	हम लोगों के लिये
इन्द्रः	परमैश्वर्य देने वाला
बृहस्पतिः	महान् वेद-विद्या का पालने वाला
शम्	विद्याव्याप्ति देने वाला
नः	हमारे लिये
विष्णुः	सब गुणों में व्याप्त होने वाला
उरुक्रमः	जिसके बहुत पराक्रम हैं वह

है, वैसे तुम्हारे लिये भी हो।

अन्वय –हे मनुष्या यथाऽस्मदर्थमुरुक्रमो मित्रो नः शमुरुक्रमो वरुणः नः शमुरुक्रमोऽर्यमा नः शमुरुक्रमो बृहस्पतिरिन्द्रो नः शमुरुक्रमो विष्णुः नः शम् च भवतु तथा युष्मदर्थमपि भवतु।

भावार्थ हे मनुष्यो ! जैसे हमारे लिये बहुत पराक्रम वाला, सबका सुख करने वाला हम लोगों के लिये सुखकारी वा जिसके बहुत पराक्रम हैं, वह सर्वोत्कृष्ट हम लोगों के लिये शान्ति सुख का देने वाला वा जिसके बहुत पराक्रम हैं वह न्याय

करने वाला हम लोगों के लिये आरोग्य सुख का देनेवाला वा जिसके बहुत पराक्रम हैं वह महत् वेद-विद्या का पालने वाला वा जिसके बहुत पराक्रम हैं वह परमैश्वर्य देने वाला हम लोगों के लिये ऐश्वर्य सुखकारी वा जिसके बहुत पराक्रम हैं वह सब गुणों में व्याप्त होने वाला परमेश्वर तथा उक्त गुणों वाला विद्वान् सज्जन हम लोगों के लिये पूर्वोक्त सुख और विद्या में सुख देने वाला हो।

व्याख्यान—हे सच्चिदानन्दानन्तस्वरूप ! हे नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाव ! हे अद्वितीयानुपम जगदादिकारण ! हे अज, निराकार, सर्वशक्तिमन्, न्यायकारिन् ! हे जगदीश, सर्वजगदुत्पादकाधार ! हे सनातन, सर्वमंगलमय, सर्वस्वामिन् ! हे करुणाकरास्मत्पितः, परमसहायक ! हे सर्वानन्दप्रद, सकल दुःख विनाशक ! हे अविद्यांधकारनिर्मूलक, विद्यार्क प्रकाशक ! हे परमैश्वर्यदायक, साम्राज्य प्रसारक ! हे अधमोद्धारक, पतितपावन, मान्यप्रद ! हे विश्वविनोदक, विनयविधिप्रद, विश्वासविलासक ! हे निरंजन, नायक, शर्मद, नरेश, निर्विकार ! हे सर्वान्तर्यामिन्, सदुपदेशक, मोक्षप्रद ! हे सत्यगुणाकर, निर्मल, निरीह, निरामय, निरुपद्रव, दीनदयाकर, परमसुखदायक ! हे दारिद्र्य विनाशक, निर्वैर विधायक, सुनीतिवर्धक, हे प्रीतिसाधक, राज्यविधायक, शत्रु विनाशक ! हे सर्व बलदायक, निर्बलपालक, धर्मसुप्रापक ! हे अर्थसुसाधक, सुकामवर्द्धक, ज्ञानप्रद ! हे सन्ततिपालक, धर्मसुशिक्षक, रोगविनाशक ! हे पुरुषार्थ प्रापक, दुर्गुणनाशक, सिद्धिप्रद ! हे सज्जनसुखद, दुष्टसुताड़न, गर्वकुक्रोधकुलोभ विदारक ! हे परमेश, परेश, परमात्मन्, परब्रह्मन् ! हे जगदानन्दक परमेश्वर, व्यापक, सूक्ष्माच्छेद्य ! हे अजरामृताभयनिर्बन्धनादे ! हे अप्रतिम प्रभाव-निर्गुणतुलविश्वाद्य-विश्ववन्द्य-विद्वद्विलासकेत्याद्यनन्तविशेषणवाच्य ! हे मंगलप्रदेश्वर ! आप सर्वथा सबके निश्चित **'मित्र'** हो। हमको सत्यसुखदायक सर्वदा हो ! हे सर्वोत्कृष्ट, स्वीकरणीय, वरेश्वर आप **'वरुण'** अर्थात् सबसे सर्वोत्तम हो, आप हमको परमसुखदायक हो। हे पक्षपात रहित, धर्मन्यायकारिन् ! आप **'अर्यमा'** (यमराज) हो, हमारे लिये न्याययुक्त सुख देने वाले आप ही हो। हे परमैश्वर्यवन् ! **'इन्द्र'** ईश्वर ! आप हमको परमैश्वर्ययुक्त शीघ्र स्थिर सुख दीजिये ! हे महाविद्य, वाचोऽधिपते, **'बृहस्पते'** परमात्मन् ! हम लोगों को (बृहत्) सब से बड़े सुख को देने वाले आप ही हो। हे सर्वव्यापक, अनन्तपराक्रमेश्वर **'विष्णो'** आप हमको अनन्त सुख देओ। जो कुछ माँगेंगे सो आप से ही हम लोग मांगेंगे। सब सुखों का देने वाला आपके विना कोई नहीं है। सर्वथा हम लोगों को आपका ही आश्रय है, अन्य किसी का नहीं, क्योंकि सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयामय, सबसे बड़े पिता को छोड़ के नीच का आश्रय हम लोग कभी न करेंगे। आपका तो स्वभाव ही है कि अंगीकृत को कभी नहीं छोड़ते, सो आप सदैव हमको सुख देंगे, यह हम लोगों को दृढ निश्चय है ॥१॥

स्वाध्याय हे सच्चिदानन्दस्वरूप परमात्मन् ! आप सबके हितकारक हैं; हितचिन्तक हैं; सबका कल्याण करने वाले **'मित्र'** हैं; सर्वोत्कृष्ट, सर्वोत्तम, सर्वोपरि विराजमान वरणीय, कमनीय **'वरुण'** हैं; न्यायकारी, न्यायव्यवस्थास्थापक, पक्षपात रहित इंसाफ करने वाले **'अर्यमा'** हैं; परमैश्वर्यवान्, ऐश्वर्योत्पादक, कर्मानुसार सबको उदारतापूर्वक अनेकैश्वर्यप्रदाता **'इन्द्र'** हैं; आप बृहत् वेद विद्या के उत्पादक, रक्षक, पालक **'बृहस्पति'** हैं; आप सर्वव्यापक, सर्वत्र व्याप्त, समस्त सद्‌गुणों का आश्रयस्वरूप, सर्वगुणागार कण-कण में समाने वाले **'विष्णु'** हैं; सृष्टि उत्पत्ति, पालन, धारण, रक्षण और समय आने पर उसके प्रलय आदि बहुत अद्‌भुत

पराक्रम करने वाले 'उरुक्रम' हैं; हमारे लिये हितकारक, सुखप्रद, कल्याणकारी, आरोग्यसुखवर्द्धक-वर्षक, ऐश्वर्यप्रदायक, विद्याप्रदाता, सर्वसद्गुणसम्पन्न, गुणागार, कर्मठ, कर्मशील, विद्याविनोदी, परोपकारी, धर्मज्ञ, सन्मार्गारोही बनाइये ! पिता ! आपके चरणों में हम जो आपके भक्त हैं, और विश्व भर में सिवाय आपके किसी अन्य पदार्थ अथवा व्यक्ति, जड़-चेतन को अपना इष्ट देव स्वीकार नहीं करते, यही नम्र निवेदन कर रहे हैं, इन्हें स्वीकार करो। स्वीकार करो, स्वीकार करो।

Oh Almighty God, Thou art ever the Friend of all in everyway 'मित्रः'; Thou art ever the Vouchsafer of true happiness to us. 'वरुणः' Oh most Excellent, Acceptable, Supreme Master Thou art the Elect, The Highest and Best of all. Thou art the Imparter of the highest bliss to us. 'अर्यमा' Oh Impartial Righteous Dispenser of justice, Thou art the Controller of all and thou alone art, therefore, the Granter of happiness combined with justice to us (Thy devotees). 'इन्द्रः' Oh Mighty Lord, Master of all power and pelf, bestow soon upon us lasting happiness combined with the greatest power and wealth 'बृहस्पतिः' Oh God, Great Lord of all the lords and speech. Master of great beings, Thou alone art the Granter of the greatest happiness to us. 'विष्णुः' Oh all pervading, Omnipotent God, Lord of infinite prowess, vouchsafe endless happiness to us. Whatever we require we can ask only of thee, for there is none but Thee who can grant us all happiness. Thou art our refuge under all circumstances, and none else can be. This is why we will not resort to any mean being for shelter in preference to Thee, the Almighty, just and Kind God the Great Father of all. It is Thy Nature, Oh Lord, not to give up anyone whom Thou hast once received. We fully hope, therefore, that Thou wilt surely always grant us bliss.

(शंकर छन्द)

विश्ववन्द्य वरुणेश शान्त हो, मित्रमंगलमूल।
न्यायनिपुण नेता नितान्त हो, नित्य हमें अनकूल ॥
इन्द्र 'सूर्य' ऐश्वर्य विधाता, वाणीपति अतितूल।
व्यापक विष्णु बने सुखदाता, कभी न हो प्रतिकूल ॥१॥

तात्पर्य—(**मित्रः**) सबसे स्नेह करने वाला परमात्मा (**नः**) हमारे लिये (**शम्**) शान्तिदायक हो (**वरुणः**) सर्वउत्तम प्रभु (**शम्**) शान्तिदायक हो (**अर्यमा**) यम, न्यायकारी जगत्पति (**नः**) हमारे लिये (**शम्**) सुखदायक हो (**इन्द्रः**) परम ऐश्वर्य वाला महाबली जगदीश (**नः**) हमारे लिये (**शम्**) कल्याणदाता हो, (**बृहस्पतिः**) बड़े-बड़े सूर्य चन्द्रादिकों का और वेदवाणी का स्वामी परमेश्वर हमारे लिये कल्याणकारी हो (**उरुक्रमः**) महाबली (**विष्णुः**) सर्वव्यापक अन्तर्यामी परमात्मा (**नः शम्**) हमें बल देकर सदा सुखी बनावें। (श्री स्वामी अच्युतानन्दजी रचित ऋग्वेदशतक से)

दो

स्तुति विषय

ओं अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देव मृत्विजम् ।
होतारं रत्नधातमम् ॥२॥

अष्टक १, अध्याय १, वर्ग १, मन्त्र १
ऋग्वेद——————————
मंडल १, अनुवाक १, सूक्त १, मन्त्र १

पदच्छेद –अग्निम् । ईले । पुरःऽहितं । यज्ञस्य । देवं । ऋत्विजं । होतारं । रत्नऽधातमम् ।

पदार्थ

अग्निः	सबका अग्रणी, (नेता) जिस सच्चिदानन्द आदि लक्षणयुक्त ब्रह्म (परमात्मा) है वही अग्नि शब्द से ग्रहण करने योग्य है ।
ईले	मैं स्तुति करता हूँ, याचना करता हूँ ।
पुरोहितं	जो छेदन धारण आकर्षणादि गुणों से युक्त स्थूल सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व सूक्ष्म परमाणु आदि प्रकृति को धारण करने वाले ।
यज्ञस्य	विद्वानों के सत्कार महिमा, कर्म संगम सत्संगति से उत्पन्न विद्यादि के दान एवं शिल्प क्रिया के उत्पन्न करने वाले ।
देवं	दान देने वाले, हर्षोल्लास उत्पन्न करने वाले, सर्वत्र विजेता और प्रकाश करने वाले ।
ऋत्विजं	बारम्बार उत्पत्ति के समय में स्थूल सृष्टि के करने वाले, हर ऋतु में उपासना करने योग्य, संसार को गतिमान् करने वाले ।
होतारं	देने तथा ग्रहण करने वाले ।
रत्नधातमम्	पृथिवी तथा सुवर्णादि रत्नों को धारण करने वाले (सबसे बढ़कर इन रत्नों को धारण करने और दान देने वाले ।)

अन्वय—अहं यज्ञस्य पुरोहितमृत्विजं होतारं रत्नधातमम् देवमग्निमीले ॥

भावार्थ सबके अग्रणी (नेता) सच्चिदानन्दादि लक्षणयुक्त, स्थूल सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व परमाणु रूप मूल प्रकृति का धारण करने वाले, विद्वानों के सत्कार महिमा, कर्म, संगम, सत्संगति से उत्पन्न विद्या एवं शिल्प विद्या को देने वाले, हर्षोल्लास के उत्पादक, सर्वदा विजेता और सर्वत्र प्रकाश करने वाले, बारम्बार स्थूल सृष्टि

की रचना करने वाले, ऋतु-ऋतु में उपासना करने योग्य, संसार को गतिमान् करने वाले, पृथिवी तथा सुवर्णादि रत्नों को धारण और इनका दान करने वाले परब्रह्म परमात्मा की मैं स्तुति, प्रार्थना तथा याचना करता हूँ।

व्याख्यान—सब मनुष्यों को परमात्मा का यह उपदेश है—हे मनुष्यो! तुम लोग इस प्रकार से मेरी स्तुति, प्रार्थना और उपासना आदि करो। जैसे पिता वा गुरु अपने पुत्र वा शिष्य को शिक्षा करता है कि तुम पिता वा गुरु के विषय में इस प्रकार से स्तुति आदि का वर्त्तमान करना, वैसे सब के पिता और परम गुरु ईश्वर ने हम को कृपा से सब व्यवहार और विद्यादि पदार्थों का उपदेश किया है जिस से हम को व्यवहार-ज्ञान और परमार्थ-ज्ञान होने से अत्यन्त सुख हो। जैसे सब का आदि कारण ईश्वर है वसे परम विद्या वेद का भी आदि कारण ईश्वर है।

हे वन्द्येश्वराग्ने! आप ज्ञानस्वरूप हो, आपकी मैं स्तुति करता हूँ। हे सर्व-हितोपकारक! आप **'पुरोहितम्'** सब जगत् के हितसाधक हो। हे यज्ञदेव! (आप) सब मनुष्यों के पूज्यत्तम और ज्ञान यज्ञादि के लिये कमनीयतम हो। **'ऋत्विजम्'** सब ऋतु वसन्त आदि के रचक अर्थात् जिस समय जैसा सुख चाहिये उस समय वैसे सुख के सम्पादक आप ही हो। **'होतारम्'** सब जगत् को समस्त योग और क्षेम के देने वाले हो और प्रलय समय में कारण में सब जगत् का होम करने वाले हो। **'रत्नधातमम्'** रत्न अर्थात् रमणीय पृथिव्यादिकों के धारण करने वाले तथा अपने सेवकों के लिए रत्नों के धारण करने वाले एक आप ही हो। हे सर्वशक्तिमन् पर-मात्मन्! इसलिये मैं बारम्बार आपकी स्तुति करता हूँ, इसको आप स्वीकार कीजिये, जिस से हम लोग आप के कृपापात्र हो के सदैव आनन्द में रहें।।२।।

स्वाध्याय—'स पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्' (योगसूत्र २.२६) वह पर-मात्मा कालाबाधित है और पूर्व पुरुष और गुरुओं का भी गुरु है। **'स नः पितेव सूनवे'** (यजु० ३-२४) वह जगदीश हमारा पिता है और हम उसके पुत्र हैं। सांसा-रिक गुरु और पिता अपने शिष्यों अथवा पुत्रों को सुशिक्षा देते रहते हैं कि हमारे शिष्यो अथवा पुत्रो! तुम संसार में आये हो तो परम्परा से चली आ रही सनातन मर्यादा के अनुसार अपना आचरण बनाओ। जिस प्रकार भगवान् राम अपने सद्-गुरु महर्षि वसिष्ठ की आज्ञा पालन किया करते और शतशः आशीर्वाद प्राप्त किया करते थे, उसी प्रकार तुम हम जो तुम्हारे गुरु हैं आचार्य हैं, उसी प्रकार हमारे आदेशों को कार्यान्वित करो और जिस प्रकार श्रवण कुमार अपने माता-पिता की सेवा-शुश्रूषा में तल्लीन रहा करता था, उसी का अनुकरण तुम हम जो तुम्हारे माता-पिता हैं हमारे सम्बन्ध में किया करो, क्योंकि

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्द्धन्त आयुर्विद्या यशो बलम्॥

(मनु० २-१२१)

अर्थात्—जो सदा नम्र सुशील विद्वान् और वृद्धों की सेवा करता है उसकी आयु, विद्या, कीर्ति और बल ये चार सदा बढ़ते हैं और जो ऐसा नहीं करते उनके आयु आदि चारों नहीं बढ़ते। (सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास ३) इसी प्रकार परब्रह्म परमात्मा जो हम सबका भी गुरु और पिता है हमें शिक्षा देता है कि मुझे मेरे निज

नाम ओ३म् और अग्नि, पुरोहित, यज्ञदेव, ऋत्विक, होता, और रत्न धाता आदि अनेक गौणिक नामों से मेरा आह्वान करो, मुझे बुलाओ, मुझे सम्बोधित करो, मुझे पुकारो, मेरी स्तुति करो, मेरे आगे प्रार्थना करो। इसका फल यह होगा कि तुम कभी अभिमानी नहीं बन सकोगे, अहंकार में नहीं आओगे और मेरे गुणों को यथाशक्य धारण करके, परम पुरुषाथ द्वारा मानव जीवन को सफल बना सकोगे।

अग्नि ईले— (**अग्निः कस्मादग्रणी भवति, यत्सच्चिदानन्दादिलक्षणं ब्रह्म तदेवात्राग्न्यादि नाम वाच्यम्**—'अग्निः' सच्चिदानन्दादि लक्षणयुक्त ब्रह्म (परमात्मा) है, वही 'अग्नि' शब्द से ग्रहण करने योग्य है; **ईले=अहं स्तुवे, याचे, अधिगच्छामि, प्रेरयामि**--मैं स्तुति करता हूँ, याचना करता हूँ— (महर्षिभाष्य)।

पुरोहितम्—(**पुरोहितम्=पुरस्तात्सर्वं जगद् दधाति छेदनधारणाकर्षणादि गुणांश्चापितय**—जो छेदन, धारण, आकर्षणादि गुणों से युक्त, स्थूल सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व सूक्ष्म परमाणु आदि प्रकृति को धारण करने वाले हैं— (महर्षि भाष्य)।

यज्ञस्य देवम्—(**यज्ञस्य=इज्यतेऽसौ यज्ञस्तस्य महिम्नः कर्मणो विदुषां सत्कारस्य संगतस्य सत्संगत्योत्पन्नस्य विद्यादि दानस्य शिल्पक्रियोत्पाद्यस्य**— विद्वानों के सत्कार, महिमा, कर्म, संगम, सत्संगति से उत्पन्न विद्यादि के दान एवं शिल्पविद्या के उत्पन्न करने वाले;) **देवः=देवो दानाद्वा, दीपनाद्वा द्योतानाद्वा द्युस्थानो भवति, देवं=दातारं, हर्षकरं, विजेतारं, द्योतकम्**— दान देने वाले, हर्षोल्लास उत्पन्न करने वाले, सर्वत्र विजेता और प्रकाश करने वाले---(महर्षिभाष्य)।

ऋत्विजम्—(**ऋत्विजं=य ऋतौ ऋतौ प्रयुत्पत्तिकालं संसारं संगतं यजति करोति**—जो बारम्बार उत्पत्ति के समय में स्थूल सृष्टि के करने वाले, हर ऋतु में उपासना करने योग्य, संसार को गतिमान् करने वाले- महर्षिभाष्य।

होतारं—(**होतारं=ह्वातारं जुहोतेः होतेः दातारमदातारं**— देने तथा ग्रहण करने वाले—(महर्षिभाष्य)।

रत्नधातमम् (**रत्नधातमम्=रमणीयानां पृथिव्यादि सुवर्णादीनि च रत्नानि दधाति धापयति अतिशयेन रत्नधा इति धनानां दातृतमम्**—पृथिवी तथा सुवर्णादि रत्नों को धारण करने वाले, सबसे बढ़कर इन रत्नों को धारण करने वाले और दान देने वाले—(महर्षिभाष्य)।

जो सच्चिदानन्दादि लक्षण युक्त, सबका अग्रणी, नेता परब्रह्म परमेश्वर है जो छेदन, धारण, आकर्षणादि गुणों का धारण करने वाला है, जो स्थूल सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व परमाणुरूप प्रकृति को सम्भाले रहता है; जो विद्वानों के सत्कार; संगति आदि से उत्पन्न विद्यादि के दान एवं शिल्प-विद्या के उत्पन्न करने वाला है; जो दान देने, हर्षोल्लास उत्पन्न करने, सदा सर्वदा विजयी रहने और प्रकाश करने वाला है; जो बारम्बार सृष्टि की उत्पत्ति करने, संसार को गतिमान् बनाने और समस्त ऋतुओं में उपासना करने योग्य है; जो सबका दाता और समस्त पदार्थों को ग्रहण करने (प्रलय के समय मूल प्रकृति के परमाणुओं में परिवर्त्तित कर देने) वाला है; जो पृथिव्यादि दिव्य लोकलोकांतरों तथा बहुमूल्य रत्नों का निर्माण करके अपने नियन्त्रण में, अधिकार में रखने वाला है; जो इन दिव्य रत्नों को सबको दान देने वाला है, मैं ऐसे सर्वगुणसम्पन्न, सर्वोत्कृष्ट, सर्वोत्तम, सर्वसुखदायक परब्रह्म पर-

मेश्वर की स्तुति करता हूँ, उसके गुणानुवाद गाता हूँ, स्तोत्र स्तवन करता हूँ, क्योंकि उसके अतिरिक्त कोई दूसरा स्तोतव्य नहीं, उपास्य नहीं, वरणीय पदार्थ, अथवा शक्ति विद्यमान् है ही नहीं।

'अग्निम् ईले' Oh adorable, Effulgent God, right knowledge is Thy characteristic, I glorify Thee 'पुरोहितम्' Oh Well-wisher and Benefactor of all, Thou art the Accomplisher of the good of the whole world. 'यज्ञस्य देवम्' Oh Revered Lord, Thou art the worthiest of beings adored by man, and the Most Desirable goal of all great and philanthropic works. 'ऋत्विजम्' Thou art the Author of the Spring and other seasons that is, the Creator and Dispenser of various things for our enjoyment according to the different seasons. 'होतारम्' Thou art the Bestower on all living beings of everything they require in life and of the strength and foresight to protect whatever they have, during the continuance of the created universe, and the Immerser of the whole world in its prime material cause when it ceases to exist. 'रत्नधातमम्' Thou alone art the creator and Supporter of all the charming natural entities, like the earth, and the Keeper of the stores of precious stones, valuable metals and such other commodities for Thy servants Hence, Oh Almighty God, I glorify Thee repeatedly. Accept my acts of adoration that we may ever be worthy of Thy Graces, and be always happy.

(आनन्द वृत्त)

पिता प्रजेश होत् अग्नि, ज्ञानरूप हो।
सदैव यज्ञदेव हो, ऋतुस्वरूप हो॥
परोपकार प्राण, रत्नराशि भूप हो।
करूँ गुणानुवाद, आपका अनूप हो॥ ॥२॥

तात्पर्य – (**अग्निम्**) ज्ञानस्वरूप व्यापक, सबके अग्रणी नेता और पूज्य परमात्मा की मैं (**ईले**) स्तुति करता हूँ। कैसा है वह परमेश्वर? (**पुरोहितम्**) जो सबके सामने स्थित, उत्पत्ति से पूर्व परमाणु आदि जगत् का धारण करने वाला (**यज्ञस्य देवम्**) यज्ञादि उत्तम कर्मों का प्रकाशक, (**ऋत्विजम्**) वसन्त आदि सब ऋतुओं में पूजनीय, (**होतारम्**) सब सुखों का दाता तथा प्रलयकाल में सब पदार्थों का ग्रहण करने वाला (**रत्नधातमम्**) सूर्य, चन्द्रमा आदि रमणीय पदार्थों का धारक और सुन्दर मोती, हीरा, सुवर्ण, रजत आदि पदार्थों का अपने भक्तों को देने वाला है।

(श्री स्वामी अच्युतानन्दजी रचित ऋग्वेदशतक से)

तीन

प्रार्थना विषय

ओं अग्निना रयिमश्नवत् पोषमेव दिवे दिवे ।
यशसं वीरवत्तमम् ॥३॥

अष्टक १, अध्याय १, वर्ग १, मन्त्र ३

ऋग्वेद———————————————

मण्डल १, अनुवाक १, सूक्त १, मन्त्र ३

पदच्छेद—अग्निना । रयिम् । अश्नवत् । पोषं । एव । दिवेऽदिवे । यशसं । वीरवत् । ऽतमम् ।

पदार्थ

अग्निना	परमेश्वर से
रयिम्	विद्या सुवर्णादि उत्तम धन को
अश्नवत्	प्राप्त होता है
पोषं	आत्मा और शरीर की पुष्टि द्वारा सुखप्रद के लिये
दिवेदिवे	प्रतिदिन
यशसं	सर्वोत्तम कीर्ति बढ़ाने वाले
वीरवत्तमं	जिसे अच्छे-अच्छे विद्वान् और शूरवीर चाहते हैं

अन्वय--मनुष्यः अग्निनैव दिवेदिवे पोषं यशसं वीरवत्तमम् रयिमश्नवत् ।

भावार्थ—मनुष्य परमेश्वर की उपासना करके ही प्रतिदिन आत्मा एवं शरीर की पुष्टि द्वारा सुख-प्रद, सर्वोत्तम कीर्तिवर्धक विद्वानों तथा शूरवीरों द्वारा अभिलषित विद्या, सुवर्णादि उत्तम धनों को प्राप्त होता है ।

व्याख्यान—हे महादातः ईश्वराग्ने ! आपकी कृपा से स्तुति करने वाला मनुष्य '**रयिम्**' उस विद्यादि धन तथा सुवर्णादि धन को अवश्य प्राप्त होता है कि जो धन प्रतिदिन **पोषमेव**' महापुष्टि करने और सत्कीर्ति को बढ़ाने वाला तथा जिससे विद्या, शौर्य, धैर्य, चातुर्य, बल, पराक्रम और दृढांग, धर्मात्मा, न्याययुक्त अत्यन्त वीर पुरुष प्राप्त हों, वैसे सुवर्ण रत्नादि तथा चक्रवर्ती राज्य और विज्ञानस्वरूप धन को मैं प्राप्त होऊँ तथा आपकी कृपा से सदैव धर्मात्मा होकर अत्यन्त सुखी रहूँ ॥३॥

स्वाध्याय—**अग्निना रयिमश्नवत्**—(**अग्निना**=**परमेश्वरेण**—परमेश्वर से; **रयिम्**=**विद्या सुवर्णादि उत्तम धनं**—विद्या सुवर्णादि उत्तम धन को; **अश्नवत्**=**प्राप्नोति**—प्राप्त होता है—(महर्षि भाष्य) ।

पोषमेव दिवेदिवे—(**पोषं**=**आत्म शरीरयोः पुष्ट्या सुख प्रदम्**—आत्मा तथा शरीर की पुष्टि द्वारा सुखप्रद; **दिवे दिवे**=प्रतिदिन--(महर्षि भाष्य) ।

यशसं वीरवत्तमम्—(**यशसं**=**सर्वोत्तम कीर्ति वर्धनम्**—सर्वोत्तम कीर्ति

बढ़ाने वाले; **वीरवत्तमम्=वीराः विद्वांसः शूराश्च विद्यन्ते यस्मिन् तदतिशयितं वीरवत्तमम्**—जिसे अच्छे-अच्छे विद्वान् और शूरवीर चाहा करते हैं– (महर्षि भाष्य)।

परमेश्वर की स्तुति-प्रार्थना-उपासना के फलस्वरूप साधक को, प्रभु भक्त को, विद्या, सुवर्णादि उत्तम धन की प्राप्ति सुलभ हो जाती है। यह प्रभु कृपा से प्राप्त धन दिन-प्रतिदिन बढ़ता रहता है, फलता-फूलता रहता है, चिरस्थायी हो जाता है, शीघ्र नष्ट हो जाने वाला नहीं होता। परमात्म-भक्त सज्जन इन धनों को, इन प्रभु-प्रदत्त उत्तम धनों को, आनन्दपूर्वक पूर्णायु तक स्वयं भोगते, साथ ही अधिकारी पात्रों में इन्हें वितरण करके, अभावग्रस्त व्यक्तियों की अन्न, वस्त्र आदि के दान द्वारा सहायता करते हैं और इस प्रकार यज्ञमय जीवन-यापन करते हुए **'लोक सुखी परलोक सुहेले'** के अनुसार अपना लोक-परलोक सुधार लेते हैं, परमात्म कृपा से उपलब्ध यह उत्कृष्ट धन सर्वोत्तम श्रेणी का होता है जिसकी अभिलाषा दिग्गज विद्वान्, धुरन्धर पण्डित, विविध नवीन आविष्कारों के प्रणेता वैज्ञानिक महानुभाव, शस्त्रास्त्र निपुण युद्धकला-विशारद, निर्भीक वीर, स्वजाति, स्वधर्म, स्वराष्ट्र पर बलिदान हो जाने की उदात्त भावनाओं से ओत-प्रोत महान् योद्धा—सब सदैव करते चले आये हैं।

यह धन **'पोषमेव दिवे दिवे'** दिन-प्रतिदिन प्रभु कृपा से बढ़ने वाले होते हैं। इनमें वृद्धि ही होती है, क्षति कभी नहीं होने पाती। इनसे जहां धैर्य, शौर्य, चातुर्य आदि सद्गुणों की बढ़ती होती है, वहां सत्कीर्ति भी उत्तरोत्तर उन्नत होती रहती है। सत्कीर्ति अर्जित करना मानव-जीवन का लक्ष्य होता है, क्योंकि **'कीर्तिर्यस्य स जीवति'** जिस व्यक्ति की सत्कीर्ति है, सुन्दर यश है, लोक में सुनाम है, वास्तव में वही जीवित कहलाने का अधिकारी है, न कि वे जो **'बदनाम अगर होंगे तो क्या नाम न होगा ?'** पर विश्वास और आचरण करते हैं।

महाभारत युद्ध के अवसर पर मोहग्रस्त अर्जुन ने लड़ने से इनकार कर दिया तब भगवान् श्रीकृष्ण ने उसको भीरुता के पाप से बचाने के लिये उपदेश देते हुए कहा—

अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं संग्रामं न करिष्यसि।
ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि ॥ (गीता २-३३)

अर्थात्—और यदि तू इस धर्मयुक्त संग्राम को नहीं करेगा तो स्वधर्म को और कीर्ति को खोकर पाप को प्राप्त होगा।

अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम्।
संभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते ॥ (गीता २-३४)

अर्थात्—और सब लोग तेरी बहुत काल तक रहने वाली **अपकीर्ति** का भी कथन करेंगे, और (वह) **अपकीर्ति** माननीय पुरुष के लिये मरण से (भी) अधिक (बुरी) होती है।

भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथाः।
येषां च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघवम् ॥ (गीता २-३५)

अर्थात्—और जिनके लिये बहुत माननीय होकर (भी अब) तुच्छता को प्राप्त होगा। वे महारथी लोग तुझे भय के कारण युद्ध से उपराम हुआ मानेंगे।

अवाच्यवादांश्च बहून्वदिष्यन्ति तवाहिताः ।
निन्दन्तस्तव सामर्थ्यं ततो दुःखतरं नु किम् ॥

(गीता २-३६)

अर्थात्— और तेरे वैरी लोग तेरे सामर्थ्य की निन्दा करते हुए बहुत से न कहने योग्य वचनों को कहेंगे और उससे अधिक दुःख क्या होगा ? वास्तव में—

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम् ।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः ॥

(गीता २-३७)

अर्थात्—या (तो) मरकर स्वर्ग को प्राप्त होगा अथवा जीतकर पृथ्वी को भोगेगा । इससे हे अर्जुन, युद्ध के लिए निश्चय वाला होकर खड़ा हो ।

इस प्रभु-प्रदत्त **कीर्तिरूपी रयि** (धन) की प्राप्ति पर विद्या बढ़ती है, धैर्य, शौर्य, चातुर्य और पराक्रम में वृद्धि होती है; अंगों में दृढ़ता स्थिर हो जाती है । इसीलिये आर्य लोग वेद मंत्र द्वारा परमात्मा से प्रार्थना किया करते हैं कि हे प्रभो !

ओं भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः
भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवाँ
सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥

(सामवेद उ० ९-३-९)

अर्थात्—**(यजत्राः देवाः)** यजनीय-पूजनीय देवेश्वर प्रभो ! हम लोग **(कर्णेभिः भद्रं शृणुयाम)** कानों से सदा कल्याण को सुनें **(अक्षभिः भद्रं पश्येम)** आँखों से कल्याण को देखें **(स्थिरैः अंगैः)** दृढ़ हस्त, पाद, वाणी आदि अंगों से और **(तनूभिः)** देहों से **(तुष्टुवांसः)** आपकी स्तुति करते हुए **(यत्)** जितनी **(आयुः व्यशेमहि)** आयु को प्राप्त होवें वह सब **(देवहितम्)** आत्मा, शरीर, इन्द्रिय और विद्वानों के हितकारक हो ।

यह निश्चय जानिये कि प्रकाशस्वरूप परमात्मा की उपासना करने से, उसकी भक्ति में रत रहने से ही ऐसे दिव्य धन प्राप्त होते हैं, जो चिरस्थायी होते हैं । साधारणतः कहा जाता है कि धन दो-तीन पीढ़ियों तक रहता है तदनन्तर नष्ट हो जाता है, यह लक्ष्मी अपना स्वामी बदलती रहती है ।

महाभारत के अनुशासन पर्व में लक्ष्मी और गौ का संवाद वर्णित है । लक्ष्मी ने गौ की बहुत प्रशंसा करते हुए अपने महत्त्व का वर्णन किया और कहा मैं तुम्हारे मध्य में रहना चाहती हूँ तो गौ ने कहा—

गाव ऊचुः— **अध्रुवा चपला च त्वं सामान्या बहुभिः सह ।**
न त्वामिच्छाम भद्रं ते गम्यतां यत्र रंस्यसे ॥

(अनुशासनपर्व ९३-११)

अर्थात्—देवि ! तुम चंचला हो । कहीं भी स्थिर होकर नहीं रहती । इसके सिवा तुम्हारा बहुतों के साथ एक-सा सम्बन्ध है; इसलिये हम तुम्हें नहीं चाह ती हैं? तुम्हारा कल्याण हो । तुम जहाँ आनन्दपूर्वक रह सको, जाओ ।

धन-सम्पत्ति के विषय में कहा हुआ है—

धन के भागी चार हैं, धर्म, चोर, नृप, आग ।
धर्म छोड़ विचारण करें, तिनके बड़े अभाग ।।

जो व्यक्ति अथवा समाज धर्म-मार्ग से भ्रष्ट हो जाते हैं, उनका वैभव उनका गुण-गौरव देर तक नहीं रह पाते। इसलिये निश्चय जानिये कि प्रभु-भक्ति और प्रभु-कृपा के फलस्वरूप हस्तगत हुआ धन ही सुस्थिर और श्रेयस्कर होता है। वही धन सुयश, सुबल, सुबुद्धि, सुकीर्ति बढ़ाने वाला, पारिवारिक व्यक्तियों की पुष्टि करने और उनको सब प्रकार के सुयश से सुशोभित करने वाला होता है। इस दैवी धन से समन्वित व्यक्ति, समाज, राष्ट्र विद्वानों, शूरवीरों और धर्मात्माओं से युक्त होकर इह-लौकिक यश-कीर्ति, मान-सम्मान का भागी बनकर और धर्माचरण द्वारा पार-लौकिक श्रेय और आनन्द का अनन्त काल तक उपभोग करते हैं।

परमपिता परमेश्वर से जिस सुकीर्ति की याचना की गई है वह ऐसी होनी चाहिये जो शत्रु के मुख से भी बरबस निकलती रहे। घर में अपनी पत्नी को कोई बेगम कह ले, रानी कहे अथवा पटरानी के शब्द से सम्बोधित कर ले, कौन रोकता है? अतः प्रशस्ति वही जिसे संसार करे, तारीफ वही जो शत्रु के मुख से भी निकल जाय, गुणगान वही जो सब कोई करने पर विवश हो। भगवान् श्री राम ने रावण की राजधानी लंका पर चढ़ाई की। लंकेश ने अपने दो मंत्रियों –शुक और सारण— को राम की सेना का भेद लेने के लिये भेजा। वे छद्मवेष धारण करके राम की छावनी में प्रविष्ट हुए। वापसी पर उन्होंने रिपोर्ट पेश करते हुए कहा—

एकस्थान गता यत्र चत्वारः पुरुषर्षभाः।
लोकपाल समाः शूराः कृतास्त्राः दृढ़ विक्रमा ।।
रामो दाशरथी श्रीमांल्लक्ष्मणश्च विभीषणः ।।
सुग्रीवश्च महातेजाः महेन्द्रसम विक्रमः ।।
एते शक्ताः पुरीं लंकां सप्राकारं सतोरणाम् ।।
उत्पाट्य संक्रमयितुं सर्वे तिष्ठन्तु वानराः ।।
यादृशं तद्धि रामस्य रूपं प्रहरणानि च।
वधिष्यति पुरीं लंकां एकस्तिष्ठन्तु ते त्रयः ।।

(वाल्मीकीय रामायण, युद्धकांड सर्ग २५ श्लोक २८-३१)

अर्थात्—एक स्थान पर चार पुरुषश्रेष्ठ इकट्ठे बैठे थे। वे सभी लोकपालों के समान शूरवीर थे। उन्होंने शस्त्र-संधान सिद्ध किया हुआ है। वे दृढ़ विक्रम वाले लोग थे। वे थे– दशरथ-पुत्र श्रीराम, लक्ष्मण, विभीषण और इन्द्र समान विक्रमी महा-तेजस्वी सुग्रीव। ये वीर-चतुष्टय अपने बड़े-बड़े तोरणों (गेटों) समेत लंकापुरी को उखाड़ फेंकने में समर्थ हैं—वानर सेना को एक तरफ ही रहने दो और श्रीराम का जैसा रूप है और जैसे उसके आयुध हैं, वह तो अकेला ही लंकापुरी को नष्ट कर देगा, शेष तीन वीर भी एक तरफ बैठे रहें।

शुक और सारण ने पुनः कहा—

यस्मिन्न चलते धर्मो यो धर्मं नातिवर्त्तते ।
यो ब्राह्ममस्त्रं वेदांश्च वेद वेदविदांवरः ।।

यो भिन्द्याद् गगनं बाणैर्मेदिनीं वापि दारयेत् ।
यस्य मृत्योरिव क्रोधः शक्रस्येव पराक्रमः ॥
(वाल्मीकीय रामायण, युद्धकांड सर्ग २८, श्लोक १८-१९)

अर्थात्—जिस (राम) में धर्म स्थित रहता है, जो धर्म से च्युत नहीं होता, जो वेद-शास्त्र तथा धनुर्वेदविदों में श्रेष्ठ है; जो अपने बाणों से आकाश को फोड़ने और पृथिवी को फाड़ने में समर्थ है; जिसका क्रोध मृत्यु समान भयंकर और जिसका पराक्रम इन्द्र के समान है ।

प्रभो ! हमें भी अपने कृपा-कटाक्ष से ऐसी सुकीर्ति प्रदान कीजिये जैसी आपने अपने भक्त श्री राम को दी थी कि युद्ध की घटाएँ सिर पर भयंकर गर्जन-तर्जन करती हुई मंडरा रही थीं और उसके गुणों पर मोहित और प्रभावित एवं आकर्षित होकर शत्रु-पक्ष के भेदिये अपने राजा के मुंह पर निःशंक राम की स्तुति किये जा रहे हैं ।

'अग्निना' Oh Effulgent God and Mighty Donor, it is by Thy Grace that Thy adorer **'अश्नवत्'** invariably gains **'रयिम्'** wealth in the form of useful knowledge and precious material things like gold, which **'पोषम् एव दिवे दिवे'** indeed, daily brings him great strength and advances his **'यशसं'** good repute, bestowing upon him earning, valour, fortitude, skill, powers, prowess, firmness of body **वीरवत्तमम्'** very brave and just associates; so may I acquire gold and other valuable stones, imperial sovereign sway, the knowledge of sciences, that ever bring a perfectly upright life, by Thy Grace, I may be always exceedingly happy.

(अति बरवै छन्द)

हे अग्ने ज्ञानेश्वर ! वैभव दें आप ।
दिनदिन बाढ़ें बुधवर, पा पुष्टि प्रताप ॥
गुण-गौरव यश पावें, कल कीर्ति कलाप ।
चक्रवर्ति कहलावें, मेटें भवताप ॥ ॥३॥

तात्पर्य—(**अग्निना एव**) परमात्मा की कृपा से ही पुरुष (**रयिम्**) धन को (**अश्नवत्**) प्राप्त होता है । जो धन (**दिवे दिवे पोषम्**) दिन-दिन में बढ़ने वाला है (**यशसम्**) कीर्तिदाता और (**वीरवत्तमम्**) जिस धन में अत्यन्त विद्वान् और शूर-वीर पुरुष विद्यमान हैं ।

(श्री स्वामी अच्युतानन्दजी रचित ऋग्वेदशतक से)

चार

स्तुति विषय

ओं अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत।
स देवाँ एह वक्षति ॥४॥

अष्टक १, अध्याय १, वर्ग १, मन्त्र २
ऋग्वेद————————————
मंडल १, अनुवाक १, सूक्त १, मन्त्र २

पदच्छेद—अग्निः। पूर्वेभिः। ऋषिभिः। ईड्यः। नूतनैः। उत। सः। देवान्। इह। वक्षति।

पदार्थः

अग्निः	परमेश्वर
पूर्वेभिः	वर्त्तमान वा पहिले समय के विद्वान्
ऋषिभिः	मन्त्रों के अर्थों को देखने वाले विद्वान्
ईड्यः	स्तुति करने योग्य
नूतनैः	वेदार्थ के पढ़ने वाले ब्रह्मचारी तथा नवीन तर्क तथा कार्यों में ठहरने वाले प्राण
उत	वही
सः	परमेश्वर
देवान्	अच्छी-अच्छी इन्द्रियां विद्यादि गुण
इह	इस संसार वा इस जन्म में
आ	सब ओर से
वक्षति	प्राप्त करता है

अन्वय—योऽयमग्निः पूर्वेभिरुत नूतनैः ऋषिभिरीड्योस्ति। स इह देवान् वक्षति समन्तात् प्रापयतु।

भावार्थ—वर्त्तमान वा पहिले समय के विद्वान् मन्त्रार्थद्रष्टा ऋषि अथवा नवीन वेदार्थ के पढ़ने वाले ब्रह्मचारियों के लिये वह (अग्निः) परमेश्वर स्तुति करने योग्य है। वही दिव्यगुणधारी देवताओं और विद्वानों को प्राप्त होता है।

व्याख्यान—हे सब मनुष्यों के स्तुति करने योग्य ईश्वराग्ने! **'पूर्वेभिः'** विद्या पढ़े हुए प्राचीन **'ऋषिभिः'** मन्त्रार्थ देखने वाले विद्वान् तथा **'नूतनैः'** वेदार्थ पढ़ने वाले नवीन ब्रह्मचारियों से **'ईड्यः'** स्तुति के योग्य **'उत'** और जो हम लोग (मनुष्य) विद्वान् वा मूर्ख हैं उनसे भी अवश्य आप ही स्तुति के योग्य हो, सो स्तुति को प्राप्त हुए आप हमारे और सब संसार के सुख के लिये दिव्यगुण अर्थात् विद्यादि को कृपा से प्राप्त करो। आप ही सबके इष्टदेव हो।

स्वाध्याय—सर्व कल्पों में वेदार्थ के जानने और प्रचार करने वाले अगणित ऋषि हो गये हैं। **'ऋषयो मन्त्रद्रष्टारः'** ऋषि वेदों का निर्माण करने वाले नहीं (जैसा कि भ्रम-वश योरुपियन विद्वान् और उनकी जूठन पर पले उनके कतिपय चेले-चांटे कहते सुने जाते हैं) मन्त्रार्थों का दर्शन, मनन और प्रचार करने वाले विद्वानों की 'ऋषि' संज्ञा है अथवा **'साक्षात्कृत धर्माण ऋषयो बभूवुः'** **'धर्मजिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः'**– धर्म के जिज्ञासुओं के लिये वेद परम प्रमाण है, जिन्होंने धर्म का साक्षात्कार किया वे ऋषि कहलाये। वेदमन्त्रों के साथ 'देवता', 'ऋषि' और 'छन्द' लिखा हुआ देखकर यह परिणाम निकाल लेना कि ऋषि मन्त्र रचयिता हैं, भ्रम मात्र है। " **'ऋषयो मन्त्रदृष्टयः'** **'मन्त्रान्सम्प्रादुः'** (निरु० १-२०) जिस-जिस मन्त्रार्थ का दर्शन जिस-जिस ऋषि को हुआ और प्रथम ही जिसके पहले उस मन्त्र का अर्थ किसी ने प्रकाशित नहीं किया था, किया और दूसरों को पढ़ाया भी, इसलिये अद्यावधि उस-उस मन्त्र के साथ ऋषि का नाम स्मरणार्थ लिखा आता है जो कोई ऋषियों को मन्त्रकर्त्ता बतलावें उनको मिथ्यावादी समझें। वे तो मन्त्रों के अर्थप्रकाशक हैं।"

—सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ७

इन मन्त्रद्रष्टा और साक्षात्कृतधर्मा ऋषियों के अतिरिक्त जो महानुभाव ब्रह्मचर्य आदि साधनों में तत्पर, अष्टांग योगाभ्यास में रत रहने वाले, वेदपाठी, वैदिक वाङ्मय के सतत अभ्यासी आजकल भी विद्यमान हैं; उन सबके द्वारा वह पूज्य परमात्मा ही स्तुति करने योग्य है अन्य कोई तथाकथित देवी-देवता, ऋषि-मुनि, अवतार-महात्मा अथवा प्राकृतिक पदार्थ पर्वत, वन, नदी, नाला, समुद्र, मेघ, अग्नि, बिजुली, वर्षा आदि इस योग्य नहीं कि हम पूज्य भाव से, इष्ट-श्रद्धा से उन्हें परमेश्वर समझकर, उन्हें मुक्ति प्रदाता मानकर उनकी स्तुति, प्रार्थना और उपासना करके अपने अमूल्य, दुर्लभ मानव-जीवन को व्यर्थ नष्ट करते फिरें। उस दयालु देव के कृपा-कटाक्ष से ही दिव्य शक्ति सम्पन्न प्राकृत-पदार्थों—वायु, अग्नि, सूर्य, चन्द्रमा, तारा-गण, विद्युत्, उषा आदि की रचना और स्थिरता होती है। हमारे शरीरों में विद्यादि सद्गुण, मन-बुद्धि चित्त, अहंकार रूप अन्तःकरण चतुष्टय—ये सब उसी प्रभु की ही दिव्य देन हैं। नेत्र, श्रोत्र, घ्राण, त्वचा, रसना आदि पांच ज्ञानेन्द्रिय और हस्त, पाद, मूत्रेन्द्रिय, पुरीषद्वार और जिह्वा आदि पांच कर्मेन्द्रिय भी उसी दाता का दान है। उक्त समस्त देवों को सन्मार्गगामी बनाकर ही हम अपना लोक परलोक सुधार सकते हैं। मन पर पूर्ण अधिकार जमाकर ही कल्याण-पथ के पथिक बन सकते हैं; क्योंकि **'मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः'** मनुष्यों का मन ही उनके बन्धन और मोक्ष का एकमेव कारण है। इसीलिये कहा गया है—**'मन के जीते जीत है, मन के हारे हार'** अथवा **'मन जीते जग जीत'** परमेश्वर! आप स्वप्रकाशस्वरूप हैं, आप पूर्व-कालिक ऋषियों एवं आजकल के वेदाध्ययनरत महानुभावों द्वारा सर्वदा स्तुति किये जाते हैं। हमें वर दो कि हम भी आपकी स्तुति करते रहें और इसी जन्म मे आपकी दी हुई बलिष्ठ इन्द्रियों और स्वस्थ शरीर द्वारा हमें प्राप्त हूजिये ताकि हम जन्म-मरण के चक्र से छूट सकें।

'अग्निः' Oh Self Effulgent God, Fittest to be glorified by all humanity, Thou alone indeed art **'ईड्यः'** Worthy of being adored **'पूर्वेभिः'** by those men of learning in the van of the affairs of

humanity 'ऋषिभिः' able to interpret the Vedas 'नूतनैः' by those who, living in life of discipline are devoting their time and attention to the study of the Vedas, 'उत' and by such amongst us as are otherwise learned or are void of learning, 'सः' So, glorified by all, be gracious to vouchsafe, 'इह आवक्षति' that we and the whole world may attain 'देवान्' great powers, such as true and useful learning, for, Oh Lord, Thou alone art the Bestower of all that is desirable for us.

(अरिल्ल छन्द)

हे ज्ञानेश पूर्व ऋषि भारी,
अथवा जो नूतन ब्रह्मचारी।
सबके पूज्य दिव्यगुणधारी,
आप करें यश-वृद्धि हमारी। ॥४॥

तात्पर्य—(अग्निः) परमेश्वर (पूर्वेभिः ऋषिभिः) प्राचीन ऋषियों से (उत) और (नूतनैः) नवीनों से (ईड्यः) स्तुति करने योग्य है। (सः) वह (देवान्) देवताओं को (इह) इस संसार में (आवक्षति) प्राप्त करता है।

(श्री स्वामी अच्युतानन्दजी रचित ऋग्वेदशतक से)

पाँच

स्तुति विषय

ओं अग्निर्होता कविक्रतुः सत्यश्चित्रश्रवस्तमः ।
देवो देवेभिरागमत् ॥५॥

अष्टक १, अध्याय १, वर्ग १, मन्त्र ५
ऋग्वेद—
मंडल १, अनुवाक १, सूक्त १, मन्त्र ५

पदच्छेद—अग्निः । होता । कवि ऽक्रतुः । सत्यः । चित्रश्रवःऽतमः । देवः । देवेभिः । आ । गमत् ।

पदार्थः

अग्निः	परमेश्वर
होता	दाता ग्रहीता
कविक्रतुः	सर्वज्ञ है, सब जगत् को जानने और रचनेहारा, जिसने परमाणु आदि पदार्थ और उनके उत्तम उत्तम गुण रचके दिखाये हैं
सत्य :	अविनाशी
चित्रश्रवस्तमः	जिसका अति आश्चर्य रूप श्रवण है
देवः	उत्तम गुणों का प्रकाश करने वाला आपसे आप प्रकाशमान
देवेभिः	विद्वानों के साथ समागम करने से
आ	सब ओर से
गमत्	प्राप्त होता है

अन्वय—यः सत्यश्चित्रश्रवस्तमः कविक्रतुः होता देवोऽग्निः परमेश्वरः सः देवेभिः सहागमत् ।

भावार्थ—जो अविनाशी, आप-से-आप प्रकाशमान, सर्वज्ञ, वेद का उपदेश करने वाला, सर्व विद्यायुक्त परमेश्वर है, जिसका श्रवण अतिआश्चर्यरूप है, देवों (विद्वानों) के साथ समागम करने से प्राप्त होता है ।

व्याख्यान—हे सर्वदृक् ! सबको देखने वाले **'क्रतुः'** सब जगत् के जनक, **'सत्यः'** अविनाशी अर्थात् कभी जिसका नाश नहीं होता, **'चित्रश्रवस्तमः'** आश्चर्य श्रवणादि, आश्चर्य-गुण, आश्चर्यशक्ति, आश्चर्यस्वरूपवान् और अत्यन्त उत्तम आप हो, जिन आपके तुल्य वा आपसे बड़ा कोई नहीं है । हे जगदीश ! **'देवेभिः'** दिव्य-गुणों के सह वर्त्तमान् हमारे हृदय में आप प्रकट हों, सब जगत् में भी प्रकाशित हों, जिससे हम और हमारा राज्य दिव्यगुणयुक्त हो । वह राज्य भी आपका ही है; हम तो केवल आपके पुत्र तथा भृत्यवत् हैं । ॥४॥

स्वाध्याय—कविः--

अग्निः—(**अग्निः**=परमेश्वरो—परमेश्वर (महर्षि भाष्य)

होता—(होता=दाता, ग्रहीता, द्योतको वा—दाता, ग्रहीता, प्रकाशक (महर्षि भाष्य)

कविक्रतुः—(कवि=सर्वज्ञः क्रान्तदर्शनो वा--सर्वज्ञ; क्रतुः=जगत् को जानने और रचने हारा—(महर्षि भाष्य)

सत्यः—(सत्यः=सन्तीति सन्तः सद्भ्यो हितः—अविनाशी—(महर्षि भाष्य)

चित्रश्रवस्तमः—(चित्रः=चित्रं अद्भुतं—विचित्र, अद्भुत; श्रवस्तमः=श्रवः श्रवणं यस्य—जिसका अत्यन्त आश्चर्यरूपी श्रवण है (महर्षि भाष्य)

देवो देवेभिः—(**देवः=स्वप्रकाशः प्रकाशकरो वा**—आपसे आप प्रकाशमान; **देवेभिः=विद्वद्भिः दिव्यगुणैः सह**=विद्वानों के साथ समागम करने से—(महर्षि भाष्य)।

आगमत्—(**आ=समन्तात्**—सब ओर से; **गमत्=गच्छतु, प्राप्तो भवतु**—प्राप्त होता है—(महर्षि भाष्य)।

वह परमात्मा सर्वज्ञ है वेदरचयिता कवि है यह अद्भुत शक्ति का प्राकट्य है जिसने अजर अमर वेद मन्त्रों का निर्माण किया है **'पश्य देवस्य काव्यम् न ममार न जीर्यति'** उस महान् कवि परमेश्वर की अद्भुत वेदरूपी कविता को देखो जो न मरता है न जीर्ण-शीर्ण होता है। उस विचित्र देव का दर्शन अनोखा है श्रवण आश्चर्य-रूप है, अद्भुत है, मधुर है, वह अद्भुत मित्र है, अजीब दोस्त है, उसका गुणगान आह्लादप्रद है उसकी सम्पूर्ण लीलाएँ दंग कर देने वाली हैं; वह देवों, विद्वानों, आर्य पुरुषों, आप्तजनों, उत्तम व्यक्तियों, प्रभु-भक्तों, योगाभ्यास परायण योगियों, परोप-कार-प्रिय सज्जनों की सत्संगति से जाना जाता है, पहचाना जाता है। सद्गुणों को धारण करने वाले सद्गुरुओं, आचार शिक्षक सदाचारी आचार्यों की कृपा से ही उसका साक्षात्कार किया जा सकता है—**'गुरु प्रसादि जपु'**।

वह परमात्मा अनिर्वचनीय है, अद्भुत है, अनूठा है। उसके गुण अपार हैं, साधारण व्यक्ति जो गुरु कृपा से वंचित हैं, हैरान होकर उसके गुणों को सुनते हैं—

ओं तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः॥ (यजु: ४०-५)

अर्थात्—(**तदेजति**) वह ब्रह्म मूर्खों की दृष्टि से चलायमान होता है (**तत् न एजति**) वह ब्रह्म अपने स्वरूप से कभी चलायमान नहीं होता यद्यपि समस्त ब्रह्मांड उसी की दी हुई गति से गतिमान है (**तत् दूरे**) अज्ञानी, दुराचारी मूर्खों से वह बहुत दूर है (**तत् उ अन्तिके**) वही ब्रह्म विद्वान्, सदाचारी पुरुषों के समीप है (**तत् अस्य सर्वस्य**) वह समस्त ब्रह्मांड और सम्पूर्ण जीवों के (**अन्तः**) भीतर (**तत् उ अस्य सर्वस्य**) वह ब्रह्म इस जगत् के और सब जीवों के (**बाह्यतः**) बाहिर भी वर्त्तमान है क्योंकि वह सर्वत्र व्याप्त है।

वह सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी, सब जगत् का कर्त्ता, भक्तों के लिये सुखदाता और सबका हितकर्त्ता है। उसका कीर्तन श्रवण अद्भुत है, मधुर है, मीठा है, कर्णप्रिय है; परन्तु यह गुण-कीर्तन पूर्व संचित शुभ कर्मों के उदय होने पर ही किया जा सकता

है। हम प्रतिदिन देखते हैं कि जिस व्यक्ति का आमाशय रोग-ग्रस्त नहीं, विकृत नहीं, जिसकी जाठराग्नि मन्द नहीं हो गई उसे ही छत्तीस प्रकार के व्यंजन रुचिकर होते हैं; परन्तु ज्वर-ग्रस्त, बिगड़े मेदे और प्रसुप्त जाठराग्नि वाले को खाद्य, पेय, चोष्य, लेह्य आदि अनेक प्रकार के सुस्वादु षट्रस भोजन अच्छे नहीं लगते, एक आँख नहीं भाते। वह तो उनसे घृणा-सी करने लग जाता है। इसी प्रकार जिस भाग्यशाली मनुष्य पर गुरु का, आचार्य का, सन्मार्ग प्रदर्शक श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ सन्त का अनुग्रह हो जाय, उसे ही परमात्म-प्राप्ति के सुपथ पर चलने की सामर्थ्य प्राप्त हो पाती है, उस सर्वश्रीविभूषित सर्वगुणगार परब्रह्म परमेश्वर का ज्ञान, गुण-गान, कीर्तन श्रवण और तदनन्तर उसकी प्राप्ति विद्वान् अष्टांग योगयुक्त योगीजनों के सदुपदेश, सत्संग से ही हो सकती है। सत्संग की महिमा अलौकिक है, अपार है। कहा भी है—

जिन जैसी संगति करी, तिन तैसो फल लीन।
कदली सीप भुजंग मुख, बूंद एक गुण तीन।।

भगवती श्रुति ने भगवान् की विचित्रता का बारबार वर्णन किया है—

ओं चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षँ **सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा ।।**

(यजु० ७-४२)

अर्थात्—(**सूर्य आत्मा**) प्राणी और जड़ जगत् का जो आत्मा है, (**आप्रा द्यावा पृथिवी**) जो सूर्य और अन्य सब लोकों को बना के उनका धारण और रक्षण करने वाला है, (**मित्रस्य**) जो मित्र अर्थात् राग-द्वेष रहित मनुष्य तथा सूर्यलोक और प्राण का (**चक्षुः**) प्रकाश करने वाला है (**वरुणस्याग्नेः**) सब उत्तम कामों में जो वर्त्तमान मनुष्य प्राण अपान और अग्नि का प्रकाश करने वाला है (**चित्रं देवानाम्**) जो अद्भुत स्वरूप विद्वानों के हृदय में सदा प्रकाशित रहता है (**अनीकम्**) जो सकल मनुष्यों के सब दुःख दूर करने के लिए परम उत्तम बल है, वह परमेश्वर (**उदगात्**) हमारे हृदय में यथावत् प्रकाशित रहे। कितना अद्भुत है, विचित्र है, परमात्मा, कितनी अजीब है उसकी अण्डज, जरायुज, स्वेदज और उद्भिज—चार प्रकार की जीव सृष्टि, कितनी चकित कर देने वाली है उसकी प्राकृतिक सृष्टि !

May God the self-effulgent, the giver of the best blessings, the omniscient creator of the whole cosmos, the benefactor of the righteous and industrious whose glory is the most wonderful to hear and know about—the light that illumines all—be ever accessible to us—His devotees.

दिव्य दृष्ट ज्ञान का आधार है। सर्वसृष्ट सत्य, सुषमासार है।
देव है अति दिव्य, गुणदातार है। हो हृदय मम निगम चित्राधार है।।५।।

तात्पर्य—(**अग्निः**) परमेश्वर (**होता**) दाता (**कविः**) सर्वज्ञ (**क्रतुः**) सब जगत् का कर्त्ता (**सत्यः**) अविनाशी और सदाचारी विद्वान् जनों का हितकारी (**चित्रश्रवस्तमः**) जिसका अति आश्चर्यरूपी श्रवण है, वही प्रभु (**देव**) उत्तम गुणों का प्रकाश करने वाला (**देवेभिः**) महात्मा विद्वानों का सत्संग करने से (**आगमत**) जाना जाता है तथा प्राप्त होता है। (श्री स्वा० अच्युतानन्द जी रचित ऋग्वेदशतक मन्त्र ५)

प्रार्थना विषय

ओ३म् यदंग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि।
तवेत्तत्सत्यमंगिरः ।।६।।

अष्टक १, अध्याय १, वर्ग २, मन्त्र १
ऋग्वेद ———————————
मंडल १, अनुवाक १, सूक्त १, मन्त्र ६

पदच्छेद—यत् । अंग । दाशुषे । त्वं । अग्ने । भद्रं । करिष्यसि । तव । इत् । तत् । सत्यं । अंगिरः ।

पदार्थ

यत्	जिस हेतु से
अंग	हे सबके मित्र
दाशुषे	निर्लोभिता से उत्तम-उत्तम पदार्थों के दान करने वाले मनुष्य के लिये
त्वं	मंगलमय
अग्ने	परमेश्वर
भद्रं	कल्याण जो कि विशिष्ट विद्वानों के योग्य है उसको
करिष्यसि	करते हैं
तव इत् तत्	आप ही का
सत्यं	सत्य
अंगिरः	ब्रह्मांड के अंग पृथिवी आदि को प्राण रूप और शरीर में अन्तर्यामी रूप, रसरूप, होके रक्षा करने वाला

अन्वयः—हे अंगिरोऽअंगाग्ने यस्मात् भद्रं करिष्यसि करोषि । तस्मात्तवेत्तवैवेदं सत्यं व्रतमस्ति ।

भावार्थः—हे प्राणरूप, शरीर के अंगों को अन्तर्यामी रूप से रसरूप होकर, रक्षा करने वाले सबके मित्र परमेश्वर क्योंकि आप निर्लोभिता से उत्तम-उत्तम पदार्थों का दान करने वाले मनुष्य के लिये कल्याण करते हैं। यह आपका ही सत्यव्रत (शील) है।

व्याख्यान—हे 'अंग' मित्र ! जो आपको आत्मादि (अर्थात् सर्वस्व) दान करता है उसको 'भद्रं' व्यावहारिक और पारमार्थिक सुख अवश्य देते हो। हे 'अंगिरः' प्राणप्रिय ! यह आपका सत्यव्रत है कि स्वभक्तों को परमानन्द देना। यही आपका स्वभाव हमको अत्यन्त सुखकारक है। आप मुझको ऐहिक और पार-

मार्थिक इन दोनों सुखों का दान शीघ्र दीजिये, जिससे सब दुःख दूर हों, हमको सदा सुख ही रहे ॥६॥

स्वाध्याय—अंग **अग्ने**—(अंग=**सर्वमित्र**—हे सबके मित्र! **अग्ने**= **परमेश्वरः**- परमेश्वर—(महर्षि भाष्य)।

यत् दाशुषे—(यत्=**यस्मात्**=जिस हेतु से; **दाशुषे**—**सर्वस्वं दत्तवते**= निर्लोभिता से उत्तम-उत्तम पदार्थों के दान करने वाले मनुष्य के लिये;—महर्षि भाष्य) प्रभो! ऐसे दानशील मनुष्य के लिये, उत्तमोत्तम पदार्थों के दाता महानुभाव के लिये जो अपनी समस्त सम्पत्ति—सर्वस्व हाजतमन्दों पर लुटा देता है, पात्र मनुष्यों को दे डालता है; सब प्रकार का अभाव दूर करता है— ज्ञानाभाव ग्रस्तों को ब्राह्मण बन कर ज्ञान (विद्या) दान से, न्यायाभाव पीड़ितों को सत्क्षत्रिय के रूप में सन्न्याय प्रदान से और अन्न-धनाभाव से दुःखित लोगों को सद्वैश्य के वेश में अन्न-वस्त्रादि उपलब्ध कराकर उनकी सहायता करता है, उनका हाथ थामता है और उक्त तीनों प्रकार (ज्ञानाभाव, न्यायाभाव और धनाभाव) के अभाव ग्रस्तों से प्रत्युपकार की तनिक भी इच्छा नहीं करता और तदुपरांत आप जो सबको सब कुछ देने वाले महादानी हैं, अपनी चलाचल सम्पत्ति, अपना शरीर और अपनी आत्मा भी आपके अर्पण करता हुआ यज्ञमय जीवन व्यतीत करता है। जो दानी कर्ण का अनुसरण करता है उसके लिये आप कल्याण का सब ओर से वर्षण करते हैं।

दान—दान सात्त्विक, राजस और तामस —तीन प्रकार का होता है।

(१) सात्त्विक दान—

दातव्यमिति यद्दानं दीयते ऽनुपकारिणे।
देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्विकं स्मृतम्॥ (गीता १७-२०)

अर्थात्—दान देना ही कर्त्तव्य है ऐसे भाव से जो दान देश, काल और पात्र के प्राप्त होने पर प्रत्युपकार न कर सकने वाले (जिससे प्रत्युपकार की रंचमात्र आशा ही न हो) दिया जाता है, वह दान सात्त्विक कहा गया है; न कि वह जिसे देने के बाद समाचारपत्रों में नाम ढूंढ़े जायें, रेडियो-प्रसारण सुने जायें अथवा धार्मिक, सामाजिक या राजनैतिक संगठनों द्वारा प्रशंसा, समाज में ख्याति या कि कोटे, परमिट और चुनावों में पार्टी टिकिट की अभिलाषा से दिया जाय।

देश—यथा मसूरी, शिमला आदि शीत प्रधान देशों में अंगीठी, काँगड़ी, कम्बल, लोई, रजाई आदि का दान।

काल—यथा शिशिर और हेमन्त ऋतुओं में गुड़, शक्कर, तिल, भुग्गा, रेवड़ी आदि का दान और ग्रीष्म ऋतु में जल, शर्बत, लस्सी, घड़े, पंखे आदि का दान।

पात्र—यथा रोगी को औषधि-उपचार, भूखे को भोजन, नंगे को कपड़ा, अभावग्रस्त की त्रुटिपूर्ति करना, श्रेष्ठाचारी विद्याभिलाषी ब्रह्मचारियों को पुस्तक दान, पढ़ने-लिखने की सामग्री-उपकरण दान; परन्तु सब अवस्थाओं में समझ-सोच कर; क्योंकि विद्यार्थियों के रूप में कई धूर्त भी घूमते मिल जाते हैं जो पुस्तकें मांगते, स्थानान्तर में जाने के लिये किराया प्राप्त करते और पुस्तकें तथा टिकिट आदि सस्ते दामों बेचकर पैसे जेब में डालते भी देखे जाते हैं, वे कुपात्र हैं।

(२) राजस दान—**यत्तु प्रत्युपकारार्थं फलमुद्दिश्य वा पुनः।**
दीयते च परिक्लिष्टं तद्दानं राजसं स्मृतम्॥ (गीता १७-२१)

अर्थात्—और जो दान क्लेशपूर्वक (जैसे कई फण्डों में सरकारी अधिकारियों के भय से देना पड़ता है) दान ग्रहीता हमारा अमुक काम कर देगा, कोटा परमिट ले देगा, या हमारी मान प्रतिष्ठा होगी, मुकद्दमे के लिये सिफारिश मिल जायगी, देवी-देवता सफलता प्रदान करेंगे आदि—अर्थात् प्रत्युपकार के प्रयोजन से अथवा फल के उद्देश्य से जो दान दिया जाता है, वह राज सदान कहलाता है।

(३) तामस दान—**अदेशकाले अद्दानमपात्रेभ्यश्च दीयते।**
असत्कृतमवज्ञातं तत्तामसमुदाहृतम्॥ (गीता १७-२२)

अर्थात्—और जो दान बिना सत्कार किये अथवा तिरस्कारपूर्वक कुदेश, कुकाल और कुपात्रों के लिये (मद्यमांस, भांग-चरस-गांजा-ताड़ी-मद्धक, अफीम-सिगरेट-तम्बाकू सेवन करने वाले ब्राह्मण नामधारी व्यक्तियों को, पाखण्डी साधुओं, दम्भी सन्तों-महन्तों-मठाधीशों-पुजारियों को) दिया जाने वाला दान तामस कहा गया है, वेद भगवान् ने दान की बड़ी महिमा गाई है—

ओं तवोतिभिः सचमाना अरिष्टा बृहस्पते मघवानः सुवीराः।
ये अश्वदा उत वा सन्ति गोदा ये वस्त्रदाः सुभगास्तेषु रायः॥
(ऋग्वेद ५-४२-८)

अर्थात्—हे (**बृहस्पते**) सूर्य चन्द्रादि सब लोक-लोकान्तरों के स्वामिन्! (**ये तव ऊतिभिः सचमानाः**) जो आपकी रक्षाओं के साथ सम्बन्ध रखने वाले हैं, व (**अरिष्टाः**) दुःखों से दूर (**मघवानः**) धनवान् और (**सुवीराः**) अच्छे पुत्रादि सन्तान वाले होते हैं (**ये अश्वदाः**) जो घोड़ों का दान करने वाले हैं (**उत वा**) और (**सन्ति गोदाः**) गौओं के दाता और (**ये वस्त्रदाः**) जो वस्तुओं का दान करते हैं वे (**सुभगाः**) सौभाग्य वाले हैं (**तेषु रायः**) उनके घरों में ही अनेक प्रकार के धन और सब ऐश्वर्य रहते हैं।

हे प्रभो! जिन पर आपकी कृपा-दृष्टि होती है उन्हीं की सन्तानें उत्तम गुण-सम्पन्न, भाग्यवान्, वृद्धोपसेवी (वृद्धों के दुःख में दुःख और सुख में सुख अनुभव करने वाली हैं। लोकोक्ति प्रसिद्ध है कि **'जीते जी तां अन्न न पाणी—मर गई बीबी जलेब खाणी'** अर्थात्- जीवन में तो माता-पिता को अन्न-जल-वस्त्र-औषधि उपचार आदि साधारण आवश्यकताओं से भी तरसाते रहना और मरने पर मृतक श्राद्ध, छःमाही बरसी का ढोंग रचाना यह अनार्य प्रथा है, आर्यों की रीति-नीति नहीं; उनकी परम्परा नहीं। गौ, घोड़े, वस्त्रादि के दाता सज्जन भाग्यशाली हैं। इस दान के प्रताप से उनके घरों में लक्ष्मी का स्थायी निवास होता है। भारत में जब मुसलमान तानाशाहों ने हिन्दुओं पर असीम अत्याचार करने आरम्भ कर दिये और राष्ट्र को उनके साथ लोहा लेने पर विवश होना पड़ा, तब छठे पादशाह श्री गुरु हरगोबिंद जी ने अपने शिष्यों को भेंट में शस्त्रास्त्रों के अतिरिक्त घोड़े भेंट करने की भी आज्ञा दी थी। वेद से लेकर समस्त आर्य शास्त्रों—इतिहासों में गो-दान की महिमा स्थान-

स्थान पर वर्णन की गई है। च्यवन ऋषि ने महाराज युधिष्ठिर से कहा—

कीर्तनं श्रवणं दानं दर्शनं चापि पार्थिव।
गवां प्रशस्यते वीर सर्वपापहरं शिवम् ॥

(महाभारत अनुशासन पर्व ५१-२०)

अर्थात्—हे महाराज युधिष्ठिर! गौओं के गुण-गान और उसका श्रवण, उनका दान तथा दर्शन करने की बहुत प्रशंसा की गई है। इससे सब पाप नष्ट हो जाते हैं और कल्याण की प्राप्ति होती है।

भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर को कहा—

तथैव गाः प्रशंसन्ति न तु देयं श्रतः परम्
संनिकृष्टफलास्तानि लघ्वर्थाश्च युधिष्ठिर ॥

(महाभारत अनुशासन पर्व ६९-६)

अर्थात्—इसी प्रकार गोदान की भी प्रशंसा की जाती है। गोदान से बढ़कर और कोई दान नहीं है युधिष्ठिर! गोदान का फल निकट भविष्य में मिलता है तथा शीघ्र अभीष्ट अर्थ की सिद्धि करता है।

परब्रह्म परमेश्वर सबसे बड़ा दानी है, जैसा कि वेद में उसने कहा है—

ओं अहं भूमिमददामार्यायाहं वृष्टिं दाशुषे मर्त्याय।
अहमपो अनयं वावशाना मम देवासो अनुकेतमायन् ॥ (ऋग्वेद ४-२६-२)

अर्थात्—(आर्याय अहं भूमिम् अददाम्) मैं अपने पुत्र आर्यपुरुष को पृथ्वी देता हूँ, (अहम्) मैं (दाशुषे मर्त्याय) दानशील मनुष्य के लिये धन की (वृष्टिं) वर्षा करता हूँ (अहम् वावशानाः अपः अनयं) मैं ही बड़ा शब्द करने वाले जलों को (घनघोर गर्जन करने वाली वर्षा को) पृथिवी पर लाया हूँ। (देवासः मम केतुम् अनु आयन्) विद्वान् लोग मेरे ज्ञान के अनुसार चलते हैं।

भद्रं करिष्यसि (भद्रं=कल्याणं कल्याण जो कि विशिष्ट विद्वानों के योग्य है उसको (करिष्यसि=करोषि करते हो महर्षि भाष्य) आप कल्याण करते हैं, अभ्युदय और निःश्रेयस प्रदान करते हो; परन्तु 'दाशुषे मर्त्याय' दानशील पुरुष के लिये, अभाव निवारण करने वाले धर्मात्मा के लिये; क्योंकि पाप-पुण्य अथवा धर्माधर्म की परिभाषा करते हुए किसी ने कहा था—

सर्जनमेवाभावस्य पापमित्युच्यते बुधैः।
दूरीकरणमभावस्य पुण्यमित्यभिधीयते ॥

अर्थात्—संसार में किसी भी प्रकार का (ज्ञान का, न्याय का, धन का) अभाव उत्पन्न करने को विद्वानों ने पाप कहा है और अभाव के दूर करने को बुद्धिमान् सज्जन पुण्य की संज्ञा प्रदान करते हैं।

अंगिरः—(अंगिर=**उत्तमानामंगानां मध्ये अन्तर्यामी प्राणाख्यो ईश्वरः**—ब्रह्मांड के अंग पृथिवी आदि को प्राणरूप और शरीर में अन्तर्यामी रूप, रस-रूप होके रक्षा करने वाला परमेश्वर महर्षि भाष्य) परमेश्वर! आप अन्तर्यामी रूप से प्राणियों के शरीरों में और प्राणरूप होकर इनका रक्षण करते हैं; और रस-रूप होकर प्राणधारियों चेतन सत्तायुक्त देहों के बढ़ने-फूलने में सहायक होते हैं।

अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः।
प्राणापान समायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम् ॥ (गीता १५-१४)

अर्थात् – ईश्वर ही सब प्राणियों के शरीर में स्थित हुआ वैश्वानर अग्नि (जाठराग्नि) रूप होकर, प्राण और अपान से युक्त होकर चार प्रकार (भक्ष्य चबाकर खाने वाला यथा रोटी, भोज्य निगले जाने वाले जैसे दूध, लेह्य चाटा जाने वाला, यथा चटनी, चोष्य —चूसा जाने वाला यथा ऊख-गन्ना, आदि) के अन्न को पचाता है। आपकी इसी पाचन-लीला से ही खाद्य-पेय पदार्थों से शरीर में व्याप्त सप्त-धातु त्वक्, रक्त, मांस, स्नायु, अस्थि, मज्जा और पुरुष में शुक्र या वीर्य और स्त्री में रज—की उत्पत्ति होती है, जिससे शरीर का सारा व्यापार चलता है !

तव इत् तत् सत्यं—(तव इत्=तस्मात् एव—आप ही का, **सत्यं=सत्सु पदार्थेषु सुखस्य विस्तारकं सत्प्रभवं सद्भिर्गुणैरुत्पन्नम्**—सत्यशील स्वभाव—(महर्षि भाष्य) परमेश्वर; यह आपका सनातन अनादि स्वभाव है कि आप दानशील पुरुष को ऊँचा उठाते हैं; अच्छी सन्तान देते हैं, धन-धान्य से उसके भण्डार भर देते हैं।

'अंग' Oh friend, indeed **'भद्रं करिष्यसि'** thou bestowest the gift of worldly happiness as well as the highest bliss **'दाशुषे'** upon the person who surrenders his self and possessions to thee. **'सत्यम्'** To give the highest bliss to thy devotees is thy truthful vow. **'तव इत् तत्'** this very nature of thine is the most felicitous to us. Vouchsafe us soon both worldly and by spiritual bliss, that all miseries being dispelled there may ever remain for us only happiness.

हे स्वप्रकाश स्वरूप परमात्मन्; आप सब सृष्टि के परम मित्र हैं, हितैषी हैं। आप विश्व के अन्दर और बाहर सर्वत्र ओत-प्रोत हैं। उदार-हृदय दानी मनुष्य के, जो कि अपना धन-ऐश्वर्य, अपना शरीर और अपना आत्मा भी आपके चरणों में चढ़ा देता है, अभावग्रस्त प्राणियों की भोजन, छादन, विद्या, न्याय से भरसक सेवा करके उनके अभाव को नष्ट कर देता है, आप उसे निहाल कर देते हैं, सब प्रकार उसका कल्याण कर देते हैं और अपने शाश्वत स्वभाव और सनातन मर्यादा के अनुसार उसे अभ्युदय और निःश्रेयस का भागी बना देते हैं अर्थात् ऐहलौकिक सुख और पारलौकिक मोक्षानन्द का उपभोग करा देते हैं :

हे मित्र ईश ! जिसने, नाम लिया है,
कल्याणपूर्ण उसका, काम किया है।
प्राणेश ! भक्त को धन, धाम दिया है,
व्रत सत्य आपने, नहिं वाम किया है ॥६॥

तात्पर्य—**(अंग अग्ने)** हे सबके मित्र अग्ने ! **(यत् दाशुषे)** जिस हेतु से उत्तम उत्तम पदार्थों के दाता पुरुष के लिये **(भद्रम् करिष्यसि)** आप कल्याण करते हैं **(अंगिरः)** हे अन्तर्यामी रूप से अंगों की रक्षा करने वाले परमात्मन् **(तव इत्)** यह आपका ही **(तत् सत्यन्)** सत्यव्रतशील स्वभाव है।

(श्री स्वामी अच्युतानन्द जी रचित ऋग्वेदशतक मन्त्र ६)

स्तुति विषय

ओ३म् वायवायाहि दर्शतेमे सोमा अरङ्कृताः ।
तेषां पाहि श्रुधी हवम् ॥७॥

अष्टक १, अध्याय १, वर्ग ३, मन्त्र १
ऋग्वेद————————————
मण्डल १, अनुवाक १, सूत्र २, मन्त्र १

पदच्छेद—वायो । आ । याहि । दर्शत । इमे । सोमाः । अरंऽकृताः । तेषां । पाहि । श्रुधि । हवम् ।

पदार्थ

वायो	अनन्त बल-युक्त सबके प्राणरूप अन्तर्यामी परमेश्वर
आयाहि	आप हमारे हृदय में प्रकाशित हूजिये
दर्शत	हे ज्ञान से देखने योग्य
इमे	इन प्रत्यक्ष
सोमाः	संसारी पदार्थों को
अरङ्कृताः	अलंकृत सुशोभित कर रक्खा है
तेषां पाहि	इससे उनकी रक्षा भी कीजिये
श्रुधि	सुनिये
हवम्	हमारी स्तुति को

अन्वय—हे दर्शत वायो जगदीश्वर ! त्वमायाहि येन त्वयेमे सोमा अरङ्कृताः सन्ति तेषां तान्पदार्थान् पाहि अस्माकं हवं श्रुधि । यो ऽयं दर्शत द्रष्टु योग्यो येन मे सोमा अरङ्कृता अलङ्कृताः सन्ति स तेषां तान्सर्वानिमान्पदार्पान्पाहि पाति श्रुधि हवं स एव वायुः सर्वं शब्दव्यवहारं श्रावयति । आयाहि सर्वान्पदार्थान् स्वगत्या प्राप्नोति ।

भावार्थ—हे ज्ञान से देखने योग्य, अनन्त बलयुक्त, सबके प्राणरूप अन्तर्यामी परमेश्वर ! आप हमारे हृदय में प्रकाशित हूजिये । आपने ही इन प्रत्यक्ष संसारी पदार्थों को सुशोभित कर रखा है। इनकी रक्षा कीजिये और हमारी स्तुति को सुनिये ।

व्याख्यान—हे अनन्तबल परेश वायो दर्शनीय ! आप अपनी कृपा से हमको प्राप्त हो । हम लोगों ने अपनी अल्प शक्ति से सोम (सोमवल्ल्यादि) औषधियों का उत्तम रस सम्पादन किया है और जो कुछ भी हमारे श्रेष्ठ पदार्थ हैं वे आपके लिये ही "अरङ्कृताः" अलंकृताः अर्थात् उत्तम रीति से हमने बनायेहैं, वे सब आपके समर्पण किये गये हैं, उनको आप स्वीकार करो (सर्वात्मा से पान करो) हम दोनों की पुकार सुनकर— जैसे पिता को पुत्र छोटी चीज समर्पण करता है, उस पर पिता अत्यन्त प्रसन्न होता है, वैसे आप हम पर प्रसन्न हों ॥७॥

स्वाध्याय—**वायो आयाहि**—(**वायो=अनन्तबलयुक्त ईश्वरः, वेत्ति सर्वं जगत् स वायुः परमेश्वरः**—अनन्त बलयुक्त, सबके प्राणरूप अन्तर्यामी परमेश्वर, **आयाहि=आगच्छागच्छति वा**=आप हमारे हृदय में प्रकाशित हूजिये ।

(महर्षि भाष्य)

हे अनन्तबल, सबको भलीभाँति जानने वाले, सबके प्राणरूप प्राणाधार परमेश्वर, अपनी कृपा से हमारे हृदय में प्रकाशित हूजिये ताकि हमारे हृदय का अज्ञान तिमिर, हमारे दिल का अंधेरा दूर होकर आपके देदीप्यमान दिव्य तेजोरूप का हम आत्मा से साक्षात्कार कर सकें आपके दिव्य दर्शन कर सकें । 'आयाहि' शब्द का कुछ भ्रमग्रस्त व्यक्ति 'आओ' अर्थ भी करते हैं, जोकि भूल है, गलती है । वे यह नही सोचते कि आना-जाना किसी एकदेशीय पदार्थ अथवा व्यक्ति में बनता है, सर्वव्यापक, घर-घर व्यापक निराकार परमेश्वर में कदापि नहीं बन सकता । वे सज्जन इस मन्त्र का प्रयोग मूर्तिपूजा के सम्बन्ध में अर्थात् 'आह्वान' के लिये भी करते हैं । मूर्ति में अपने विचार से तथा-कथित 'प्राण-प्रतिष्ठा' करने वाले ये सज्जन निजी मनस्तोषार्थ भले अर्थ का ऐसा अनर्थ करते फिरें; परन्तु सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान्, अजर, अमर, अचल, अटल, अच्युत एक-रस और परिपूर्ण परमात्मा में यह आना-जाना, हिलना-डुलना घट नहीं सकता जैसा कि आद्य श्री शंकराचार्य जी ने अपनी निर्गुण मानस-पूजा नामी पुस्तिका में स्पष्ट लिखा है—

पूर्णस्यावाहनं कुत्र, सर्वाधारस्य चासनम् ।
स्वच्छस्य पाद्यमर्घञ्च, शुद्धस्याचमनं कुतः ।।
पाषाणा लये निबद्धः, देवणः पाषाण एव च ।
ब्रूहि पण्डित देवस्तु, कस्मिस्थाने स तिष्ठति ।।
निर्मलस्य कुतः स्नानं, वस्त्रं विश्वोदरस्य च ।
निरालम्बस्योपवीतं, रम्यस्याभरण कुतः ।।
निर्लेपस्य कुतो गन्धं, पुष्पं निर्वासनस्यच ।
निर्गन्धस्य कुतो धूपं, स्वप्रकाशस्य दीपनम् ।।
नित्य तृप्तस्य नैवेद्यं, निष्कामस्य फलं कुतः ।
ताम्बूलं च विभोः कुत्र, नित्यानन्दस्य दक्षिणा ।।

अर्थात्—वह परमात्मा सर्वत्र परिपूर्ण है, उसको बुलाना कहाँ ? उस सर्वाधार का आसन कहाँ ? सदा स्वच्छ-पवित्र प्रभु के लिये पाद्य (पाँव धोने वाले) और अर्घ्य जल का क्या अर्थ; परम शुद्ध परमेश्वर के लिये आचमन कैसा ? पाषाण के मन्दिर में अवरुद्ध देव पत्थर ही है पुजारी जी से पूछो कि वह प्रभु कहाँ ठहरता है ? निर्मल परमेश्वर का स्नान और विश्वोदर के लिये वस्त्र कैसे ? निरालम्ब (आधार रहित) परमात्मा को यज्ञोपवीत और सुन्दरतम—सत्यं शिवं, सुन्दरं—परमात्मा को आभूषणों से क्या वास्ता ? प्रभु जोकि निर्लेप है उसे चन्दन लगाना कैसे ? वासना-रहित ईश्वर को पुष्प-भेंट कैसी ? घ्राण-विहीन परमेश्वर को धूप से क्या मतलब ? और स्वप्रकाश ईश्वर को दीप दिखाना कैसे उचित ? जो विश्वाधार सदा तृप्त है सन्तुष्ट है (जिसे क्षुधा सताती ही नहीं) उसे नैवेद्य क्यों प्रस्तुत करना ? और निष्काम देव को फलों की क्या अभिलाषा ? विभु परमात्मा को पान और नित्यानन्द के लिए **दक्षिणा अथवा प्रदक्षिणा किस काम की ?**

दर्शत – दर्शत=ज्ञान दृष्ट्या द्रष्टुं योग्यः योग्यो वा—हे ज्ञान से देखने योग्य परमेश्वर ! (महर्षि भाष्य) दुनियादारों ने ईश-दर्शन को तमाशा बना रक्खा है । दर्जनों दुकानें खुली हैं; विज्ञापन बाँटे जा रहे हैं; मेलों-ठेलों में मंच सजाये जाते हैं कि जिज्ञासु-जन हमारे पास आयें, हम में सामर्थ्य है कि भरे-जलसे में उन्हें प्रभु के साक्षात्कार दर्शन करा दें । भोले-भाले लोग इन दम्भी दानवों के मायाजाल में ऐसे फँसते हैं कि तन-मन-धन उन इश्तहारी गुरुओं के अर्पण करने के बाद कुछ भी प्राप्ति न होने पर हाथ मलते और पश्चात्ताप करते रह जाते हैं । हिप्पियों के गुरु महेश योगी का जाल, राध स्वामियों का सत्संग, वाममार्गियों का भैरवी चक्र, निरंकारियों का संत समागम, दादा लेखराज के ब्रह्माकुमार-कुमारियों का ईश्वरीय विश्वविद्यालय, 'आचार्य' रजनीश का सम्भोग से समाधि पंथ– सब इसी सस्ते दामों ईश-दर्शन कराने वाले लोगों का प्रपंच-मात्र है । ऐसे ही लोगों को समक्ष रखकर सम्भवतः भक्त कबीर ने कहा था— **'लोगन राम खिलौना जाना'** अर्जुन ने भी परमात्मा के विराट् रूप का दर्शन करने की अभिलाषा व्यक्त की थी और कहा था—

द्रष्टुमिच्छामि ते रूपमैश्वरं परमेश्वर ! गीता ११-३

यह सुनकर भगवान् कृष्ण ने कहा था—भोले भाई ! इन चर्म-चक्षुओं से, इन जाहिरी आँखों से उस प्रभु के विराट् रूप को नहीं देखा जा सकता, उसके लिये ज्ञाननेत्रों दिव्य चक्षुओं की आवश्यकता होती है । यदि तेरी उत्कट इच्छा है, सच्ची जिज्ञासा है, पूर्ण अभिलाषा है तो

दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम्। (गीता ११८)

मैं तुझे दिव्य चक्षु, ज्ञान नेत्र देता हूँ इससे तेरी अभीष्ट सिद्धि होगी । इस मंत्र के सतत मनन करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रभु का भक्त अपना तन-मन-धन सर्वस्व प्रभु की भेंट कर देता है, उसके पास अरंकृत, अलंकृत, सुभूषित, सुसज्जित जो उत्तमोत्तम सम्पत्ति है, बढ़िया से बढ़िया, अमूल्य से अमूल्य जो सामग्री है, अहंकार, अभिमान को तिलाञ्जलि देकर जब प्रभु चरणों में अर्पित कर देता है, तो जगज्जननी माँ उसके हृदयोद्गारों को ठीक उसी तरह समझ कर, जिस प्रकार कि एक सांसारिक माता अपने शिशु की तोतली—अस्पष्ट वाणी में प्रस्तुत वाञ्छा को सुनकर अविलम्ब उसकी अभीष्ट-सिद्धि कर देती है, सर्वस्व अर्पण करने वाले साधक को निहाल कर देती है । भक्त कबीर ने इसीलिए कहा था—

भले निन्दु भले निन्दु भले निन्दु लोगा
तन मन रामसनेही जोगा ।

सांसारिक लोगो ! जितनी चाहो बार-बार निन्दा कर लो, पेट भरकर मेरा अपमान कर लो, मेरा तो तन-मन (सर्वस्व) अपने प्यारे प्रियतम स्नेही भगवान् के अर्पण हो चुका है ।

जब तक साधक अपना सर्वस्व भगवदर्पण नहीं कर देता, जब तक यह भावना उसके मन-मस्तिष्क में ओत-प्रोत नहीं हो जाती कि

मुझ पे मेरा कछु नहीं जो कछु है सब तोर,
तेरा तुझको सौंपते क्या लागे है मोर ?

तब तक ईश दर्शन नहीं हो सकते, तब तक एहलौकिक सुख-सन्तोष (अभ्युदय) और पारलौकिक आनन्द (निःश्रेयस) की प्राप्ति नहीं हो सकती । प्रभु को सर्वस्व

समर्पण करने का सुफल अविलम्ब हमारे समक्ष उपस्थित हो जाता है, यह अनुभव-सिद्ध तथ्य है। जब कभी हम पर चारों ओर से आपद्-विपद् की घनघोर काली घटाएँ घिर आएँ, हमें निकलने का कोई मार्ग न सूझ पा रहा हो उस समय हम अपने हाथ-पाँव, मन-मस्तिष्क, प्रज्ञा-बुद्धि सबको ढीला छोड़ दें, एकमेव प्रभु का आश्रय ग्रहण कर लें; अपनी किसी शक्ति, सामर्थ्य, बल का घमंड छोड़कर, अभिमान को तिलाञ्जलि देकर निरहंकार रूप और विनम्र भाव से उस अशरण-शरण प्रभु का अञ्चल दृढ़तापूर्वक थाम लें तो उस मुसीबत की कड़ी घडी में परमेश्वर की अहैतुकी कृपा दैवी नियमों के अनुसार हमारे आड़े आती है; फिर दुःख-क्लेश की घनघोर घटाएँ छिन्न-भिन्न होने और उलझनें सुलझने लगती हैं; बस. घटाटोप अंधकार में दैवी चमत्कार के रूप में प्रकाश-रेखा चमकने-दमकने लगती है और सम्पूर्ण व्यवधान दूर होकर सीधा सरल सुपथ हमारे सामने स्पष्ट खुल जाता है।

इमे सोमाः अरङ्कृताः—(**इमे**=**प्रत्यक्षाः**—इन प्रत्यक्ष; **सोमाः**=**सूयन्त उत्पद्यन्ते ये ते पदार्थाः**—संसारी पदार्थों के (महर्षि भाष्य)

तेषां पाहि—(**तेषां**=**तान्पदार्थान्**—उन पदार्थों की; **पाहि**=**रक्षयति**—रक्षा भी करो—(महर्षि भाष्य)

हवम् श्रुधी—(**हवम्**=**स्तुति**)—हमारी स्तुति को; **श्रुधि**=**श्रावयति वा**—सुनिये—(महर्षि भाष्य)

पिता! हमने आपके अलंकृत, अरंकृत, सुशोभित, सुभूषित जितने उत्तमोत्तम पदार्थ हैं (उनमें सोमवल्ली का रस है जोकि उत्तम पेय है) आपके अर्पण कर दिये हैं अपना सर्वस्व आपके चरणों में चढ़ा दिया है। आप इन्हें स्वीकार करें। सर्वात्मा से पान करें, ग्रहण करें, पूर्ण रूप से हमारे हदिया को—भेंट को मंजूर करें और साथ ही इनकी रक्षा भी करें ताकि ये उत्तम पदार्थ हमारे अधिकार में बने रहें और हम बार-बार इन्हें आपके अर्पण करने का सौभाग्य प्राप्त करते रहें। यह हमारी प्रार्थना है, यही याचना है इसे सुनिये हमारे नम्र निवेदन को, धीमी-सी टेर को कृपया श्रवण कीजिये।

वेद में अन्यत्र भी एक मंत्र आता है जो इसी भावना की अभिव्यक्ति करता है—

ओं इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृलय
त्वामवस्युराचके ॥ (ऋग्वेद मंडल १, सूक्त २५, मंत्र १९)

इस मंत्र पर ध्यानपूर्वक विचार करने से भक्त की अपने भगवान् के समक्ष आत्मार्पण की उदात्त भावना स्पष्ट हो जाती है, साधक का अपने इष्टदेव के प्रति कितना अनिर्वचनीय प्रेम है, कितना अद्भुत स्नेह है, कितनी भरपूर श्रद्धा है और सर्वस्वार्पण की कितनी उत्कट सदिच्छा है! भेंट चाहे तुच्छ हो चाहे बहुमूल्य पिता इस बात की ओर ध्यान नहीं देता (क्योंकि बालक के पास जो कुछ भी है पिता की ही देन है) वह तो शिशु की भावना को देखता है, उसके अन्तर्मन की ओर निहारता है, उसके प्रेम की दृढ़ता और श्रद्धा की उच्चता को जाँचता है। पिता प्रसन्न होकर कौली भरकर उसे अपनी वात्सल्यमयी अंक में, प्रेमभरी गोद में बिठाकर उसकी अभीष्ट सिद्धि कर देता है। इसी प्रकार भगवान् का अनन्य भक्त, सर्वमेघ यज्ञ करके अपने प्यारे प्रभु की प्रसन्नता प्राप्त कर लेता है बस फिर वह निहाल हो जाता है, उसका बेड़ा भवसागर से पार हो जाता है और परमानन्द प्राप्ति का भागी बनकर '**लोक सुखी परलोक सुहेले**' हो जाता है।

'वायो' Oh Supreme Lord, of infinite power and grandest majesty, thou art accessible to us by thy condescending grace. 'अरंकृताः' We have, by our very limited understandings and ability, prepared this excellent (juice) of the Soma creeper and other herbs. Whatever good things we have in our possession we have prepared in the best possible manner for Thee, and all of them have been offered to Thee. Please accept them and employ them fully for Thy divine purpose. When the son offers some little thing to his father, the latter feels immensely pleased. So having in consideration the humble existence of us, thy lowly supplicants, be thou God, pleased with us.

(वासन्ती वृत्त)

हे वायो वेगेश ! अमित आशा से आओ।
मेरे द्वारा दिव्य सोम आदिक को पाओ ॥
विश्ववन्द्य ! अमल आभा फैलाओ।
सेवा हो स्वीकार सु अनुकम्पा दर्शाओ ॥७॥

तात्पर्य—(वायो) हे अनन्त बल युक्त सबके प्राणरूप अन्तर्यामी जगदीश्वर ! (आयाहि) आप हमारे हृदय में प्रकाशित होवें (दर्शत) हे ज्ञान से देखने योग्य ! (इमे सोमाः) ये संसार के सब पदार्थ जो आपने (अरंकृताः) सुशोभित किये हैं (तेषां पाहि) इनकी रक्षा करें (हवम्) हमारी स्तुति को (श्रुधी) सुनिये।

(श्री स्वामी अच्युतानन्द जी रचित ऋग्वेद शतक मंत्र १०)

प्रार्थना विषय

ओ३म् पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती ।
यज्ञं वष्टु धियावसुः ॥८॥

अष्टक १, अध्याय १, वर्ग ६, मन्त्र ४
ऋग्वेद———————————————
मंडल १, अनुवाक २, सूक्त ४, मन्त्र १०

पदच्छेदः—पावका । नः । सरस्वती । वाजेभिः । वाजिनीऽवती । यज्ञं । वष्टु । धियावसुः ।

पदार्थ

पावका	पवित्र करने वाले व्यवहारों को चितानेवाली
नः	
सरस्वती	जिसमें प्रशंसा योग्य ज्ञान आदि गुण हों ऐसी उत्तम विद्याओं को देने वाली वाणी है वह हम लोगों को
वाजेभिः	जो सब विद्या की प्राप्ति के निमित्त अन्नादि पदार्थ हैं और जो उनके साथ
वाजिनीवती	विद्याओं से सिद्ध की हुई क्रियाओं से युक्त
यज्ञं	शिल्पविद्या की महिमा और कर्म रूप यज्ञ को
वष्टु	प्रकाश करने वाली और
धियावसुः	शुद्ध कर्म के साथ वास देने वाली

अन्वयः—या वाजेभिर्वाजिनीवती धियावसुः पावका सरस्वती वागस्ति सास्माकं शिल्प विद्या महिमानं कर्म च यज्ञं वष्टु तत्प्रकाशयित्री भवतु ।

भावार्थ—जो सब विद्या की प्राप्ति के निमित्त अन्नादि पदार्थ हैं और जो उनके साथ विद्या से सिद्ध की हुई क्रियाओं से युक्त शुद्ध कर्म के साथ वास देने और पवित्र करने वाले व्यवहारों को चिताने वाली और प्रशंसा आदि गुणों वाली सब उत्तम विद्याओं की देने वाली वाणी है वह हम लोगों की शिल्पविद्या की महिमा और कर्मरूप यज्ञ का प्रकाश करने वाली हो ।

व्याख्यान—हे वाक्पते ! सर्वविद्यामय ! हमको आपकी कृपा से **'सरस्वती'** सर्वशास्त्र विज्ञानरूप वाणी प्राप्त हो । **'वाजेभिः'** तथा उत्कृष्ट अन्नादि के साथ वर्तमान **'वाजिनीवती'** सर्वोत्तम क्रिया विज्ञान युक्त **'पावका'** पवित्र स्वरूप और पवित्र करने वाली सदैव सत्यभाषणमय मंगलकारक वाणी आपकी प्रेरणा से प्राप्त होके आपके अनुग्रह से **'धियावसुः'** परमोत्तम बुद्धि के साथ वर्तमान निधि स्वरूप यह वाणी **'यज्ञं वष्टु'** सर्वशास्त्र बोध और पूजनीयतम आपके विज्ञान की कामना युक्त सदैव हो जिससे हमारी सब मूर्खता नष्ट हो और हम पाण्डित्ययुक्त हों ॥८॥

स्वाध्याय—सरस्वती—(सरस्वती—सर्वविद्या प्रापिका, सरसा, प्रशंसिता ज्ञानादयो गुणा विद्यन्ते यस्यां सा सर्व विद्या प्रापिका वाक्—जिसमें प्रशंसा योग्य ज्ञान आदि गुण हों, ऐसी उत्तम विद्याओं को देने वाली वाणी है, वह हम लोगों को—(महर्षि भाष्य)

हे वाक्पते ! आपकी कृपा से हमें वाणी—अच्छा, स्वच्छ, पवित्र, पुण्यमय, स्पष्ट वाक्य बोलने की शक्ति—प्राप्त हो । हम प्रतिदिन दोनों समय संध्या में 'ओं वाक् वाक्' जिह्वा और बोलने की शक्ति प्राप्ति की प्रभु से प्रार्थना करते हैं । गूंगे बेचारे मुँह में सब मनुष्यों के समान चमड़े की जबान होते हुए भी कोई शब्द उच्चारण नहीं कर सकते, अपनी हृद्गत भावनाओं की अभिव्यक्ति शब्दों द्वारा नहीं कर सकते; क्योंकि यद्यपि उनके मुख में जिह्वा तो मौजूद है, परन्तु प्रभु ने उन्हें बोलने की शक्ति प्रदान नहीं कर रखी । पुनर्जन्म के सिद्धांत और कर्म फिलासफी के अनुसार हम एक जन्म में जिस अंग का दुरुपयोग करते हैं, हमें दण्ड देने के लिये दूसरे जन्म में प्रभु वह अंग ही हमसे छीन लेते हैं । कहते हैं एक बागवान के पुत्र को कहीं से एक आरी मिल गई । उस मूर्ख ने बागीचे में घुसकर अच्छे-अच्छे फल-फूलदार पौधों की टहनियाँ काटकर बाग को वीरान कर दिया । पिता ने उससे आरी छीन ली ताकि पुनः वह वैसी शरारत न कर सके ।

शास्त्रार्थमहारथी पं० ओम्प्रकाश शास्त्री खतौली वालों का एक अन्धे ईसाई पादरी के साथ पुनर्जन्म के सिद्धांत पर शास्त्रार्थ हुआ । पादरी ने कहा—'देखिए पण्डित जी ! आपके सिद्धांतानुसार खुदा ने मेरी आँखें इसलिए छीन लीं कि पिछले जन्म में मैं इनका दुरुपयोग किया करता था । बेगानी बहू-बेटियों को बुरी नजर से देखता था । इस जन्म में मेरी आंखें न होने के कारण किसी को कुदृष्टि से नहीं देख सकता । इसलिए परमात्मा ने सोचा कि मैं व्यभिचार नहीं कर सकूँगा । परन्तु पण्डित जी ! मैं स्वीकार करता हूँ कि अन्धा होने के बावजूद मैं बहुत अधिक व्यभिचार करता हूँ । मैंने आपके परमात्मा की व्यवस्था बिगाड़ कर रख दी है ।'

शास्त्री जी हँसे और उत्तर दिया—'पादरी महोदय ! पिछले जन्म के कुकर्मों के कारण आप दृग्-विहीन हुए थे । अब तैयार हो जाओ, आगामी जन्म में आपको पुंसत्व शक्ति भी छिन जायगी और घुंघरू बाँधकर जनखों (हीजड़ों) की टोली में शामिल होकर लोगों के घरों में लड़के पैदा होने पर वहाँ गाते-बजाते-नाचते और पैसे माँगते फिरोगे । इसलिए हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि हमें जिह्वा और वाक् शक्ति प्रदान करो । संसार का नेतृत्व प्रायः वाग्मी ही करते देखे जाते हैं जिनकी वाणी में ओज आवाज में गर्ज, शब्दों में शक्ति और भाव-प्रदर्शन में उग्रता, गम्भीरता, स्पष्टता होती है, जनता उनका अनुसरण करती है, उन्हें अपना नेता मानती है, अग्रगण्य स्वीकार करती और उनकी आज्ञाओं का पालन करना अपना कर्तव्य समझती है । इसी संदर्भ में निम्न मंत्र भी विचारणीय है—

ओं इड़ा सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयोभुवः ।
बर्हि सीदन्त्वस्रिधः ॥

(ऋग्वेद मण्डल १, सूक्त १३, मंत्र ९)

अर्थात्—(**इड़ा**) वाणी (**सरस्वती**) विद्या और (**मही**) मातृभूमि (**मयोभुवः**)

कल्याण करने वाली और (**अस्रिधः**) कभी हानि न पहुँचाने वाली (**तिस्रः देवीः**) तीन देवियाँ (**बर्हिः**) हमारे अन्तःकरण में (**सीदन्तु**) विराजमान हों।

श्रेष्ठ कवियों और ललित-कला विशारद, चित्रकला प्रवीण महानुभावों ने सरस्वती देवी की आकृति निर्माण करते समय उसके हाथों में वीणा पकड़ा दी है, जिसका स्वर कोमल और आलाप मधुर होता है। वीणा-वादिनी सरस्वती का यही देवीपन है कि उसकी वाणी मीठी, स्वर कर्ण मधुर और आलाप चित्ताकर्षक हो। कर्कश स्वर, भद्दे कण्ठ और बीभत्स आलाप वाली और कुछ भले ही हो, सरस्वती देवी नहीं हो सकती। मोरपंख लगाकर मयूर पंक्ति में सम्मिलित होने वाला कौवे की वास्तविकता 'कांय-कांय' की कर्कश एवं कर्णकटु ध्वनि निकालते ही प्रकट हो गई थी। रंग कोयल का भी कौवे की भाँति काला ही होता है। रंग को देखकर शायद कोई उनके अन्तर को न जान सके परन्तु वसन्त ऋतु के आगमन पर, जब ये दोनों एक रंग के काले-कलूटे पंछी आवाज निकालते हैं तो झट पता चल जाता है कि '**काकः काकः पिकः पिकः**' कौआ 'कौआ है और कोयल कोयल'। मीठी वाणी—मधुर वाक्य सबसे बड़ा जादू है जो संसार भर के विद्वेषियों को आकृष्ट कर लेता है, शत्रु-हृदय को द्रवित कर देता है, पाषाण हृदयों को भी नवनीत समान नर्म कर देता है। किसी कवि ने क्या खूब कहा है—

काका का को धन हरे कोयल का को देत।
मीठे वचन सुनायकर जग अपनो कर लेत॥

तनिक विचारिये तो कि बेचारा कौआ किसके धन का हरण करता है और कोयल किसे खजाने बख्शती फिरती है। वास्तव में केवल मीठी वाणी के कारण ही कोयल संसार को अपना बना लेती है और मधुरता रहित आवाज के सबब से ही कौआ तिरस्कृत होता फिरता है।

भगवान् श्री कृष्ण ने गीता में तीन प्रकार के तपों—शरीर, वाङ्मय और मानस—का वर्णन किया है। वाङ्मय अर्थात् वाणी के तप के सम्बन्ध में लिखा—

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते॥ (गीता १७-१५)

अर्थात्—तथा जो उद्वेग को न करने वाला प्रिय और हितकर एवं यथार्थ भाषण है (वाक्य है) और (जो) वेद शास्त्रों के पढ़ने का एवं परमेश्वर का नाम जपने का अभ्यास है वह निःसन्देह वाणी सम्बन्धी तप कहा जाता है।

वाणी वही अच्छी जो सत्य हो, यथार्थ हो परन्तु कड़वी न हो, कर्कश न हो बल्कि—

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।

सत्य बोलो, प्रिय बोलो, काने को काना कहकर चिढ़ाओ मत। वेद शास्त्रों का अभ्यास और प्रणव-नाम जप वस्तुतः वाणी का तप है। शास्त्रों का आदेश है '**स्वाध्यायान्मा प्रमदः**' खाने-पीने, सोने-जागने, आने-जाने—किसी भी काम में सुस्ती क्षन्तव्य हो सकती है; परन्तु स्वाध्याय में प्रमाद, अनध्याय क्षमा नहीं किया जा सकता।

पावका नः—(**पावका = पवित्र कारकं**—पवित्र करने वाले व्यवहारों को

चिताने वाली **नः=अस्माकं** हमारे लिये (महर्षि भाष्य) पवित्र स्वरूप और पवित्र करने वाली सदैव सत्यभाषणयुक्त मीठी वाणी हमें प्राप्त हो।

वाजेभिर्वाजिनीवती –(**वाजेभिः=विद्या प्राप्ति निमित्तैरन्नादिभिः सह**—जो सब विद्याओं की प्राप्ति के निमित्त अन्नादि पदार्थ हैं और जो उनके साथ, **वाजिनीवती=सर्व विद्या सिद्ध क्रिया युक्ता**—विद्याओं से सिद्ध की हुई क्रियाओं से युक्त—महर्षि भाष्य) उत्कृष्ट अन्न आदि जो सर्वविद्या प्राप्ति का साधन है वह और अन्य आवश्यक साधन भी हमें प्राप्त हों और हम सर्वोत्तम क्रिया विज्ञान युक्त, विज्ञान के सिद्धांतों के अनुकूल आचरण कर सकें।

धियावसुः—(**धियावसुः=शुद्ध कर्मणा सहवासं प्रापिका**—शुद्ध कर्म के साथ वास देने और...महर्षि भाष्य) परमेश्वर! परमोत्तम बुद्धि के साथ वर्तमान यह वाणी यह वाक् शक्ति जो समस्त उत्तम पदार्थों की निधि है, खजाना है, अक्षय कोष है आपके अनुग्रह से हमें प्राप्त हो। वस्तुतः वाणी ऐसी अद्भुत शक्ति है जो मनुष्य को तख्त भी दिला सकती है और तख्ता भी—राज्य सिंहासनारूढ़ भी करा सकती है और फाँसी पर भी चढ़वा सकती है।

यज्ञं वष्टु—(**यज्ञं=शिल्पविद्या महिमानं कर्म च**—शिल्प विद्या के महिमा और कर्मरूप यज्ञ को; **वष्टु=काम सिद्धि प्रकाशिका भवतु**—प्रकाश करने वाली—महर्षि भाष्य) प्रभो! हमारी वाणी सर्वशास्त्र बोध और पूजनीयतम आपके विज्ञान की कामनायुक्त सदा हो, ताकि हम बुद्धिमान् बन सकें, हमारी जड़ता-मूर्खता हट सके और हम आपके ज्ञान से सम्पन्न होकर यहाँ सुख और भावी जीवन में परमानन्द के भागी बन सकें। इसीलिए हम प्रतिदिन गायत्री मन्त्र द्वारा आपसे प्रार्थना करते हैं कि—**धियो यो नः प्रचोदयात्।**

आप हमारी बुद्धियों को सब बुरे कामों से हटाकर उत्तम मार्ग पर चलने की सत्प्रेरणा करें।

Oh Lord of speech, whose being is characterised by types of true knowledge, may we by thy grace, **'सरस्वती'** uttain powerful speech coupled with the knowledge of all sciences. **'पावका'** This auspicious power of speech, distinguished by truthfulness of utterance, pure in itself and purifying the possessor, **'वाजेभिः'** along with excellent victuals and other things of excellence we need, **'वाजिनवती'** coupled with supreme effort for the practical application of the knowledge of scientific principles **'धियावसुः'** may this power of speech, the necessary treasury of all good things essential for life, co-existing with an excellent understanding, after we have acquired it by thy grace, **'यज्ञंवष्टु'** be infused with the ability to grasp all scientific principles and with an eager longing for a right knowledge of thee, our most adorable Gad so that all our infatuation having disappeared we may come to have great wisdom.

हो सरस्वती वाणी अनूप। विज्ञान क्रिया अन्नादि रूप॥
वागीश विदित जन यज्ञ यूप। हो विश्व पावनी वसु स्वरूप॥८॥

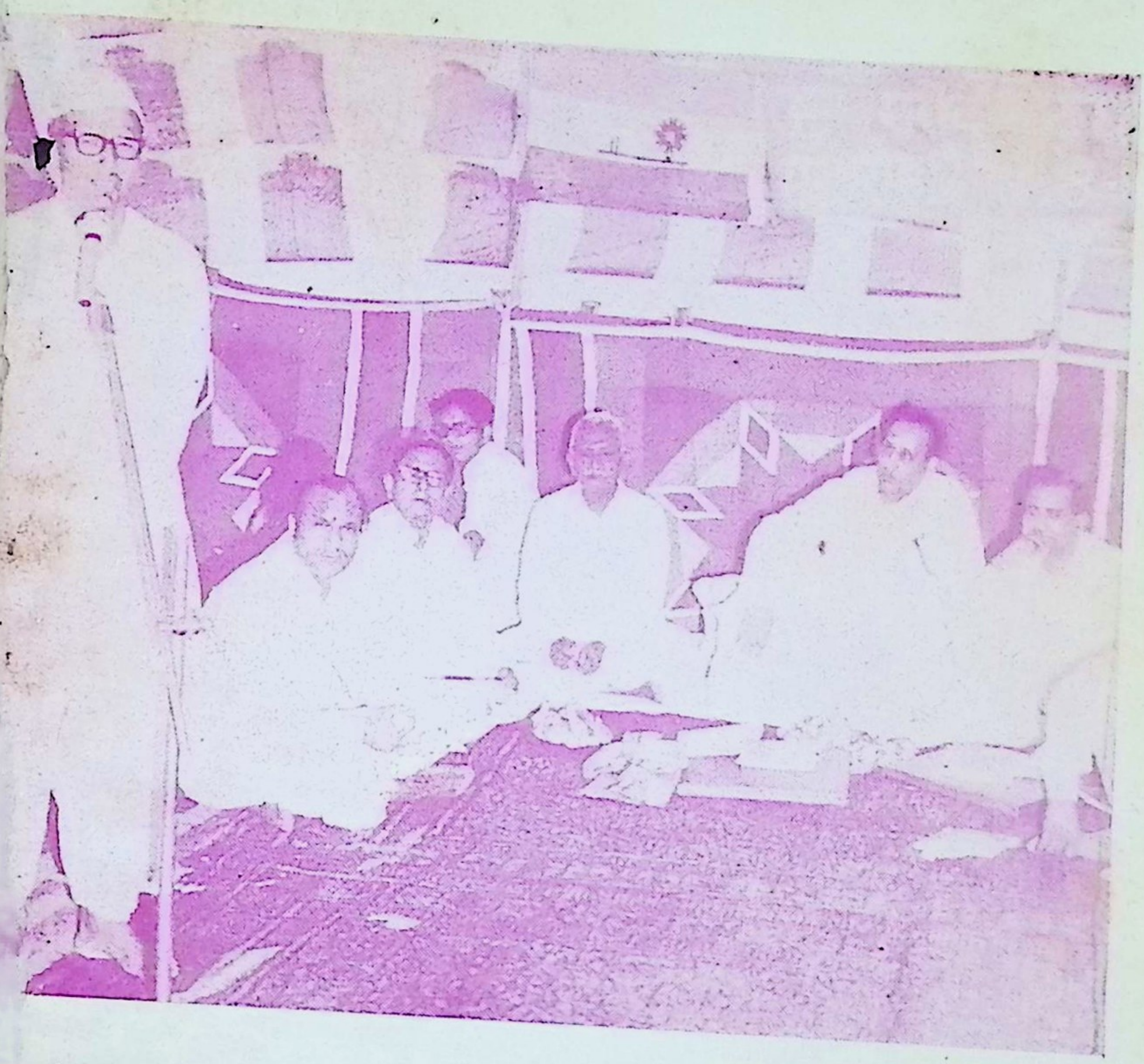

आर्यसरोवर के उद्घाटन अवसर पर प्रसिद्ध उद्योगपति श्री लालमन आर्य भाषण दे रहे हैं। पास में राजस्थान और केन्द्र के सिंचाई मंत्री भी बैठे हैं।

इस संबंध में विस्तृत लेख इसी अंक में पढ़ें।

—संपादक

१५०) सैकड़ा : सत्यार्थप्रकाश
५ नवम्बर १९७५ तक मिल रहा है

मुद्रक—प्रकाशक—संपादक पंडिता राकेश रानी द्वारा सैनी प्रिंटर्स दिल्ली में छपा

जन-ज्ञान (मासिक)
१५६७, हरध्यानसिंह मार्ग
करौल बाग, नई दिल्ली-५
दूरभाष ५६६६३६

D.A.V.P. से स्वीकृत
अक्टूबर १९७५
कार्तिक २०३२

रजि० नं०
डी०--(सी०) २०१
R.N.No. 107119/65

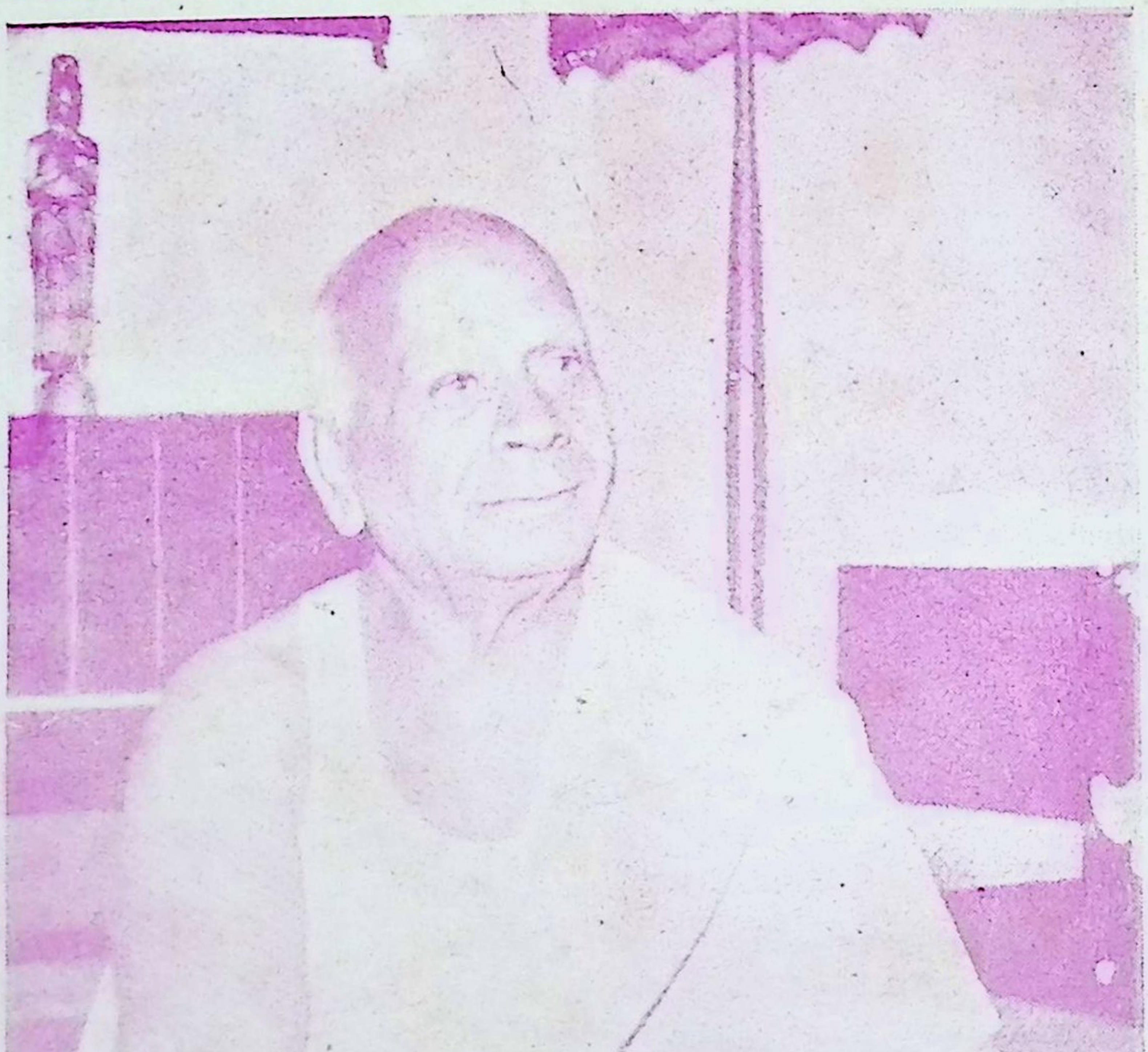

प्रेरणा पुंज : (डा०) स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती